I.C.H./ भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं

का संरक्षण स्कीम 2014–15 के तहत

प्रान्तीय जागरुकता संस्थान,सतना (म0प्र0) द्वारा संकलित

विन्ध्यांचल (बघेलखण्ड) की बघेली कहावते (उपाख्यान)

हमारी कहावते / लोकोक्तियां

भाग–1

क्रमांक 1 से 224 तक

(क्रमसः पृश्ठ क्रमांक 1 से 20 तक)

I.C.H./ भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं

का संरक्षण स्कीम 2014–15 के तहत

प्रान्तीय जागरुकता संस्थान,सतना (म0प्र0) द्वारा संकलित

विन्ध्यांचल (बघेलखण्ड) की बघेली कहावतें (उपाख्यान)

धौं कइसन कहित तैं मनई उख्खान–.....

भूमिका :– बारहमासी, नक्षत्रों का प्रभाव, वर्षा से संबंधित कहावतें, खेती किसानी,पशुओं की पहचान, लकड़ियों के गुण और उपयोग सहित कुछ अन्य मुहावरे लोकोक्तियां कहावतें जो जन जन की ज़बान पर रची–बसी हैं, ये कहावतें शुरू शुरू में किसी ग्रामीण मजदूर किसान के मुंह से निकली होंगी पर बाद में व्यापक लोक स्वीकृति मिल जाने के कारण के दूर–दूर तक फैलकर लोक की अमूर्त सांस्कृतिक सम्पत्ति बन गई।

हमारी कहावतें/लोकोक्तियां निम्नुसार हैं .....

1. दऊ देवइयां मूसर टेढ़ –

   अर्थ – अप्रत्याशित लाभ में बाधक बनना।

2. एक बूंद जो चइत म परै, सहस बूंद सामन कै हरै।

   अर्थ – यदि चैत माह में एक बूंद पानी बरसता है तो उसके बदले सावन मास में

   एक हजार बूंदों की कमी हो जाती है।

3. सूम के धन शैतान खाय –

   अर्थ – कंजूस के धन का दुरुपयोग।

4. दक्खिन बरखे सद्दौं काल । एक न बरखै बरखा काल।।

   अर्थ – कभी–कभी अच्छी खासी वर्शा हो रही होती है फिर अचानक दक्षिण दि”ाा की

ओर हवा चलने लगती है और एक दो दिन में सचमुच ही वर्षा रुक जाती है।

5. जब तक शक्ती तब तक भक्ती–

अर्थ – भाक्ति के अनुसार कार्य।

6. घोखे विद्या खोदे पानी–

अर्थ – विद्या के लिए अभ्यास जरूरी।

7. चैत मास दसमी बदी जो कहुं कोरी जाय। चौ मासे भर बादला भली भात बरसाय।।

अर्थ – यदि चैत माह कृष्ण पक्ष की दसवीं को पानी नहीं बरसता तो वर्षा ऋतु में

चारों महीने अच्छी वर्षा होती है।

8. नीके केर जमाना नहि आय –

अर्थ –अच्छाई के समय आज नही है– सठं प्रति सठं।

9. नाक दूर कि हंसिया–

अर्थ – परीक्षण के लिए उकसाना।

10. घुंघुची अपनेन रंग बाउर–

अर्थ – अपने रंग रूप पर घमंड करना।

11. चइत के पछुआ भादों जला, भदौं पछुआ माघ म पला।

अर्थ – यदि चैत माह में पछुआ हवा चले तो भादों मास में अच्छी वर्षा होती है, पर यदि यही पछुआ भादों मास में चले तो समझ लेना चाहिए कि माघ मास में पाला लगेगा।

12. उजरे गांव पोड़की सुआसिन–

अर्थ – कमजोर व्यक्तियों पर शासन करना।

13. ओंठ चाटे पियास नहीं पटाय –

अर्थ–आव"यकता से कम प्राप्त होना।

14. घरी मा घर जरै अढ़ाई घरी भद्रा–

अर्थ– समयानुकूल काम करना।

15. एक बूंद जो चइत म परै, सहस बूंद सामन कै हरै।

अर्थः— यदि चैत के महीने में कभी पानी बरसने लगता हैतो यह तय है कि सावन सूखा जायेगा

और ऐसे मौके पर तो किसान के मुख से यह कहावत अपने आप निकल पड़ती है।

16. हर कउर मा सीताराम नहीं बोला जाय —

अर्थ—अतिशयोक्ति नहीं करना।

17. फूंक—फूंक के पांव धरै का चाही—

अर्थ—सावधानी बरतना।

18. उल्टा चोर कोतवाल का डांटै—

अर्थ— खुद गलती करना और सफाई देना या दूसरे को धमकाना।

19. चइत क पानी महा बेकार। खड़ी फसल में बंटाढार।।

अर्थ— चैत में बरसने वाला पानी बड़ा ही नुकसानदेह होता है, क्योंकि खड़ी फसल नष्ट हो

जाती है।

20. आय फंसे सो आय फंसे—

अर्थ— इच्छा के विरुद्ध संकोच में पड़ना।

21. चोर—चोर मौसेरे भाई—

अर्थ— एक ही विचार के असामाजिक तत्व।

22. जेठ मास जो तपै निरासा। तब जानै बरखा कै आशा।।

अर्थ—जब जेठ माह में खूब गर्मी पड़े, तब समझो कि वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होगी।

23. आपन खोर कुकुर बरियार—

अर्थ— अपने मुहल्ले में बल दिखाना।

24. अपने गइल मा कुकुरउ भोर होत है—

अर्थ— अपने घर या आपने दरवाजे में दवंगई/बहादुरी दिखाना।

25. उनके घर में उलटी गंगा बहत है—

अर्थ— परम्परा के विरुद्ध कार्य करना।

26. जेठ जरै माघ ठरै, गुड़ के डरी तबै मुंह परै।

अर्थ– यदि जेठ माह में तेज धूप और माघ माह में खूब ठंडी पड़ेगी, तभी गन्ने की फसल

होगी और खूब गुड़ खाने को मिलेगा।

27. ऐरा गैरा नत्थू खैरा –

अर्थ–वजूदहीन, असभ्य व्यक्ति का बोधक।

28. ऐरे गैरे पच कल्यानी–

अर्थ–मूर्ख तथा पगलापन करने वाले को।

29. जेकर बनै असढ़वा, ओकर वारै मास।

अर्थ– जिस किसान की खेती अषाढ़ माह में समय पर हो गई, उसके बारहों महीने अच्छे ही

अच्छे रहते हैं।

30. एक हाथ सिऐ त दुइ हाथ फारय –

अर्थ– आमद से ज्यादा नुकसान।

31. सामन सूख सियारी। भादों सूख उन्हारी।।

अर्थ–यदि सावन मास में वर्षा नहीं होती तो खरीफ की फसल सूख जाती है, पर अगर भादों

मास में वर्षा नहीं होती तो रबी फसल की संभावना भी क्षीण हो जाती है।

32. आवा न गा घरहूं के गा–

अर्थ–बड़ा घाटा पड़ना।

33. फकीर केर कम्बलै दुशाला आय –

अर्थ– थोड़े में ही सन्तु"ट रहना।

34. सामन भादौं खेत निदावै। वा किसान निकहा धन पावै।।

अर्थ–जो किसान सावन और भादों के महीने में अपने खेतों की निंदाई कराता है,

उसकी फसल अच्छी होती है। फलस्वरूप उसे अच्छी आमदनी होती है।

35. कंजरौ नोन पानी मानत है–

अर्थ – नमक का एहसान मानना चाहिए।

36. नरदा के पंचायत मा बखरी हारिगे –

अर्थ– छोटी वस्तु के न्याय में बड़ा नुकसान।

37. धन्न भाग जहां बरस कुमार।

अर्थ– वह गांव बहुत ही भाग्यशाली है, जहां क्वांर के महीने में वर्षा हो गई है।

38. गमार कै गारी हंसिके टारी–

अर्थ – छोटे लोगों के मुंह न लगना।

39. सूधे केर मुंह कूकुर चाटै–

अर्थ–अधिक सीधा होना भी नुकसानदायक है।

40. आवा मोखा लइगा तोखा–

अर्थ–धोखा में पड़ना।

41. तेरा कातिक तीन अषाढ़। चूक जाय ते जाय बजार।।

अर्थ–अषाढ़ माह में धान बोने का सही समय 3 दिन और कार्तिक में गेहूं बोने के सही दिन मात्र 13 होते हैं। जो किसान इन 3 और 13 महत्वपूर्ण दिनों में अपनी खेती नहीं बो पाते तो उनके खेत में अच्छी पैदावार नहीं होती। फलस्वरूप उन्हें बाजार से अनाज खरीदना पड़ता है।

42. पांचौं उंगली बराबर नहीं होंय –

अर्थ– सब लोग एक समान नहीं होते।

43. पानी बरखै आधा पूष। आधा गोहूं, आधा भूस।।

अर्थ–यदि पूष माह में जाड़े की वर्षा हो जाती है तो गेहूं के दाने और भूसे दोनों की पैदावार

बढ़ जाती है।

44. आपु गए जजमानऊ घालै–

अर्थ– खुद फंसना दूसरे को भी फंसाना।

45. जीतब–हारब भगवान के अधीन है–

अर्थ–ईश्वर पर विश्वास

46. आए कि खुशी न गए को गम–

अर्थ–दोनों में अलमस्त रहना।

47. तपै नौतपा नौ दिन जोय। तौ पुन बरखा पूरन होय।।

अर्थ– यदि मृगसिरा नक्षत्र के अंतिम नौ दिनों में तेज धूप रहती है, बादल बूंदों का मौसम नहीं रहता तो उस वर्ष वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होती है।

48. ऊंट चुरावै निहुरे–निहुरे–

अर्थ– बड़ा काम छुपाने से नहीं छिपता।

49. सिखए पूत दरबार नहीं जाय –

अर्थ–बिना पूर्ण अनुभव अधूरी शिक्षा काम नहीं आती।

50. मघा न बरखै भरै न खेत। माई न परसै भरै न पेट।।

अर्थ– यदि माघ नक्षत्र में पानी नहीं बरसता तो बंधी, बांध नहीं भरते। इसी प्रकार अगर माता भोजन नहीं परोसती तो पुत्र का पेट नहीं भरता।

51. निबल पड़ेरुआ छत्तिस रोग–

अर्थ–दुर्दिन में आपत्तियों का दौर।

52. चईत गुड़ बइसाखै तेल। जेठ क पंथ असाढ़ क बेल।।
सामन साग न भादों दही। कुमार करइयाल न कातिक माही।।
अगहन जीरा पूषै घना। माघ न मिसरी फागुन चना।।
जे कोउ इनकर सेवन करिहैं। मरिहै न, त बेराम जरूरै परिहैं।।

अर्थ– चैत में गुड़, बैसाख में तेल नहीं खाना चाहिए, जेठ के महीने में यात्रा करना नुकसानदेह है। इसी तरह सावन मास में पत्ती वाली तरकारी भादौ माह में दही क्वार में करैला तथा कार्तिक माह मट्ठा खाना वर्जित है।

53. चिंह्आ मारे पानी नही कढ़य–

अर्थ– निर्बल को सताने से लाभ नहीं।

54. द"ी घोड़ी मरहठ भाशा–

अर्थ–बनावटीपना दिखाना।

55. पुखा पुनर्बस कोदों धान। मधा सुरेखा खेती आन।।

अर्थ– धान, कोदों की बुवाई के लिए पुष्य और पुनर्वस नक्षत्र उपयुक्त है, फिर मघा और अश्वलेखा तो तिल उड़द आदि बोने वाले नक्षत्र हैं।

56. बड़ी बड़ाई, फटही रजाई–

अर्थ–झूठा बड़प्पन दिखाना, असलियत का अभाव

57. माघ तिला तिल बाढ़ै। फागुन ग्वाड़ा काढ़ै।।

अर्थ– माघ में दिन एक एक तिल करके बढ़ने लगता है पर फागुन में तो बड़े–बड़े कदम बढ़ाकर चलता है अर्थात् बहुत बड़ा दिन होता है।

58. जानै न सानै तरी घियै घिव–

अर्थ–गोपनीयता न समझ पाना।

59. मंगनी के बरदा मसक के जोतय –

अर्थ–दूसरे की चीज का दुरुपयोग करना।

60. छूंछी तोखा कोउ न पूंछी–

अर्थ–निर्धन का कहीं सम्मान नहीं।

61. सेंत के चाउर मौसिया के सेराध–

अर्थ–मुफ्त की धान का दुरुपयोग।

62. पुरबा जो पुरबाई पाबै। सूखी नदियां नाव चलाबैं।।

अर्थः– सूखे की स्थिति में पूर्वा नक्षत्र मं हवा का रुख बदलकर पूर्व की ओर हो जाय तो अच्छी बरसात अच्छी फसल के आसार दिखाई देने लगते। सयानो का अनुभव

63. माठा का जाय दोहनी पाछे लुकावै–

अर्थ–अपना काम गुप्त रखना।

64. टाठी हेराय ता गगरी मा हाथ डारय –

अथ–भ्रम की स्थिति।

65. दूसरे के पतरी के मोट बरा–

अर्थ–दूसरे की वस्तु ज्यादा दिखना।

66. आव बरा मोरे मुंह परा–

अर्थ–बिना परिश्रम फल की कामना।

67. गमार मरै लकड़ी के भार–

अर्थ–अज्ञानतावस अन्याय सहना।

68. लेना एक न देना दो–

अर्थ– कोइ मतलब नही रखना।

69. कमाई न धमाई धरौ केर गमाई–

अर्थ–नुकसान पर नुकसान होना।

70. होइगा बिआह मोर करबे का–

अर्थ–काम निकलने पर अहं दिखाना।

71. उआ कबहूं सरे नहीं गन्धाय –

अर्थ–किसी काम में न आना।

72. छटिल परे केर हर गंगा–

अर्थ–मौके का लाभ उठाना।

73. जबरा मारै रोबै न देय –

अर्थ–सक्षम व्यक्ति का दबाव।

74. जाने हये तीस मार खां–

अर्थ – झूठी 'ोखी बघारना।

75. चमकै दक्खिन उत्तर छोर। तब जानै पानी का जोर।।

अर्थ –यदि दक्षिण और उत्तर दि"ाा की ओर बादल चमक रहे हों तो तेज वर्षा के आसार समझना चाहिए।

76. सौ सोनार केर एक लोहार केर–

अर्थ– एक का सौ के बराबर होना।

77. सांप के गोड़ नहीं देखात है–

अर्थ– अपनी परिस्थिति अपने को ही दिखती है।

78. ओरी के पानी बड़ेरी का जाय –

अर्थ–असम्भव का संभव होना।

79. अंधरन मा काने राजा–

अर्थ–अयोग्य लोगों पर थोड़ा पढ़ा व्यक्ति भी 'ाासन करता है।

80. बोलिस लोखरी फूला कांश। अब नहि आय बरखा कै आश।।

अर्थ –यदि लोमड़ी बोलने लगे और मैदान में उगे कांश के पौधे फूलने लगें तो समझ लेना चाहिए कि अब वर्षा ऋतु समाप्त होने वाली है।

81. उधौ का लेना न माधव का देना–

अर्थ–किसी का कर्जदार न होना।

82. राजन के घोड़े सूमन मा जोड़े–

अर्थ–दिखावा बड़ा खर्च कम

83. करिया बादर जिउ डेरबाबै। भुरबा बादर पानी लाबै।।

अर्थ –काला बादल देखकर भले ऐसा लगे कि भारी वर्षा होगी, पर वर्षा काले से नहीं भूरे बादल से होती है।

84. राजा के अगाड़ी घोड़ के पछाड़ी–

अर्थ–सावधानी बरतना चाहिए।

85. जइसै रहैं अपना, तइसैं देंय ढेकना–

अर्थ–अपने समान दूसरों को भी समझना।

86. ओइन गूना गूठैं, ओइन गमने जांय –

अर्थ– एक ही व्यक्ति की जिम्मेदारी।

87. बोली गोह फूल गा कांस। अब छांड़ा बरखा कै आस।।

अर्थ– यदि गोह बोलना शुरू कर दे और जंगल में कांस फूलने लगे तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा ऋतु समाप्त होने वाली है।

88. अकेले श्याम बहू, सगला गांव फगुहार–

अर्थ–एक में सबका दावा।

89. अकेले चना भाड़ नहीं फोड़य–

अर्थ–बिना समूह काम नहीं चलता।

90. अपनै जांघि मूंदे अपने जांघि उघारै–

अर्थ – घर की गोपनीयता भंग करना।

91. पितर पाख जे बोई अरसी। ओखे घर में रुपिया बरसी।।

अर्थ –जो किसान पितर पक्ष यानी कि क्वांर माह के प्रथम पखवाड़े में अलसी की बुवाइ करता है, उसके घर में खूब रुपए आते हैं, क्योंकि अलसी की फसल अच्छी होती है।

92. अकेले हरदसिया सगला गांव रसिया–

अर्थ–एक ही पर सबकी निगाह।

93. लोह जानै लोहार जानै धौंकय वाले के बलाय जानै–

अर्थ– अपने को सुरक्षित रखना।

94. जेखे खेत परा नहिं गोबर। वा किसान का मानै दूबर।।

अर्थ–जिस किसान के खेत में गोबर की खाद नहीं पड़ी, उसे कमजोर किसान मानिये।

95. अबहिन आटा–दाल के भाव मालूम होय जई–

अर्थ–परीक्षा करना या वास्तविकता का सामना होना।

96. आपन दाम खोट त परोसिन कै कउन दो"ा–

अर्थ–खुद की कमी का एहसास।

97. जोतिस खेत घास न टूट। ओकर भाग सांझ के फूट।।

अर्थ– यदि किसान ने हल चलाया पर खेत की घास नहीं उखड़ी तो उस किसान की किस्मत तो उसी शाम को फूट गई, क्योंकि रात्रि में घास पुनः अंकुरित हो जाएगी और उस खेत में बोई गई फसल अच्छी नहीं होगी।

98. अपने गरज सवति के मइके जाय का परत है–

अर्थ– जहां इच्छा नही रहती अपने काम से वहां भी जाना पड़ता है।

99. अन्धे पावै कुत्ते खाय –

अर्थ–विचारहीन लोगों का समूह।

100. धान, पान, केरा। तीनौ पानी बोरा।।

अर्थ– धान, पान और केला इन तीनों को खूब सिंचाई की जरूरत पड़ती है, इसलिए इन्हें पानी में तर पौधा माना जाता है।

101. ओंठ चाटे पिआस नहीं पटाय –

अर्थ–अधिक आवश्यकता पर थोड़े से काम नहीं चलता।

102. अन्धा बांटै रेवड़ी चीन्ह–चीन्ह कर देय –

अर्थ–पक्षपात करके लाभ पहुंचाना।

103 आंख के अंध नाम नैन सुख–

अर्थ–कार्यप्रणाली में विपरीतता।

104. आंखी ओट पहार–

अर्थ–आंख से ओझल वस्तु से ध्यान हटना।

105. आसमान से गिरा खजूर मा अंटका–

अर्थ–एक से बचना दूसरे से फंसना।

106. आपन इज्जत अपने हाथ रहति है–

अर्थ–अपना सम्मान खुद बचाना।

107. आठ बराती नौ पोंगेदार–

अर्थ–मतलब के लोग कम बेकार लोग जादा।

108. आपन लड़िका दुसरे के मेहेरिया अच्छी लागति है–

अर्थ–स्वार्थ दृ"ट होना।

109. खाद डारे कै खेती। नहीं नदी कै रेती।।

अर्थ– यदि खेत में खाद डाली जाय, तब तो पैदावार होगी, अगर खाद नहीं डाली गई, तब तो नदी की रेत और खेत की मिट्टी में कोई अंतर नहीं।

110. आम के आम गुठलियों के दाम–

अर्थ– डबल फायदा होना।

111. अधरम से धन होत है, बरि"ा पांच औ सात–

अर्थ–अन्याय की सम्पत्ति क्षणिक होती है।

112. आपन पेट त कुकुरउ बिलारी भरि लेत हैं–

अर्थ–स्वार्थपूर्ण भावना।

113. बैल अगोतर, भइंस पछोतर।

अर्थ– बैल का कन्धे वाला अग्रभाग पुष्ट होना चाहिए पर भैंस का थन वाला पिछला भाग।

114. आगी लगाय के पानी का दौड़य–

अर्थ–काम बिगाड़कर बनाने की कोशिश

115. आंखी फूटय पीर पटाय –

अर्थ–किसी तरह झगड़ा निपटाना।

116. आंधर आंखी पावय त पतिआय –

अर्थ–कुछ आशा हो तो हिम्मत बढ़े।

117. आपन हथा जगन्नथा–

अर्थ–अपने हाथ मलिकाना खर्च करो मनमाना।

118. आपन हार मेहेरिया के मार केसे कहै–

अर्थ–अपनी कमजोरी छिपाना।

119. आगे नात न पीछे पगहा, तेखे नांव न रोवै गदहा–

अर्थ–लावारिस व्यक्ति।

120. आंधी छोड़ सइघ का धावय, आधिउ जाय न पूरी पावय –

अर्थ–लालच में पड़ना।

121. आन के धन का चोर रोवय –

अर्थ– दूसरे के धन से ई"र्या करना

122. बैल बेसाहैं कजरा। दाम भले होय अगरा।।

अर्थ– हम"ा कजरारी आंखों वाला बैल खरीदना चाहिए, भले ही दाम अधिक देना पड़े, क्योंकि कजरारी आंखों वाला बैल चलने में तेज होता है।

123. अपना रख पराया चख–

अर्थ–अपना बचाना दूसरे का उड़ाना।

124. आंखी न कान कजरउटा नौ ठे–

अर्थ–नाकाबिल होते हुए दिखाव फिजूल खर्ची।

125. आंधर के आगे रोवय, आपन दीदा खोवय –

अर्थ–नासमझ से फरियाद।

126. अपना दीजै दु"मन कीजै–

अर्थ–उधार देकर दु"मनी लेना।

127. आई कौड़िया आई बुद्ध गई कौड़िया गई बुद्धि –

अर्थ–पैसा आने पर बुद्धि आ जाती है और जााने चली जाती है।

128. आपु गए जजमानउ घालै–

अर्थ–खुद बिगड़ना औरों को भी बिगाड़ना।

129. आवा मोखा लइगा तोखा–

अर्थ–दूसरे का हक औरों को देना।

130. अपने खोर कुकुर बरियार–

अर्थ–अपने दल के साथ दबंगई दिखाना।

131. आधे मा अजगर आधे मा सबघर–

अर्थ–अकेले ज्यादा कब्जा करना।

132. एक बात तुम सुना हमारी। बूढ़ बैल से भली कुदारी।।

अर्थ– तुम मेरी एक बात ध्यान से सुनो कि बूढ़ा बैल खरीदकर लाने से तो अच्छा है कि

खेत की कुदाल से गुड़ाई कर ली जाय।

133. अघान रहै बकुली त तीत लागे मछरी–

अर्थ–सम्पन्नता में तिरस्कार।

134. आवत लक्ष्मी का कोऊ टटिया नहीं देय –

अर्थ– मिलने वाला लाभ लेना।

135. अतरे खेती दसरे गाय। ना देखौ जो ओकर जाय।।

अर्थ– जो किसान एक दिन के अंतर से खेत घूमने नहीं जाता और हर दूसरे दिन अपनी गौशाला में जाकर गायों को नहीं देखता वह हमेशा घाटे में रहता है।

136. आपन तेल भंड़वा मा नाइले हमार करहिया रितइ दे–

अर्थ–अपना स्वार्थ साधना

137. आपन फूली न निहारय दुसरे के परि–परि झांकय –

अर्थ–अपना दोष न देना।

138. अपना खाना अपना कमाना–

अर्थ–स्वतंत्र जीवन सामाजिकता की कमी।

139. ठांढी खेती गाभिन गाय। तब जाना जब मुंह मा जाय।।

अर्थ– खेती में खड़ी फसल और गाभिन गाय को तब अपनी समझना चाहिए, जब फसल कटकर घर आ जाय और गाय बछड़ा पैदा कर दूध देने लगे, क्योंकि इनके साथ हमेशा अनिश्चितता खड़ी रहती है।

140. अंधरन मा काने राजा–

अर्थ–अयोग्य लोगों पर ‘ाासन करना।

141. अंगुरी पकड़ायन ता पहुचै पकड़ि लिहिस–

अर्थ–थोड़े सहारा से आगे बढ़ना।

142. चींटी संचे तीतुर खाय। सूम का धन सइतान लइ जाय।।

अर्थ– चींटियां दानों को संचित करती हैं और तीतर उन दानों को खाते हैं, ठीक उसी तरह जैसे सूम कंजूस का धन दूसरा कोई उपभोग करता है।

143. अब आवा ऊंट पहाड़ के नीचे–

अर्थ–सेर को सवा सेर मिलना।

144. औरत जब खिसिआय के दौरत, तब कुछ नहि औरत–

अर्थ–औरत से विवशता।

145. ओरी के पानी बड़ेरी का जाय –

अर्थ– असम्भव का सम्भव होना।

146. बार सुपेत न ओकर होय। त्रिफला से आपन सिर धोय।।

अर्थ– जो व्यक्ति हर्रा बहेरा और आंवले के भिगोये जल से अपने बालों को साफ करता है,

उसके बाल पककर सफेद नहीं होते वे काले बने रहते हैं।

147. अधाधुंध के राज मा गदहा पंजीरी खाय –

अर्थ–कुशासन से मूर्खों को फायदा।

148. बिलारी क नेउना नहि पचै।

अर्थ– बिल्ली को नेनू (नवनीत) नहीं पचती। (सभी को सब चीज हजम नहीं होती)

149. आई मौज फकीर की दिया झोपड़ा फूंक–

अर्थ–विरक्त पुरु''ा मनमौजी होता है।

150.रोज भोर खटिया से उठ के पियै तुरंतै पानी।

ओके घर मा बैद न आबै बात ल्या या मानी।।

अर्थ– जो व्यक्ति सुबह खाट से उठते ही तुरंत पानी पीता है, उसके घर में वैद्य के आने की

जरूरत नहीं पड़ती, क्योंकि उसे कोई बीमारी नहीं घेरती।

151. अपने चाटे कोऊ गोर नहीं होय –

अर्थ– अपनो बड़ाई खुद करना।

152.बाघ मुखारी नहिं करै।

अर्थ– शेर कभी दातून नहीं करता। (शक्तिशाली के लिए कोई कानून कायदे नहीं होते)

153. आंधर का खबावै फेर घरे पहुंचावै–

अर्थ–किसी काम में झंझट

154. खेते लगी मकुइयां बारी। केखर हिम्मत मूड़ निकारी।।

अर्थ– जिसके खेत के चारों ओर मकोय की बाड़ लगी हो तो कोई दुस्साहसी जानवर तक उसमें सिर नहीं डाल सकता।

155. बिल्ली के भइंसी नहि लागैं।

अर्थ– बिल्ली की भैंस नहीं लगती पर उसे दूध की कभी कमी नहीं रहती।

(मौका तलाशते रहने वाले के लिए कोई चीज दुर्लभ नहीं)

156. आन के लरिका, टोरबा, आपन हीरालाल–

अर्थ–अपनी बड़ाई दसरों की निंदा

157. महुआ के टपके धरती नहिं फटै।

अर्थ –महुआ के टपकने से धरती नहीं फटतो। (थोड़ी भूलें नजर अन्दाज भी करना पड़ता है)

158. आप टेक निभाइस, मंसेरुआ के मेछा मुड़ाइस–

अर्थ–हठ के बस गलत काम करना।

159. दूध–बियारी जे करै सोधी हर्रे खाय। जानकर अइसा कहै व सौमा ठहराय।।

अर्थ –जो व्यक्ति व्यालू में दूध का सेवन और भोजन के उपरान्त शोधी हुई हर्र खाता है तो विद्वानों का कथन है कि वह शतायु होता है।

160. पेटे म मुसबा अस लोटब।

अर्थ –पेट में चूहे लोटना। (भूख के कारण बुरा हाल)

161. अउर बात सब खोटी, सही दाल और रोटी–

अर्थ–सिर्फ खाने को महत्व देना।

162. अहिर के बच्चा कबौ न सच्चा–

अर्थ–जातीय दो''।

163. कड़ुवा तेल जो नाक लगाबै। ओकर नाक रोग मिट जाबै।।

अर्थ –जो सरसों का कड़वा तेल नाक में डालते हैं, उनके नाक के सभी रोग दूर हो जाते

164. य ता हमका आंखी फूट नहीं सोहाय –

अर्थ–किसी व्यक्ति के प्रति गुस्सा करना।

165. सांप के गोड़ सांपै क देखाथे।

अर्थ –सांप के पैर सांप को ही दिखाई देते हैं।

(अपने घर की बात वही जान सकता है, दूसरा नहीं)

166. य लरिका त काटी अंगुरी नहीं मूतय –

अर्थ –अकर्मण्यता का प्रतीक।

167. नीम गुन बत्तीस। हर्र गुन छत्तीस।।

अर्थ –नीम में यदि बत्तीस गुण हैं तो हर्र में छत्तीस गुण होते हैं।

168. केकरा केर बच्चे बिला खोदै जानाथै।

अर्थ –केकड़े का बच्चा यूं ही बिल खोदना जानता है। (कुछ गुण जन्मजात होते हैं, उन्हें अलग से नहीं सीखना पड़ता)

169. इहां दूध के धुला कोऊ नहीं आय –

अर्थ–सबके ईमानदारी में 'ाक।

170. य कान से सुनै व कान से निकारि देय –

अर्थ–अनसुनी करना।

171. है महुआ केतना उपकारी। वमा न घाला कोऊ कुल्हारी।।

अर्थ –महुआ का पौधा कितना उपकार करने वाला होता है कि उसके फल से तेल और फूल से तरह–तरह के व्यंजन बनते हैं, इसलिए उसके ऊपर कोई कुल्हाड़ी न चलाए।

172. य हमका तेल के छांह से देखत है–

अर्थ–अधिक ई''र्या करना।

173. लहटी गाय गोलइंदा खाय। धउर धउर मउहारे जाय।।

अर्थ –जो गाय एक बार महुए के फल का स्वाद पा जाती है, वह बार–बार महुआ के घने पेड़ों वाले जंगल की ओर भागती है। (किसी चीज में आशक्त हो जाना)

174. य त कबहूं सरे नही गन्धाय –

अर्थ–कभी किसी के काम में न आना

175. तेंदू महुआ जामुन आमा। फर लकड़ी सब आमैं कामा।।

अर्थ –तेंदू, महुआ, जामुन और आम ये इतने उपयोगी पेड़ हैं, जिसकी लकड़ी और फल दोनों हमारे काम आते हैं।

176. य त आंधी पानी से लड़ति है–

अर्थ–अति विवादी स्वभाव।

177. उहै बांस के डलिया टोपरा ओही के दउरी सूप।

अर्थ –उसी बांस के डलिया टोकना बनते हैं और उसी की दौरी और सूप भी। (एक ही वस्तु से बनाने वाला कई कई चीज बना सकता है)

178. य अरब दरब मा काम अई–

अर्थ – संग्रह करने की भावना।

179. केकरा के बच्चा माटिन खोदत है –

अर्थ – जन्मजात गुण का होना ।

180. जेखर बंदरवा ओहिन से नाचा थै।

अर्थ –जिसका बन्दर होता है, उसी से नाचता है। (जिसकी चीज होती है उसे चलाने की तरकीब वही जानता है)

181. कुछ तु समझे कुछ हम समझेन–

अर्थ – एक दूसरे की चालाकी समझना।

182. पानी कस पातर।

अर्थ –पानी तरह पतला होना। (पारदर्शी)

183. केला खात गाल फाटत है–

अर्थ – जादा रहीसी दिखाना।

184. तिलिन से तेल होथै।

अर्थ –तिल से ही तेल निकलता है। (कुछ बुनियादी गुण होना)

185. कहे के लाज न कहवाये के–

अर्थ – बेसर्म होना ।

186. कीचड़ मां पाथर मारे से अपनेन उपर आवत है–

अर्थ– ना समझ व मूर्ख के मुह न लगाना चाहिए।

187. कर भला तो हो भला–

अर्थ – अच्छे कार्य अच्छा परिणाम।

188. आमा कस मीठ।

अर्थ –आम की तरह मीठा होना। (मृदुभाषी होना)

189. करनी करै तो क्यों डरै करि के क्यों पछिताय।
बोवै पेड बबूल का आम कहां ते खाय।।

190. काबुल गये मुगल बनि आये, बोलै अटपट वनी।
आव–आव कहि प्रान निकरिगें,धरा सिरहने पानी।।
का पराई नीकि सूखी का पराई जोय ।
आना काना रोटी पोव तुमाहि न पूछी कोय ।।

191. कमाई न धमाई घरौ के गमाई–
अर्थ – फायदा के बजाय घर की पूजी का डूबना।

192. बांस अस बढ़ जाब।
अर्थ –बांस की तरह लंबा हो तो जाना पर मोटा न होना। (एक तरफा विकास)

193. तेल अस चुपरब।
अर्थ –तेल की तरह चुपड़ देना। (खुशामद करना)

194. कसाइउ नोन पानी मानत है –
अर्थ – नमक क अहसान ।

195. केखर–केखर लेई नाव –कथरी ओढ़े सगला गावं–
अर्थ – सभी की स्थिति व द"ाा एक समान होना।

196. करियन बरदा जेठपूत – बड़े माग से होय सपूत–
अर्थ – काला बैल और जेश्ठ पुत्र भाग्य"ाली का सपूत होता है।

197. पाथर म दूब जमाउब।
अर्थ– पत्थर में भी दूब घास उगा लेना। (असम्भव को सम्भव बनाना)

198. कहे कहे पथरउ करमट लै लेत है–
अर्थ – निवेदन व प्ररेणा जड़ व निर्जीव पर भी पड़ जाता है।

199. खर कहवइया दाढ़ी जार –
अर्थ – सत्य कहने वाले की निन्दा की जाती है।

200. खाय त पछिताय, न खाय त पछिताय –

अर्थ – दुसन्धि में पड़ना– अनिर्णय की स्थिति।

201. टिटिहरी कस उतान।

अर्थ –आसमान गिरने की आशंका से ग्रसित टिटिहरी पक्षी अपने पैर को ऊपर करके अण्डे

सेती है कि अगर आकासा गिरे तो वह अपने पंजे से रोक लेगी। (व्यर्थ ही आशंकित रहना)

202. खरी मजूरी चोखा काम–

अर्थ –अच्छा दाम देने पर अच्छा काम मिलता है।

203. खाय भतार केर गावै यार केर–

अर्थ – खाना कपड़ा पती का गुणगान यार दोस्तों का।

204. चिरई कस बसेर।

अर्थ –चिड़ियों की तरह बसेरा जैसा चिड़ियों का किसी एक पेड़ में स्थाई निवास नहीं होता।

(स्थायित्व न होना)

205. खोदा पहाड़ निकली चुहिया–

अर्थ –बहुत परिश्रम के बाद छोटा सा लाभ या प्रतिपल।

206. खोटा बेटा खोटा दाम, समय परे पर आवै काम–

अर्थ – बिगड़ पुत्र और अचल पैसा भी कभी काम आ जाता है।

207. कुइंया केर गूलर बनब।

अर्थ –कूप मण्डूक बनना। (सीमित दृष्टि)

208. खरामाल के सौ ग्राहक –

अर्थ – सच्चाई के सेकड़ों साथी ।

209. कंजरउ नोन पानी मागत है–

अर्थ – निर्दयी निर्मोही ब्यक्ति भी नमक क अहसान मानता है।

210. सौठे पीपर न खाय के एकठे ऊमर खाय लेय।

अर्थ –पीपल के छोटे छोटे बहुत से फल खाने के बजाय क्यों न ऊमर का एक ही फल खा

लिया जाय। (फुटकर काम के बजाय बड़ा और थोक काम)

211. लेय अहार त पेलै पहार–

अर्थ– फुल मात्रा मे भोजन करने वाला अच्छा परिश्रम भी करता है।

212. खाईं खोदै और को, वाको कूप तैयार–

अर्थ – दूसरे के लिए गडढ़ा खनने वाला स्वयं गिरता है।

213. जब पखियारी केर मऊत आबा थी, त पखना जमि आवाथे।

अर्थ –जब दीमक की मौत आती है, तब उसके पंख निकल आते हैं।
(घमंड समूल नष्ट कर देता है)

214. खुदा मेहरवान त गदहा पहलवान–

अर्थ–भगवान कि कृपा हो जाय तो गिरा य कमजोर भी बहादुर हो जाता है।

215. खेत विगाड़ै पटवारी, अ बिटिया का महतारी–

अर्थ – पटवारी के चूक से जमीन और मां के छूट संतान हांथ से चली जाती है।

216. अरुआ कस हूंकी।

अर्थ –उल्लू की तरह घूं–घूं करना। (गंवारपन का प्रदर्शन)

217. खीर मां साझी महेरी म निनार–

अर्थ – सुख में साथी दुख में दूर।

218. घुइंस अस लहटब।

अर्थ –जंगली चूहों द्वारा अनाज उजाड़ देना। (गरीबी आ जाना)

219.खाये के गाल नहाये के बाल उपरै देखात हैं–

अर्थ – अपने ज्ञान व अनुभव से सब समझ लेना।

220. अरहर कस बहुरब।

अर्थ –बहुत दिनों बाद लौटकर आना जैसे अरहर नौ–दस माह बाद आती है।

221. गिरदान कस मूंड़ हलाउब।

अर्थ –गिरगिट की तरह सिर हिलाना। (आंख मूंदकर सारी बातें स्वीकार कर लेना)

222. खाय बोकरी अस, सूखै लकड़ी अस–

अर्थ – कितना भी खाय पर खाने का असर न होना।

223. गोलइंदा कस गाल देखाब।

अर्थ –महुए के फल की तरह गोल मटोल गाल दिखाना। (मोटा तगड़ा हो जाना)

224. खाय के पर रहु , मारि के टर रहु –

अर्थ – भोजन के बाद विश्राम व लड़ाई के बाद प्रस्थान जरूरी होता है।

I.C.H. के तहत

प्रान्तीय जागरुकता संस्थान,सतना (म0प्र0)

द्वारा संकलित

भाग–2

हमारे लोकगीत

क्रमांक 1 से 69 तक

(क्रमसः पृश्ठ क्रमांक 1 से 29 तक)

I.C.H./ भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं

का संरक्षण स्कीम 2014–15 के तहत

प्रान्तीय जागरुकता संस्थान,सतना (म0प्र0) द्वारा संकलित

विन्ध्यांचल (बघेलखण्ड) की बघेली–लोकगीत

प्रथम चरण में मनुश्य के जन्म से लेकर मृत्यु के पूर्व तक के हमारे विभिन्न सोलह संस्कार एवं मांगलिक अवसरो (जन्म, बधाई, मुण्डन, कर्णवेध,ब्रतवंध/जनेउ विवाह ,विदाई व पुजाई अनुश्ठान आदि) के पारंपरिक एवं ऋतु, पर्व, त्योहार व मौसमी लोकगीत जिनमे राग,सुर, लय व ताल के साथ जीवन के गहरे अर्थ भी समाहित होते हैं। यहां लोकगीतो की एक संमृद्ध व गौरव''ाली परंपरा है जो वि''व की श्रेश्ठतम् ,सार्वभौमिक एवं वैज्ञानिक भारतीय सुर सांस्कृतिक है, लोकगीत में खुसी और गम की सहज अभिब्यक्ति है, इन लोकगीतों में जीवन झलकता है उसमं कई तरह के अर्थ ,भाव व निस्कर्श निकालने की छमता होती है।इन लोकगीतों के बदौलत सामाजिक प्रथाएं व परंपरांए आज भी टिकी हैं। विभिन्न आयोजनों के माध्यम सें प्रस्तुत संग्रहित संकलन में स्वाभाविक क्षेत्र व अंचल की संस्कृति में कफी दूर–दूर तक समानता के बदौलत कई–कई गीत व कहावतें (सेम) एकदम मिलती–जुलती पाई गई हैं अतः उन्हे छटनी कर मौलिक लोकगीतों का लेख संग्रह भेजा जा रहा है।

मांगलिक/ संस्कार गीत माला

मनुश्य के जन्म से लेकर मृत्यु के पूर्व तक के हमारे विभिन्न सोलह संस्कार एवं मांगलिक अवसरो पर गाए जानें वाले कमबद्ध गीत.....

1– सोहर गीत (बच्चा के पैदा होते समय का गीत)

धन्य धन्य नगर अयोध्या ,धन्य राजा द''ारथ

धन्य राजा द''ारथ हो.....। .धन्य धन्य नगर.....

अब धन्य हो कौ''ाल्या तुम्हारे भाग रमइया जहां जनमे,

रमइया जहॉ जनमे है हो....2 । .धन्य धन्य नगर.....
जउने दिन रामा जनम भे हैं , हाथि घोड़ा लुटीगे हैं–2
आवा हथियन के बल से करहुआ , रमइया द्वारा घूमय–2। धन्य धन्य नगर .....
जउने दिन रामा जनम भे हैं सोनमन जुटगे हैं, –2
आबा सोनमन के बल से बेसरिया रमइया नाके सा है–2 धन्य धन्य नगर .....
जउने दिन रामा जनम भे है, गउअन लुटि गे है–2
आवा गउअन के बल से बछवलना, रमइया दूध पीहै–2 हो.....धन्य धन्य नगर.....

// 2 //
2. – कुॅआ पूजन गीत

जल भरौं हिलोर हिलोर रे"ाम की डोरी–2
रे"ाम डोरी तबै निक लागै–2 जब पतली सी धनिया होय । रे"ाम की डोरी.....
पतली सी धनिया तबै निक लागै–2 जब सोने घइलना होय। रे"ाम की डोरी.....
सोने घइलना तब निक लागै–2 जब रूपे गोड़रिया होय। रे"ाम की डोरी.....
रूप गोड़रिया तब निक लागै–2 जब पतली से कमरिया होय। रे"ाम की डोरी.....
पतली कमरिया तब निक लगै–2 जब कोरा मॉ बालक होय। रे"ाम की डोरी.....
कोरा मा बालक तब निक लागै–2 जब काली झलरिया होय। रे"ाम की डोरी.....
काली झलरिया तब निक लागै–2 जब का"ाी मा मुण्डन होय। रे"ाम की डोरी.....
का"ाी मा मुण्डन तब निक लागै–2 जब फूफू झलरिया लेय। रे"ाम की डोरी.....
फूफू झलरिया तब निक लागै–2 जब लोई मा मोहर होय। रे"ाम की डोरी..... जल भरौं

3– जन्मदिन/मुण्डन/कन्छेदन

श्रीकृश्ण लिहिन अवतार सखी रे, मंमा के महलों मे –2
इन महलन मे सासू नहीं है –2
पिपरी कौन पिसाये, सखी रे मंमा के महलों मे.....। श्रीकृश्ण लिहिन.....
इन महलन मे जेठानी नहीं है –2

छठियॉ कौन धराये, सखी रे मंमा के महलों मे.....। श्रीकृश्ण लिहिन.....
इन महलन मे ननदी नहीं है –2
सोबरी कौन पुताबै, सखी रे मंमा के महलों मे.....। श्रीकृश्ण लिहिन.....
इन महलन मे देवरा नहीं है–2
बंसी कौन बजाये, सखी रे मंमा के महलों मे.....। श्रीकृश्ण लिहिन.....
श्रीकृश्ण लिहिन अवतार सखी रे, मंमा के महलों मे ।

4–ब्रतवंध गीत (जनेउ संस्कार होते समय का गीत)

अरे अरे कातिक कुमार चैत कबै लगिहैं हो।
हो कबै आजा जइहैं बजरिया, कपड़ा लै अइहैं हो।
हो कबै आजी रंगिहै पियरिया बरन कब होइहैं हो। अरे अरे कातिक.....
हो कबै पापा जइहैं बजरिया, कपड़ा लै अइहैं हो।
हो कबै अम्मा रंगिहै पियरिया बरन कब होइहैं हो। अरे अरे कातिक.....
हो कबै चाचा जइहैं बजरिया, कपड़ा लै अइहैं हो।
हो कबै चाची रंगिहै पियरिया बरन कब होइहैं हो। अरे अरे कातिक.....
हो कबै भइआ जइहैं बजरिया, कपड़ा लै अइहैं हो।
हो कबै भाभी रंगिहै पियरिया बरन कब होइहैं हो। अरे अरे कातिक.....

5 – मंडप गीत (मंडप पडते समय का गीत)

चलो सखी देखन चलियो रे जहां मड़वा परत है
बढइया बेटउना तै मोरे भइया
अच्छे–अच्छे खम्भा ले अइयों रे
जहां मडवा परत है। चलो सखी.....

6 – तिलकोत्सव गीत (तिलक चढ़ते समय का गीत)

आयो तिलक अगरे से, बन्ना ससुरे से ,तिलक बड़ी थोड़ी है–2

बन्ना के आजा तिलक नहीं छोरै–2

तिलक नहीं ठेगैं, तिलक बडी़ थोडी़ है। आयो तिलक.....

बन्ना के पापा तिलक नहीं छोरै–2

तिलक नहीं ठेगैं, तिलक बडी़ थोडी़ है। आयो तिलक.....

बन्ना के फूफा तिलक नहीं छोरै–2

तिलक नहीं ठेगैं, तिलक बडी़ थोडी़ है। आयो तिलक.....

7 – बारात प्रस्थान गीत (बारात जाते समय का गीत)

बेटा बेग करो तैयार तुम्हे कोई सजन बुलावैं–2

अम्मा चलो हमारे साथ अकेले हम न जावै रे–2

बेटा बाबुल को ले लो सथ दुलन्हिया ब्याह ले आवा रे।।

चाची चलो हमारे साथ अकेले हम न जावै रे–2

बेटा चाचा को ले लो साथ दुलन्हिया ब्याह ले आवा रे।

बेटा बेग करो तैयार तुम्हे कोई सजन बुलावैं–2

8 – द्वार चार गीत (बारात बधू पक्ष के यंहा पहुचने समय का गीत)

मेरा हरियाला बन्ना मेरा सहजादा बन्ना

बन्नी के घर को आया–2

बेंदी भी लूट लिया, टीका भी लूट लिया

सारा धन लूट लिया–2

बन्नी के घर को आया –2 । मेरा हरि.....

कंगन भी लूट लिया, कुण्डल भी लूट लिया

सारा धन लूट लिया–2

बन्नी के घर को आया –2 । मेरा हरि.....

9 –बन्नी चढाव गीत (दुल्हन को मण्डप में लातें समय का गीत)

बराती फूल बरसाओं बन्नी मंडप पे आई है–2
बन्नी के माथ की बेंदी बन्नी सास ने भेजी–2
पहन लो प्यार से बन्नी तुम्हे ससुराल जाना है। बाराती.....
बन्नी के हाथ की चूडी बन्नी की सास ने भेजी–2
पहन लो प्यार से बन्नी तुम्हे ससुराल जाना है। बाराती.....
बन्नी के कान के कुंडल बन्नी की सास ने भेजा–2
पहन लो प्यार से बन्नी तुम्हे ससुराल जाना है। बाराती.....
बन्नी की गले की चैन बन्नी की सास ने भेजा–2
पहन लो प्यार से बन्नी तुम्हे ससुराल जाना है। बाराती.....

10 – जयमाल गीत (विवाह की र''म जयमाल पड़ते समय का गीत)

बन्नी–बन्ना

अंचला भीतर करलो जी लग जइहै नजरिया–2
ये बन्ना अपने आजा जी के प्यारे–2
आजी के ऑखो के तारे जी, लाग जइहै–.....
ये बन्ना अपने पापा जी के प्यारे–2
मम्मी के ऑखो के तारे जी, लाग. जइहै–.....
ये बन्ना अपने चाचा जी के प्यारे–2
चाची के ऑखो के तारे जी, लाग.. जइहै–.....

11 – चढ़ाव गीत (विवाह की र''म चढ़ाव चढ़ते समय का गीत)

आज श्री सीता जी का चढ़त चढ़ाव
हरे मण्डप के नीचे जी–2
धन्य सासु धन्य ससुरा ऐसी
बहु पायो हरे मण्डप के नीचे जी–2। आज श्री सीता.....

.

12 – विवाह गीत (विवाह र''म का गीत)

कोया लगाये है आमा रे जामुन हो, कोया लगाये लखराम

कोया लगाये है सुधर बजरिया , हो सेंदुरा तो मंहग बिकाय
बाबुल लगाये है आमा रे जामुन हो, पीतिया लगाये लखराम
भइया लगाये है सुधर बजरिया हो सेंदुरा मंहग बिकाय हो। कोया.....

13 – लावा परसाई गीत (विवाह की एक र"म लावा परसाई का गीत)

लावा परस भइया लावा त बहिनी तुम्हारी हो
एक पिपरी तोरी बहिनी, दूसर बहनोइया हो। लावा परस.....
एक पिपरी तोरी फूफू , दूसर फूफा हो। लावा परस.....
एक पिपरी चाची बहिनी, दूसर चाचा हो। लावा परस.....
एक पिपरी मौसी बहिनी, दूसर मौसा हो। लावा परस.....

14 – अंजुरी गीत (विवाह की एक र"म अंजुरी का गीत)

हॉथ मा सेधउरा लीन्हें, खाय बीरा पान हो कि–2
आ न जात्या मोरी धना हमरेन साथ हो कि–2
कइसे के आई स्वामी, तुम्हरेन दे"ा हो कि–2
ठाढ़े देखय माया बाबुल नागरी के लोग हो कि। ठाढ़े देखय.....।हॉथ मा.....
...
कइसे के आई स्वामी तुम्हरेन दे"ा हा कि–2
ठाढ़े देखय चाचा चाची नगरी के लोग हो कि–2 ठाढ़े देखय.....।हॉथ मा....
....
कइसे के आई स्वामी तुम्हरेन दे"ा हो कि–2
ठाढ़े देखय भइया भाभी नगरी के लोग हो कि–2 ठाढ़े देखय.....।हॉथ मा...
.....

15 – बनरा गीत (विवाह की एक र"म का गीत)

द्वारे डाल दो सतरंगिया, चौपड़ खेलै रे बनरा –2
चौपड़ खेलै रे बन्ना, चौपड़ खेले रे बनरा –2 ।
अपने आजा से बाजी लगामैं रे बनरा – 2
पड़गा दाव पलटगा पांसा बाजी जीतै रे बन्ना। द्वारे डाल दो.....
अपने बाबुल से बाजी लगामै रे बनरा –2
पड़गा दाव पलटगा पांसा बाजी जीतै रे बन्ना । द्वारे डाल दो.....
अपने चाचा से बाजी लगामैं रे बन्ना–2
पड़गा दाव पलटगा पांसा बाजी जीतै रे बन्ना । द्वारे डाल दो.....
...
अपने भइया से बाजी लगामै रे बन्ना–2
पड़गा दाव पलटगा पांसा बाजी जीतै रे बन्ना । द्वारे डाल दो.....
..
द्वारे डाल दो सतरंगिया चौपड़ खेलै रे बंना–2
चौपड़ खेलै रे बन्ना, चौपड़ खेले रे बन्ना।

16 – बेलनहाई गीत (विवाह की एक र"म का गीत)

ऐजी ऐसी प्यारी बहनी चिट्ठिया लिख भेजैं, चले आमैं भइया हमार–2
एजी कइसे के अउबैं बहनी तुम्हरे हम दे"ाय
पड़गे है उअत के घाम–2 । ऐ जी एसी.....
ऐजी दर्जी बुलाउबै छत्र तनउबै
चले आमै भइया हमार–2 । ऐ जी एसी.....
ऐजी कइसे के अउबै बिहनी तुम्हरे हम दे"ाय
पड़गे है नदिया औ नार। ऐजी एसी.....
ऐजी नदिया अ नार मा पुल बधबउबै
चले आमै भइया हमार–2। ऐजी एसी प्यारी.....
ऐ जी कइसे के अउबैं बहिनी तुम्हरे हम दे"ाय
मर जाबै भूख और प्यास–2। ऐजी एसी प्यारी.....
एजी गलियन गलियन जेवना बनबउबै ,गंगा जल की धार। ऐ जी एसी प्यारी.....
ऐजी ऐसी प्यारी बहनी चिट्ठिया लिख भेजैं, चले आमैं भइया हमार–2

17 – गारी गीत (विवाह मे बरातियों के भोजन करते समय का गीत)

राम जंगल में बागत है जाइके, कुटिया सूनी पाइन आइके –2

मृगा मार राज जब आये, कुटिया को सूनी जब पाये,
मन ही मन बहुत ही पछताये, सोच कीन्ही है मन में हर्शाये के,
कुटिया सूनी पाइन आइके। राम जंगल में..... (अंतरा–1)
पूछे राम वृक्ष से जाई, यहॉ को आई सीता माई,
हमको दइयो तनिक बताई वृक्ष न बोले न तनिकौ बताय के,
कुटिया सूनी पाइन आयके। राम जंगल में.....(अंतरा–2)
आयके राम ने ढूढ़त जायी, इतने मे मिल गये जटाऊ,
दीन्हीं सबला हाल बताई, रोकत मैं रथ को चोंच से लड़ाय के,
कुटिया सूनी पाइन आय के। राम जंगल में.....(अंतरा–3)
गिद्ध से पूरा पता बताई, राम ने उसकी कियों दवाई,
गिद्ध को सीधे बैकुण्ठ पठाई, कहो सब कोऊ राम राम आइके,
कुटिया सूनी पाइन आय के। राम जंगल में.....(अंतरा–4)

गारी गीत–2 (विवाह मे बरातियों के भोजन करते समय का गीत)
पांतिन पांनि परिगै पतरिया, बैठे लखन चारो भाई
काहे के पतरी काहेन के दोना काहे न डोभ डोभाई।
पान की पतरी छिउलन के दोना, लौंगन डोम डोभाई। पांतिन.....
काहे के रोटी काहेन के साग काहे न सोंध सोंधाई।
मैदा की रोटी गोभी के साग,घिव सुरहिन केर सोंधाई। पांतिन.....

18 – सोहाग गीत (विवाह अवसर का गीत)

अरे एतने जतन सेरे पाल्यौ रे चिरइया–2
पै उड़ गै विदेि"या के दे"ा। रानी के सोहगवा।
अरे आजा उनके रोमय रूमाल मुख पोछय–2
पै आजी उनकी रोमय निरा धार। रानी.....
अरे चाचा उनके रोमय रूमाल मुख पोछय–2
पै चाची उनकी रोमय निरा धार। रानी.....
अरे भइआ उनके रोमय रूमाल मुख पोछय–2

पै भाभी उनकी रोमय निरा धार। रानी.....

19 – कलेवा गीत

(विवाह प''चात बरात विदाई के पूव वर का कलेवा/नास्ता अवसर का गीत)

दूल्हे कर लो कलेवा दिल खोल के , विनय करो हाथ जोड़ के ।
टी.व्ही. मागै टी.व्ही. नइया, मोटर मागै मोटर नइया
कार हमको देने नइया
लाला लैले साइकिलिया दिल खोल के, विनय करू हाथ जोड के। दूल्हे कर.....

कूलर. मागै कूलर नइया, पंखा मागै पंखा नइया
एसी हमको देने नइया
लाला लैले तू बेनमा दिल खोल के, विनय करू हाथ जोड के। दूल्हे कर.....

20 – बिदाई गीत (विवाह के बाद बारात व लड़की की विदाई अवसर का गीत)

द्वारे माही बाजा बाजै भितरे सहनाई हो कि–2
आज मण्डप सूना होइगा बेटी ब्याही दूरी हो कि–2
बाहिरे से आजा रोमय भीतरे से आजी हो कि–2
आज मण्डप सूना होइगा बेटी ब्याही दूसरी हो। द्वारे माही.....।
बाहिरे से पापा रोमय भीतरे से माइ हो कि–2
आज मण्डप सूना होइगा बेटी ब्याही दूसरी हो। द्वारे माही.....।

21 – परछन गीत (बारात वापस वर के घर आने पर परछन अवसर का गीत)

धीरे करो परछनिया, सिया राम लाये दुल्हनिया –2
पहली परछनिया उनकी आजी करत है –2। धीरे करो परछनिया.....
दूसरी परछनिया उनकी माया करत है –2। धीरे करो परछनिया.....

तिसरी परछनिया उनकी चाची करत हैं –2। धीरे करो परछनिया.....
चौथी परछनिया उनकी भौजी करत है –2। धीरे करो परछनिया.....
धीरे करो परछनिया, सिया राम लाये दुल्हनिया –2

22 – डोला मुदाई गीत (विवाह की एक र"म डोला मुदाई गीत का गीत)

लाला खोल दे केवडिया हो...मैं देखों तुम्हरी धना।
धौ सावल है धौ गोर.....मैं देखों तुम्हरी धना। लाला.....।
धौ पातर है धौ मोट.....मैं देखो तुम्हरी धना। लाला.....
धौ लम्बी है धौ छोट.....मैं देखो तुम्हरी धना। लाला.....
लाला खोल दे केवडिया हो...मैं देखों तुम्हरी धना।

23 – गैलहाई गीत (मंडप छूटने के बाद बहाने नदी जाते समय का गीत)

लक्षिमण लिए बाण रामा हिरनिया मारै–2
पहली हिरनिया बागा मा मारिन, बागा बिच मारिन
मालिन के ओटे, रामा हिरनिया मारै–2। लक्षिमन.....।
दुसरी हिरनिया कुअन बिच मारिन, कुअन बिच मारिन
कहरिन के ओटे, रामा हिरनिया मारै–2। लक्षिमन.....।
तिसरी हिरनिया महल बिच मारिन, महल बिच मारिन
रनियन के ओटे, रामा हिरनिया मारै–2। लक्षिमन.....।

24 – देवी पूजन गीत (नई बहू आने पर देवी की पुजाई समय का गीत)

मइया विनती करू मैं दोऊ कर जोड़े–2

मइया पहली अरज मोरी सुन लीजै–2 मइया विनती.....
मइया दूसरी अरज मोरी सुनली जै–2
मोरे पाव की पायल अमर कीजै–2.....मइया विनती.....
मइया तिसरी अरज मोरी सुनली जै–2
मोरे हाथ चूड़ी अमर कीजै–2 मइया विनती.....
मइया चौथी अरज मोरी सुनली जै–2
मोरे गले का हरवा अमर कीजै–2 मइया विनती.....

25 – होरी गीत (वैवाहिक अवसर पर गाया जाने वाला होरी गीत)

बिजनैया चमा चम लौगे जड़ी–2
ठंडा सा पानी गरम कर लायो,
तुम सफरो न राजा मै मायके चली। बिजनैया.....
सोने के थाली में जैमना परोस्यौं,
तुम ज्योमो न राजा मै मायके चली। बिजनैया.....

होरी गीत 2– सिर बाधे मुकुट खेले होरी–2

पहली होरी गया मा खेलिन
गया गजाधर की है जोड़ी। सिर बाधे.....।
दुसरी होरी वृन्दवन मा खेलिन
राधा कि''ान की है जोड़ी। सिर बाधे.....।
तिसरी होरी अयोध्या मा खेलिन
रामा सिया की है जोड़ी। सिर बाधे.....।

26 – कजरी गीत (सावन महीने में गाया जाने वाला गीत)

हरि रामा बेला फुलै आधीरात
चमेली भिनसारे रे हारी–2
हरि रामा ठण्डा सा पानी गरम कर लायो रामा–2

हरि रामा ससुरा सफरैं आधीरात
सास भिनासारे रे हारी । हरि रामा.....।
हरिरामा सोने के लोटा गंगा जल पानी रामा –2
हरिरामा ससुरा घुटै आधीरात
सास भिनसारे रे हरि । हरि रामा.....।
हरि रामा रूचि रूचि के मैं तो जेमना बनायो रामा।
हरे रामा ससुरा जेमैं आधीरात, सास भिनसारे रे हरि। हरि.....

27 – हिंदुली गीत (सावन महीने में गाया जाने वाला गीत)

लगत अशढ़वा बोले रे पापी मोरिला पै
मोरो मन लागै नईहरवा हो ना–2
आजी मोरी होती खबर मोरी करती पै
आजा दिहिन बिसराई हो ना।
माया मोरी होती खबर मोरी करती पै
बाबू दिहिन बिसराई हो ना।
भइया मोरे होते खबर मोरी लेते पै
भाभी दिहिन बिसराई हो ना। लगत अशढवा.....।

आइये देखे–सुनें और पढें
–लिखे कुछ बेघंली के और भी लोकगीतो का संकलन

28 – बन्ना गीत

लै धनुश बन्ना ठाड़ोरी, कोई जोडी तो मिलाय दो–2
जोडी़ तो मिलाय दो, जोडी़ तो मिलाय दो,– लै धनुश.....
मॉथे बन्ना जी के मौरे भी सोहै–2
टिपकिन बिच सिया जानकी, कोई जोडी तो मिलाय दो,– लै धनुश.....
बन्ना जी के कानो मे कुंडल सोहे –2
झुमकिन बिच सिया जानकी , कोई जोडी़ तो मिलाय दो,– लै धनुश.....
अंग बन्ना जी के जामा सोहे –2
चुनरी के बिच सिया जानकी, कोई जोड़ी तो मिलाय दो,– लै धनुश.....
हाथ बन्ना जी के घड़िया सोहे–2
कंगन बिच सिया जानकी कोई जोडी़ तो मिलाय दो,– लै धनुश.....

लै धनुश बन्ना ठाड़ोरी, कोई जोडी तो मिलाय दो ।

29 – बधाई गीत

लालन के जनम दिन द"ाहरा मनाएगें–2
द"ाहरा मनाएगे दीवाली मनाएगें, रहे जिंदगानी तो होली मनाएगें।लालन के.....
लालन के जनम दिन मे ंसासू बुलाएगे–2
सासू बुलाएगे पिपरी पिसायेगें, रहे जिंदगानी तो अम्मा बुलायेगें। लालन के.....
लालन के जनम दिन में जेठी बुलाएगें–2
जेठी बुलायेगें लड्डु बधाएगें, रहे जिंदगानी तो चाची बुलायेगें। लालन के.....
..
लालन के जनम दिन मे ननदी बुलाएगें–2
ननदी बुलायेगे सोबरी पुतायेगें, रहे जिंदगानी तो बहना बुलायेगें। लालन के.....
.....
लालन के जनम दिन में देवरा बुलायेगें–2
देवरा बुलायेगें बंसी बजवायेगें, रहे जिंदगानी तो भइया बुलायेंगें। लालन के.....
.....
लालन के जनम दिन द"ाहरा मनाएगें।

30 – देवी गीत

देवी पूजन चली भर सॉस रसीली मालिनियॉ–2
रॉछड़ गेरूआ गंगा जल पानी–2
अरे कंचन थाली सजाय रसीली. मालिनियॉ । देवी पूजन चली.....
मेवा बतासा से भरगै डलिया–2
अरे रूचि–रूचि जेवना बनाय रसीली मालिनियॉ । देवी पूजन चली.....
देवी पूजन चली भर सॉस रसीली मालिनिया।

31 – सोहाग गीत

अरे इतने दिनन केरी पाली रे चिरइया –2

पैं ले गये बिदे"िया उड़ाय, रानी के सोहगवा–2
अरे आजा उनके रोमैं, रूमाल मुख पोछै–2
पै आजी उनकी रोमैं निराधार , रानी के.....
अरे पापा उनके रोमैं रूमाल मुख पोछै–2
पै माया उनकी रोमैं निराधार ,रानी के.....
अरे चाचा उनके रोमैं रूमाल मुख पोछै–2
पै भाभी उनकी रोमैं निराधार, रानी के.....
अरे इतने दिनन केरी पाली रे चिरइया –2
पैं ले गये बिदे"िया उड़ाय, रानी के सोहगवा।

32 – अंजुरी गीत

कोया गूथे मोती माला, कोया गूथे हार हो कि कोया गूथे हार हो की
कोया करे ढेंरिया के सोलह सिंगार हो । कोया गूथे मोती.....
माया गूथे मोती माला चाची गूथे हार हो कि–2
भाभी करै ढेरिया के सोलह सिंगार हो ।
कोया देखे मोति माला कोया देखै हार हो की–2
कोया देखे डेंरिया के सोलह सिंगार हो ।
सासू देखे मोति माला जेठी देखै हार हो कि–2
सइयां देखे डेरिया के सोलह सिंगार हो–2
कोया गूथे मोती माला.....

33 – बन्ना गीत

उनके लाला के लिये कलम म"ियानी, बगल में किताब
ललन मोरे पढ़ने को जइहै रे, ललन मोरे पढने को जइहै रे–2
(1) उनकी मम्मी (माया) लिए कटोरन दूध
गलीन बिच ठाड़ निहारे रे–। उनके लाला लिए .....
(2) उनकी चाची लिए कटोरन दूध
गलीन बिच ठाड़ निहारे रे। उनके लाला लिए .....
(3) उनकी आजी लिये कटोरन दूध

गलीन बिच ठाड़ निहारे रे। उनके लाला लिए ....
.उनके लाला के लिये कलम म"ायानी, बगल में किताब
ललन मोरे पढ़ने को जइहै रे, ललन मोरे पढने को जइहै रे–2

34 – दादरा गीत (मुण्डन/कन्छेदन अवसर का)

हमसे जुलुम जेठानी करैं, बरजा राजा जेठ – 2
(1) आधी रात सासू पनिया को भेजैं–2
मटकी फोड जेठानी धरैं, बरजा राजा जेठ। हमसे जुलुम जेठानी करैं......................
(2) आधी रात सासू पीसबे को भेजै–2
मुठिया तोड़ जेठानी धरैं, बरजा राजा जेठ। हमसे जुलुम जेठानी करैं......................
(3) आधी रात सासू जेमना को भेजैं–2
बटुआ तोड़ जेठानी धरैं, बरजा राजा जेठ। हमसे जुलुम जेठानी करैं......................
हमसे जुलुम जेठानी करैं, बरजा राजा जेठ–2

35 – दादरा गीत

रात काहे रोये रे ललन तैं, बिहाने घुनघुनमा मागउवै–2
(1) ससुरे मे होती तो सासू से कहती –2
अम्मा से, अम्मा से कहत लजान्यौं, बिहाने ....रात काहे...........
(2) ससुरे मा होती तो जेठानी से कहती –2
चाची से, चाची से कहत लजान्यौं, बिहाने ....रात काहे...........
(3) ससुरे मा होती तो देवरानी से कहती –2
भाभी से, भाभी से कहत लजान्यौं, बिहाने ....रात काहे...........
(4) ससुरे मा होती तो ननदी से कहती –2

बहना से , बहना से कहत लजान्यौं, बिहाने .....रात काहे.....
रात काहे रोये रे ललन तैं, बिहाने घुनघुनमा मागउवै–2

36 – सोहाग गीत

अरे हली भाली डोलिया, सजाया मोरे बाबुल–2
पै चले जाब ससुरू के दे"ा, रानी के सोहगवा–2
अरे ससुरू के दे"ा न जया मोरी बेटी –2
पै मर जइहा भूखी या पियास, रानी के सोहगवां .....
अरे भूॅख सहि लेबै पियास सहि लेबै
पै सहबै न आजी जी के बोल, रानी के.....
अरे ससुरू के दे"ा न जया मोरी बेटी –2
पै मर जइहा भूखी या पियास, रानी के सोहगवां .....
अरे भूॅख सहि लेबै पियास सहि लेबै
पै सहबै न माया जी के बोल, रानी के.....। अरे हलि भली डोलिया.....
.।

37 – गारी गीत

बखरी तो भली बनवाया जनक जी, खिडकी लगवाया फुलवारी की हाजी,
आये सजन चारो भइय बराती दमक
रहे मुस्काई की हाजी हो। बखरी तो भली.....
पैर धोबाबन का कोपरी मंगाई ,जल तो मंगाई
गंगाजल की हाजी हो। बखरी तो भली.....
पातन पातन परगै पतरिया निरखै सीतल

सुकुमारी की हाजी हो। बखरी तो भली.....
बखरी तो भली बनवाया जनक जी, खिडकी लगवाया फुलवारी की हाजी,

38 – दादरा गीत (नचनहाई– मांगलिक अवसर पर महिलाओं के नृत्य का गीत)

कउनौ बरन के गजरा हो मोहि नीक न लागैं–2
मइके के नीक लागै बाग बगइचा –2
ससुरे के फूली फुलवरिया हो मोही नीक न लागे–2
कउनौ बरन.....
मइके के नीक लागै घर खपरैला–2
ससुरे के रंगीली महलिया हो मोही नीक न लागे।–2 कउनौ बरन के .....
मइके के नीक लागे अम्मा और बहना–2
ससुरे के सासु ननदिया हो मोही नीक न लागे। कउनौ बरन के .....
कउनौ बरन के गजरा हो मोहि नीक न लागैं।

39 – दादरा हास्य गीत

दिये गोल टोपी नजर मारे अपना–2
पनिया भरन गई संग गये अपना–2
फूट गई गागर फिसल गये अपना। दिये गोल टोपी.....
रोटिया बनाने गई संग गये अपना–2
फूल गई रोटी पिचक गये अपना। दिये गोल टोपी.....
सेजा सोबन गई संग गये अपना–2
खिसक गया सेजा उलट गये अपना–2 दिये गोल टोपी.....
दिये गोल टोपी नजर मारे अपना–2

40 – अंजुरी गीत

कोया गूथे मोती माला, कोया गूथे हार हो कि कोया गूथे हार हो की
कोया करे ढेंरिया के सोलह सिंगार हो
माया गूथे मोती माला चाची गूथे हार हो कि–2
भाभी करै ढेरिया के सोलह सिंगार हो

कोया देखे मोति माला कोया देखै हार हो की–2
कोया देखे ढेरिया के सोलह सिंगार हो
सासू देखे मोति माला जेठी देखै हार हो कि–2
सइया देखे डेरिया के सोलह सिंगार हो–2
कोया गूथे मोती माला.....

41 –बेलनहाई गीत

उअत के सुरज बहुत निक लागै अथवत छायी ललाई जी–2
बेटी का जनम बहुत निक लागैं, धन सम्पत्ति घर होई जी। उअत के सुरज.....
माया कहै बेटी नेरे बियहबैं, बाबुल काहे कुछ दूरी जी–2
भइया कहै बहिनी गंगा बियहबैं, भौजी न बोलय मुख बोल जी। उअत के सुरज.....
माया कहै बेटी जल्दी बुलउबै बाबुल कहै कुछ देरी जी–2। उअत के सुरज.....
उअत के सुरज बहुत निक लागै अथवत छायी ललाई जी–2

42 – बेलनहाई गीत

निहुर के गोरिया अंगना बटोरय
जोगिया ठार दुआर मोरे लाल –2
जोगिया–जोगिया न करा सजनी, लागौ मैं सजना तुम्हार मोरे लाल
जो तुम जोगिया मोरे सजवा लगत हो
सासू का तीरथ कराना मोरे लाल । निहुर के .....
जो तुम जोगिया मोरे सजना लगत हो
जेठी अलग करावा मोरे लाल । निहुर के.....
जो तुम जोगिया मोरे सजना लगत हो
ननदी को गमना करावा मोरे लाल। निहुर के गोरिया.....

43 – दादरा गीत

मोरे सइयॉ के महलिया लगे रे फुलवा –2
हमरे ससुर जी के तीन है लडिका –2
हॉ–हॉ ओतन्यों सुन्दर, गुइया ओतन्यों मा सुन्दर हमार बलमा–2 मोरे सइया .....
हमरे ससुर जी के तीन महलिया–2

हॉ–हॉ ओतन्यो मा सुन्दर ,गुइया ओतन्यो मा सुन्दर हमार महला–2 मोरे सइया .....
हमरे ससुर जी के तीन हैं नतियॉ–2
हॉ–हॉ ओतन्यों मा सुन्दर, गुइया ओतन्यों मा सुन्दर हमार ललना–2 मोरे सइया .....
.
मोरे सइयॉ के महलिया लगे रे फुलवा–2

44 –बेलनहाई गीत

रामलखन तपसी दोनो भइया, साधू बने चले जाय मोरे लाल –2
चलते–चलते बागा मा पहुॅचे, मालिन उठी घबराय मोरे लाल ।
ठहरो–ठहरो ओ साधू भइया, गजरा गुहाय लिये जाव मोरे लाल। रामलखन तपसी....
तोर गुहा गजरा न लेबै मालिन, साधू धरम घट जाये मोरे लाल। रामलखन तपसी.....
.....
चलते चलते ताला मा पहुॅचे, धोबिन उठी घबराय मोरे लाल।
ठहरो ठहरो ओ साधू भइया, कप ड़ा धुलाय लिये जाओ मोरे लाल। रामलखन तपसी.....
तोर धुबा कपड़ा न पहिनब धोबिनिया, साधू धरम घट जाय मोरे लाल।रामलखन तपसी..
चलते चलते कुअना मा पहुॅचे कहरिन उठी घबराय मोरे लाल।
ठहरो–ठहरो ओ साधू भइया, पनिया भराय लियो जाओ मोरे लाल। रामलखन तपसी...
.
तोर भरा पनिया न पीबै कहरिन, साधू धरम घट जाय मोरे लाल। रामलखन तपसी....
रामलखन तपसो दोनो भइया साधू बने चले जाय मोरे लाल ।

45 – दादरा गीत

घनी अमरइया कोयल कहॉ बोलय रे–2
सासू मागे लहगा ननद मागे चुनरी–2
सइयां मागे पागा रंगाय कहां पाऊ रे । घनी अमरइया.....
सास मागे कंगना ननद मागे चूड़ी–2
सइया मागे मुदरी गढाय कहॉ पाऊ रे । घनी अमरइया.....
सास मागे लौग ननद मागे लइची–2
साइया मागे बीरा रचाय कहॉ पाऊ रे। घनी अमरइया.....
सास मागे लड्डू ननद मागे पेंड़ा–2
सइया मागे बरफी जमाय कहॉ पाऊ रे। घनी अमरइया.....

46 – बेलनहाई गीत

फर गई अमिया लचक गई डलियॉ, को तोड़ै को खाय मोरे लाल ।
जो घर होते ननद के बिरना, वो तोड़त हम खाब मोरे लाल। फर गई अमिया.....
चार महीना बरसा ऋतु आई, को देय छानी छबाये मोरे लाल। फर गई अमिया.....
जो घर होते ननदी के बिरना, छानी देते छबाये मोरे लाल। फर गई अमिया.....
चार महीना गरमी ऋतु आई, को देय बिजनिया डोलाये मोरे लाल। फर गई अमिया....
...
जो घर होते ननद के बिरना, देते बिजनिया डोलाय मोरे लाल। फर गई अमिया.....
.
फर गई अमिया लचक गई डलियॉ, को तोड़ै को खाय मोरे लाल।

47 – दादरा गीत

खपरइले के बिरले बॉस शयन पर बूंदा चुऐ – 2
ससुरा जो हाते ता धन के छबउते –2
ससुइया के कौन वि”वास, शयन पर बूंदा चुऐ – खपरइले के बिरले.....
जेठा जो होते ता धन के छबउते–2
जेठनिया के कउन वि”वास, भायन पर बूंदा चुए – खपरइले के बिरले.....
देवरा जो होते ता धन के छबउते–2
देवरनिया के कउन वि”वास, भायन पर बूंदा चुए – खपरइले के बिरले.....
ननदोइया जो होते ता धन के छबउते–2
ननदिया का कौन वि”वास, भायन पर बूंदा चुऐ – खपरइले के बिरले.....
खपरइले के बिरले बॉस शयन पर बूंदा चुऐ ।

48 – गारी गीत

बखरी तो भली बनवाया हो जनक जी, खिड़की लगवाया फुलवारी जी–2
आये सजन चारो भइया बराती, दमक रहे मुस्काई जी। बखरी तो भली.....
गोड़ धोबन का कोपरी मगाइन, जल तो मगाइन गंगा जल जी। बखरी तो भली.....
.
पांतिन–पांतिन पड़गै पतरिया, निरखै सीतल सुकुमारी जी। बखरी तो भली.....
एक–एक सखियॉ गारी सुनामैं , खात रहै मुस्काई जी। बखरी तो भली.....
बखरी तो भली बनवाया हो जनक जी, खिड़की लगवाया फुलवारी जी ।

49 – बेलनहाई गीत

आये मेहमान हमे अच्छे लगत हैं, काहै की सब्जी बनाऊ मोरे लाल – 2
कटहर बनाऊ मोहे अटहर लगत है, काहे की सब्जी बनाऊ मोरे लाल। आये मेहमान...
..
आलू बनाऊ मोहे भालू लगत है, काहे की सब्जी बनाऊ मोरे लाल। आये मेहमान.....
करइला बनाऊ मोहि करूआ लगत है, काहे की सब्जी बनाऊ मोरे लाल। आये मेहमान..
परवर बनाऊ मोहि करवर लगत है, काहे की सब्जी बनाऊ मोरे लाल। आये मेहमान....
.
आये मेहमान हमे अच्छे लगत हैं, काहै की सब्जी बनाऊ मोरे लाल

50 – बेलनहाई गीत

एजी हमरे ससुर जी के बाग बगइचा, फूल फुल झर जाय –2
एजी कोया गलामै बेला रे चमेली, कोया लगामै अनार।
एजी कोया लगामै अंतर के बिरवा, बगिया महक रहि जाय। एजी हमरे ससुर.....
एजी रामा लगामै बेला रे चमेली, लक्ष्मण लगामैं अनार।
एजी सीता लगामै अंतर के बिरवा, बगिया महक रहि जाय। एजी हमरे ससुर.....
एजी काहे से सींचैं बेला रे चमेली, काहे से सीचैं अनार।
एजी काहे से सीचैं अंतर के बिरवा, बगिया महक रहि जाय। एजी हमरे ससुर.....

एजी गगरी से सीचैं बेला रे चमेली, लोटा से सीचैं अनार।
एजी सोने घइलना से अंतर के बिरवा, बगिया महक रहि जाय। एजी हमरे ससुर.....

51 – कजरी गीत

सखियॉ समझ के डालै जै माला, राम जी की समली सुरतियॉ ना ।
सोने के थाली में जेमना परोसैव
सीता समझ के जेमना जेवामय । राम जी की.....
सोने के लोटा गंगा जल पानी
सीता समझ के जलवा घुटामैं । राज जी की.....
लौग सुपाड़ी का बीरा लगायव
सीता समझ के बिरिया रचामैं। राम जी की.....
सखियां समझ के डालै जै माला, राम जी की समली सुरतिया ना

52 – दादरा गीत

हमरे हुये नन्दलाल हो, चली आना ननदिया –2
काठे का पलना न लाना ननदिया –2
चंदन के हमरे रिवाज हो, चली आना ननदिया। हमरे हुये नन्दलाल.....
लड़का बच्चा न लाला ननदिया –2
हमरे है गोदी मा लाल हो, चली आना ननदिया। हमरे हुये नन्दलाल.....
हमसे नेगा न माग्या ननदिया –2
हम तुमका झूमका देब हो , चली आना ननदिया। हमरे हुये नन्दलाल.....
हमर हुये नन्दलाल हो चली आना ननदिया।

53 – दादरा गीत

रामा के बारी उमरिया हो, विकट बन कइसे के रहिहैं–2
जो मै जनत्यों रामा वन जइहै –2
वन ही मा बागा लगउत्यों। विकट बन कइसे.....। रामा के बारी.....
जो मै जनत्यों रामा वन जइहैं –2
वन ही मै कुटिया बनउत्यों। विकट बन कइसे.....। रामा के बारी.....
जो मै जनत्यों रामा वन जइहैं –2
वन ही मै ताला खोदउत्यों। विकट बन कइसे.....। रामा के बारी.....
जो मै जनत्यों रामा वन जइहैं –2
वन ही मा कुअना खादउत्यों। विकट बन कइसे.....। रामा के बारी.....
जो मै जनत्यों रामा वन जइहैं –2
वन ही मा भक्ति रमाउत्यों। विकट बन कइसे.....। रामा के बारी.....
रामा के बारी उमरिया हो, विकट बन कइसे के रहिहैं।

54 – दादरा गीत

वन बोलय मुरइली राम निदिया न लागै रे –2
रह रह मुरइली मै तोहि बतइहौं, बतइहौं ससुर जी से आज। निदिया न.....
रह रह मुरइली मै तोहि बतइहौं, बतइहौं जेठ जी से आज। निदिया न.....
रह रह मुरइली मै तोहि बतइहौं, बतइहौं देवर जी से आज। निदिया न.....
रह रह मुरइली मै तोहि बतइहौं, बतइहौं सइयां जी से आज। निदिया न.....
वन बोलय मुरइली राम निदिया न लागै रे ।

55 – दादरा गीत

धीर धरो सवर करो राजा, मोरी बाजे पयलिया –2
सास मोरी घर मा ससुर मोरे घर मां–2
ससुरा की लाज राखो राजा। मोरी बाजे पयलिया.....। धीर धरो .....
जेठानी मोरी घर मा जेठ मोरे घर मां–2
जेठा की लाज राखो राजा। मोरी बाजे पयलिया.....। धीर धरो .....
देवरानी मोरी घर मा देवर मोरे घर मां–2
दवरा की लाज राखो राजा। मोरी बाजे पयलिया.....। धीर धरो .....
धीर धरो सवर करो राजा, मोरी बाजे पयलिया ।

56 – कजरी गीत

सखियॉ चला चली दर्शन का बृज मा झूल रहे नंदलाल ।
कोया झूलै कोया झुलामे–2
कोया खींचै डोर रामा – 2 । सखियॉ.....
रामा झूलै लक्ष्मण झुलामैं – 2
हनुमत खींचै डोर रामा – 2 । सखियॉ चला.....
ब्रम्हा झूलै विष्णु झुलामैं – 2
शंकर खींचै डोर रामा – 2 । सखियॉ चला.....
राधा झूलै रूकमिन झुलामैं – 2
ललिता खीचै डोर रामा – 2 । सखियॉ चला.....

57 – गैलहाई गीत

गेंदा का फूल कहां पाऊॅ हो, राजा मोरे गेंदा का बिरझै –2
वह फूल फूलै मोरे ससुरा जी के बगिया –2
सासरानी टोरन न देय हो, राजा मोरे.....। गेंदा का फूल.....
वह फूल फूलै मोरे जेठानी जी की बगिया–2
जेठानी टोरन न देय हो, राजा मोरे.....। गेंदा का फूल.....
वह फूल फूलै मोरे देवरा जी की बगिया–2
देवरानी टोरन न देय हो, राजा मोरे.....। गेंदा का फूल.....
गेंदा का फूल कहां पाऊॅ हो, राजा मोरे गेंदा का बिरझै ।

58 – दादरा गीत

कट कट भीष गिरै धरनी मा, भुजा गिरै मोरे आंगन मॅा –
विधवा हो गई बचपन मॉ। –2
आग लगै तोरे बागा बगइचा, आग लगै राजधानी मॉ। विधवा हो गई.....
आग लगै तोरे महल अटरिया, आग लगै राजधानी मॉ। विधवा हो गई.....
आग लगै तोरे कुइयॉ बउलिया, आग लगै राजधानी मॉ। विधवा हो गई.....
कट कट भीष गिरै धरनी मा, भुजा गिरै मोरे आंगन मॅा –
विधवा हो गई बचपन मॉ।

59 – सोहर गीत

वृन्दा रे वन के रहइया चंदन वन जइहा, चंदन वन जइहा हो–
अब लाय लालि पलगरया, ललन पहुडउबै ललन पहुडउबै हो। वृन्दा रे वन.....
केही चाही लाली पलगरिया, केही रे दोनो मोरिला हो –
अब केही चाही सोना परेउना, केही रे कठपुतली हो– 2। वृन्दा रे वन.....
ललना का लली पलगरिया , राजन दोनो मुरिला हो –2
अब देवरा का सोने परेउना , ननद कठपुतली हो –2। वृन्दा रे वन.....
डोलै लागी लाली पलगरिया, बोलय रे दोनो मुरिला हो –2
अब पढ़ै लागे सोने के परेउना, नाचे रे कठपुतली हो –2। वृन्दा रे वन.....
वृन्दा रे वन के रहइया चंदन वन जइहा, चंदन वन जइहा हो ।

60 – भोले बाबा गीत

भोलन तुम्हरे लम्बे दे"ावा हो,
अरे लम्बे दे"ावा हो मोरी फेंकी नजर नहीं जाय हो। भोलन तुम्हरे.....
पवनसुत धीरे बहे हो,
अरे धीरे बहे हो, मोरे यात्री का निबल शरीर हो। । पवनसुत. ..... भोलन तुम्हरे.....
.....
पहड़िया मा रामा लड़े हो,
अरे रामा लड़े हो, और लंका मा लड़े हनुमान हो। पहड़िया मा ..... भोलन तुम्हरे..
.....

भरत जी से जातै कहे हो,
अरे जातै कहे हो,मोर लक्षिमण के लगी भाक्तिबाण हो। भरत जी से.....भोलन तुम्हरे.....

61 –कुँआ पूजन गीत

ऊपर बदर घुमडाय हो, नीचे गोरी पनिया का निकली–2
जाई कहे मोरे राजा ससुर से,
अंगने मा कुंइया खोदाये हो। ऊपर बदर घुमडाय.....
जाई कहे मोरे राजा जेठ से,
अंगने मा कुंइया खोदाये हो। ऊपर बदर घुमडाय.....
जाई कहे मोरे देवर जी से,
अंगने मा कुंइया खोदाये हो। ऊपर बदर घुमडाय.....
ऊपर बदर घुमडाय हो, नीचे गोरी पनिया का निकली

62 – सोहर गीत

कहना उपजी हैं बेलिया त कहना चमेलिया, त कहना चमेलिया हो आवे
कहना उपजी झलरिया, झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....। 2
बागा मॉ उपजी है बेलिया त अॅगने चमेलिया त अॅगने चमेलिया हो आवे
अंचला मॉ उपजी झलरिया झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....। कहना उपजी..
.
काहे मॉ सीचौं मै बेलिया त काहेन चमेलिया त काहेन चमेलिया हो आवे

काहे मॉ सीचौं झलरिया, झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....। कहना उपजी..
दुधवा मॉ सीचौं मै बेलिया त दहिया चमेलिया ता दहिया चमेलिया हो आवे
तेलवा से सीचौं झलरिया झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....। कहना उपजी..
काहे मा तोड़ौ बेलिया त काहे मॉ चमेलिया काहे चेमलिया हो आवे
कहो मां लेव झलरिया झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....। कहना उपजी...
.टुकनी मा तोड़ौ मै बेलिया ता अॅचला चमेलिया ता अॅचला चेमलिया हो आवे
लोई मा लेव झलरिया झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो..... । कहना उपजी....
कहना उपजी हैं बेलिया त कहना चमेलिया, त कहना चमेलिया हो आवे
कहना उपजी झलरिया, झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....।

63 – कजरी गीत

चला सखी झूलन केरि भई बेरिया, मधुवन बोलन लागे मोर
कौन काठ का बना हिंडोलना–2
काहेन लागी डोर रामा । चला.....
चंदन काठ का बना हिंडोलना–2
रे''ाम लागी डोर रामा। चला सखी.....
कोया झूलै कोया झुलामैं–2
कोया खींचै डोर रामा । चला सखी.....
राधा झूलै कृश्ण (''याम) झुलामैं–2
सखियॉ खींचै डोर रामा। चला सखी.....

64 – कुऑ पूजन गीत

जल कैसे भरौं जमुना गहरी, जमुना गहरी–2
ठाढ़े भरौं चूनर सरकत है–2
निहुरे भरौ भीगे चुनरी – भीगे चुनरी। जल कैस भरौं.....

धीरे चलौं घर बालक रोबै–2
तेज चलौं छलकै गगरी – छलकै गगरी। जल कैस भरौं.....
जल कैसे भरौं जमुना गहरी, जमुना गहरी।

65 –भगत गीत

बेर बेर बरजौं तोही रे मलिनिया,
गली बिच गमला न बोए होमा। मइया गली बिच गमला न बोए होमा। –2
अउती होइहै भाारदा माता–2 गमला गरज उड़ जाय होमा। बेर बेर.....
अउती होइहै काली माता–2 गमला गरज उड़ जाय होमा। बेर बेर.....
अउती होइहै दुर्गा माता–2 गमला गरज उड़ जाय होमा। बेर बेर.....

66 – दादरा गीत

कान्हा मटकी न फोड़ो डगरियन में – 2
जो कान्हा तुम्हें भूख लगी हो–2
कान्हा जेवना रखो है रसोइयन मे। कान्हा मटकी न.....
जो कान्हा तुम्हें प्यास लगी हो–2
कान्हा जलवा रखो है गगरियन मा। कान्हा मटकी न.....
जो कान्हा तुम्हे बंसी बजानी हो–2
कान्हा मुरली रखी है तोरे कमरिया मे–2। कान्हा मटकी न...

67 –सोहाग गीत

अरे सीता बियाहन चले राजा द''ारथ–2

पै चली आमै गंगे की धार रानी के सोहगवा –2
अरे राजा द''ारथ जैसे ससुरा मैं पायौं–2।
और पायौं कौ"ाल्या जैसी सास रानी के सोहगवा। अरे सीता.....
अरे लक्षिमण भइया जइसन देवरा मै पायौं–2
पय वर पायौं भगवान रानी के सोहगवा। अरे सीता.....
अरे एक हाथे लोटा दूसर हाथे गजरा–2
पै चली आमै देवी हमार रानी के सोहगवा। अरे सीता.....
अरे नगर आयोध्या एक राज्य मैं पायौं–2
अरे अचल रहे अहिबात रानी के सोहगवा। अरे सीता..... अरे सीता बियाहन ।

68 –बेलनहाई गीत

ऐजी सीता बियाहन चले राजा द''ारथ धरती का लागे है उमंग–2
ऐजी माया मोरी दिहिन है नौमन सोनमा, बाबुल मोरे लहर पटोर। ऐजी सीता.....
ऐजी भइया मोरे दिहिन है सुरंग चुनरिया, भौजी सेंदुर भरी मांग। ऐजी सीता.....
ऐजी माया केरे सोनमा नौ दिन पहिरयन, फटगै लहर पटोर । ऐजी सीता.....
ऐजी भइया चुनरिया छिनर छुन जइहै रह गई सेंदुर भरी मॉग। ऐजी सीता.....
ऐजी माया मोरी रोमैं अलियन गलियन, पापा मोरे रोमै दरबार। ऐजी सीता.....
ऐजी भइया मोरे रोमैं डोलिया के आस–पास, कहा चली बहिनी हमार। ऐजी सीता.....
.....
ऐजी सीता बियाहन चले राजा द''ारथ, धरती का लगी है उमंग। ऐजो सीता.....
ऐजी सीता बियाहन चले राजा द''ारथ धरती का लागे है उमंग–2

69 –सोहर गीत

आधे तलवा मा नाग ता आधे मा नागिन ता आधे मा नागिन हो आबा
आधा तलाब मोरा सूना ता एक कमल बिना, एक कमल बिना हो.....। आबा.....
आधे ओसरिया मा गोपी बइठे आधे मा गोपिया ता आधे मा गोपिया हो आबा।
आधी ओसरिया मोरी सूनी ता एक ननद बिना एक ननद बिना हो.....। आबा.....
जो सुन पाइन बिरना ता मिचिक दिहिन बटुवा मिचिक दिहिन बटुवा हो आबा।
उगिल दिहिन पान ता पान का बीरा, ता पान का बीरा हो .....। आबा.....
घोड़े पीठ भये है सवार चले बहिनी लेबामैं ता बाहिनी लेबामै हो .....। आबा.....
आधे तलवा मा नाग ता आधे मा नागिन ता आधे मा नागिन हो आबा।

अब नीचे फाइनल प्रतिवेदन सेकण्ड चरण की

प्रान्तीय जागरुकता संस्थान,सतना (म0प्र0) द्वारा संकलित

विन्ध्यांचल की बघेली कहावते / लोकोक्तियों (उपाख्यान)

हमारी
कहावते / लोकोक्तियां
भाग–3

(क्रमसः पृश्ठ क्रमांक 1 से 24 तक)

निम्न विन्दुओं पर आधारित

बारहमासी

नक्षत्रों का प्रभाव

वर्षा से संबंधित कहावतें

खेती किसानी

पशुओं की पहचान

कुछ अन्य कहावतें

दवा दारू और इलाज

लकड़ियों के गुण और उपयोग

देहाती बघेली लोकोक्तियां

भूमिका –हमारी कहावते/ लोकोक्तियों के संदर्भ में

विसंगतियों और विद्रूपताओं से संघर्ष और ज्ञान के विस्तार हेतु नये–नये अर्थ उद्घाटित करने में तत्पर रहती हैं। चार कोस में पानी बदले आठ कोष में बानी के कारण भले ही उच्चारण में रूप बदलते रहे हों पर उनकी पैठ घर, गली, आंगन, चौपाल, खेत, खलिहान हर जगह अपने पैने और चत्मकारिक वाक्य के रूप में रही है। बघेलखण्ड में इन्हें उक्खान कहा जाता है, जिसे विद्वान संस्कृत के उपाख्यान का बिगड़ा स्वरूप मानते हैं।

वैसे इन लोकोक्तियों को स्थान परक, जातिपरक, नीति परक, प्रकृति परक, पशु–पक्षी परक आदि कई वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, मुहावरे विसंगतियों के खिलाफ एक भड़ास और पहेलियों में इस तरह की भूल–भुलैया हैं, जिसका हल निकालने में दिमागी कसरत करनी पड़ती है।

लोकोक्ति इसी तरह अनेक पहेलियाँ है पुरखों की इस मौखिक परम्परा की धरोहर को संकलित करना समय का तकाजा है।

अक्सर देखने में आता है कि 4–6 ग्रामों के बीच ऐसे गुणी जन एक दो की संख्या में अव''य मिल जाते हैं जिनको किसी खास विषय का ज्ञान जन सामान्य की तुलना में अधिक होता है पर उचित अवसर के अभाव में कुछ प्रतिभायें उपेक्षित रह जाती हैं और अवसर मिला तो उनकी दूर दूर तक फैल जाती हैं

सच्चाई चाहे जो भी रही हो पर कहावतों की अपनी विशिष्ट रचना शैली के कारण दूर दूर तक ऐसी पहचान बनी कि सम्पूर्ण भारत की तरह बघेलखण्ड में भी ये कहावतें थोड़े पाठान्तर के साथ कही जाती हैं। इन कहावतों के अलावा कुछ और परम्परागत ज्ञान है, वह है मुहावरे और लोकोक्तियों और पहेलियों का। लोकोक्तियां अनुभवजन्य सत्य पर आधारित लोक, यानि जनता जनार्दन की वह युक्तियां हैं जो थोड़े में बहुत गंभीर और बड़ी बात कहकर ज्ञान के साथ साथ मनोरंजन भी करती हैं।

इस तरह जन जन की जुबान पर रची–बसी ये कहावतें शुरू शुरू में किसी ग्रामीण मजदूर किसान के मुंह से निकली होंगी पर बाद में व्यापक लोक स्वीकृति मिल जाने के कारण के दूर–दूर तक फैलकार लोक की सम्पत्ति बन गई।

बारहमासी

1– जो पानी बरखे बइसाख। खरिहाने म सरगै लाक।।

–यदि बैसाख माह में पानी बरसता है खलिहान में रखी लांक भीगकर सड़ जाती है।

2– जेठ माह जो बरखी पानी। तपी न धरती घटी किसानी।।

–यदि जेठ के महीने में पानी बरसता है तो जमीन में तपन नहीं होती, फलस्वरूप खरीफ की फसल अच्छी नहीं होती।

3– उतरत जेठ जो बोले दादुर। कहै घाघ जल आबै आतुर।।

– यदि जेठ माह में अंतिम सप्ताह में मेंढ़क बोलने लगे तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा ऋतु

शीघ्र ही आने वाली है।

4– जब जेठ चले पुरबाई। तब समान धूर उड़ाई।।

–यदि जेठ के महीने में पुरवाई हवा चल रही हो तो समझ लेना चाहिए कि आगामी सावन के

महीने में वर्षा नहीं होगी।

5– मास अषाढ़ गउतरी कीन। तेकर खेती होइगै हीन।।

– जो किसान अषाढ़ महीने में इधर–उधर रिश्तेदारी में मेहमानी करता है, उसकी खेती नष्ट

समझना चाहिए, क्योंकि अषाढ़ का महीना किसानी के काम के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है।

6– जो अषाढ़ के पूनू बादर घेरे चन्द। गाबा भइया गीत तूं घर–घर होय आनंद।।

–यदि अषाढ़ की पूर्णमासी को चन्द्रमा बादलों से छिपा रहे तो आप आनंद के गीत गाइए,

क्योंकि वर्षा अच्छी होगी, फलस्वरूप अनाज की उपज घर–घर खुशहाली लाएगी।

7– बाहे नहीं तैं एक अषाढ़, अब का बहते बारम्बार।।

–अषाढ़ में तुमने एक बार खेत की जुताई नहीं की, अब बार–बार जोतने से क्या लाभ।

8– गोहूं निकहा काहे। अषाढ़ के दुइवाहे।।

–गेहूं की फसल इतनी अच्छी क्यों है? इसलिए कि अषाढ़ में खेत की दो बार जुताई की गई थी।

9– अउगल बरखै मास अषाढ़, लाल पियर दिन होइहै गाढ़।।

–यदि असाढ़ माह में अच्छी वर्षा हो जाती है तो जल्दी फसल की बुवाई हो जाती है, फलस्वरूप किसान मजदूरों के लाल पीले गाढ़े दिन समाप्त होकर खुशहाली का समय आ जाता है।

10– सामन शुकला सप्तमी जो गरजै अधिरात। बरखै ता सूखा परै नाही समौ सुकात।।

–सावन शुक्ल पक्ष की सप्तमी को यदि अर्धरात्रि में मेघ गर्जन करे और पानी गिरे तो समझ

लेना चाहिए कि इस वर्ष सूखा पड़ेगा। पर यदि मौसम सूखा रहे तो समझना चाहिए कि

फसल अच्छी होगी।

11– बालें छोटी काहे? बिन अषाढ़ के बाहे।।

–तुम्हारे फसल की बाल छोटी क्यों है? इसलिए कि अषाढ़ में खेत की जुताई नहीं की गई थी।

12– सामन बरखै आमा झोरा। धान पकाबै अट्टा टोर।।

–यदि सावन के महीने में बड़ी–बड़ी बूंदों की वर्षा होती है तो धान की खूब पैदावार होती है।

13– सामन सांमा अगहन जाबा। वतनै काटे जेतनै बोबा।।

–यदि सावन के महीने में सांवा और अगहन के महीने में जौ बोया जाय तो उतनी ही पैदावार हाती है, जितना बोया जाता है, क्योंकि सांवा शुरू अषाढ़ और जौ कार्तिक में बोना चाहिए।

14– सामन सुवनै परै अकाल। चींटी बहिनी देय उधार।।

–सावन के महीने में तोते भूखे मरने लगते हैं, क्योंकि उस समय न तो अनाज की नई फसल आ पाती और न कोई फल ही खाने क लिए मिलते, इसीलिए चींटियां जो घास आदि के दाने सूखने के लिए बिल के बाहर रखती हैं, तोते उन्हें ही खाते हैं और फसल आने पर कर्ज पटाने के लिए आधे दाने कुतर कर फेंक देते हैं, जिन्हें चींटियां बिल में रख लेती हैं।

15– सामन पुरबइया बहे भादौं बहे पछेह। हरवाहा घर छांड़ के लड़का कहौ जिआव।।

–यदि सावन के महीने में पुरवैया हवा और भादों में पछुआ चले तो हल चलाने वाले को खेती का काम छोड़कर ऐसे स्थान में चले जाना चाहिए, जहां मजदूरी का काम मिल सके और परिवार का पालन पोषण हो सके।

16– सामन पहिली पांचै धन गरैज आधिरात । तुम भागा पिय मालवा हम जाबै गुजरात।।

–यदि सावन मास कृष्ण पक्ष की पंचमी को अर्धरात्रि में मेघ गर्जना करें तो किसान की पत्नी का कथन है कि पति तुम काम की तलाश में मालवा जाओ और मैं गुजरात जाऊंगी, क्योंकि इस वर्ष भीषण सूखा पड़ेगा।

17– सामन शुकला सप्तमी उवत न देखे भान। तब भर बरखा होई है जब लौ देव उठान।।

–यदि सावन शुक्ल पक्ष की सप्तमी को उगते समय सूर्य न दिखे तो उस वर्ष कार्तिक की देव

अनुष्ठानी एकादशी तक वर्षा होती है।

18– सामन शुकला सप्तमी उवत जो देखै भान। को जल मिलें समुद्र मा की गंगा के ठांव।।

–यदि सावन शुक्ल पक्ष की सप्तमी को उगते समय सूर्य दिख जाय तो समझ लेना चाहिए कि

इतना भीषण सूखा पड़ेगा कि पानी या तो समुद्र में मिलेगा या गंगा नदी में।

19– भादौं जेतनै बरखै जल। होय किसान क वतनै भल।।

–भादौं के महीने में जितनी अधिक वर्षा होती है, वह किसान के लिए उतनी ही लाभदायक होती है, क्योंकि खरीफ और रबी दोनों फसलों की अच्छी पैदावार की संभावना बढ़ जाती है।

20– जै दिन भादौं बहे पछार । तै दिन पूष म परै तुषार।।

–जितने दिन भादौं माह में पछुआ हवा चलेगी, उतने ही दिन पूष माह में शीत और पाले का

प्रकोप रहेगा।

21– भादौं बदी एकादशी जो न छिटकै मेघ। चार मास बरखै नहीं अस कहिगे सहदेव।।

–यदि भादौं मास कृष्ण पक्ष एकादशी को आकाश मंडल में बादल नहीं फैला हो तो ज्योतिषी

सहदेव का कथन है कि आगामी चार माह तक वर्षा नहीं होगी।

22– माह कुमार कै बरखा । आधा गांव अनमन आधा हरखा।।

–क्वांर माह में ऐसा पानी बरसता है कि एक ओर के खेत में पानी ही पानी हो जाता है, पर दूसरी ओर एक बूंद भी नहीं गिरता। फलस्वरूप आधे गांव के किसान प्रसन्न हो जाते हैं, पर आधे गांव में उदासी ही छाई रहती है, क्योंकि उनकी धान सूख रही होती है।

23– कुमार कै अरसी धन कै खान। कातिक बोये बिक्ख समान।।

–क्वांर माह में अगर अलसी की बोनी की जाय तो उसकी फसल ठोस और अच्छी होती है, पर वही अलसी अगर कार्तिक माह में बोई जाय तो फूल के पश्चात् उसमें दाने नहीं आते, पर अगर उस दाने रहित फूल और फल की घेंटी को जानवर खा लेते हैं तो बीमार हो जाते हैं।

24– जो कुमार मा बरखै पानी । होय तिली उरदा कै हानी।।

–यदि क्वांर के महीने में अधिक पानी बरसता है तो उड़द और तिल की फसल नष्ट हो जाती

है।

25– जो कातिक मा बरखा करी। गोहूं केर होय बिजमरी।।

– यदि कार्तिक माह में पानी बरसता है तो किसान के खेत में बोये हुए गेहूं का बीज नष्ट हो

जाता है।

26– कातिक बोबे अगहन भरै। हाकिम रूठ तड़ का करै।।

– जो किसान अपने गेहूं की बुवाई कार्तिक माह में कर लेता है और अगहन में उसकी पहली सिंचाई कर देता है तो यदि उसके ऊपर राजस्व अधिकारी नाराज भी हो तो उसका क्या बिगाड़ लेंगे? क्योंकि खेत में इतनी फसल होगी कि वह आराम से लगान भर सकेगा।

27– अगहन बरखे गोहूं चना। सीका देय खेत में घना।।

–यदि अगहन के महीने में पहली वर्षा हो जाती है और किसान के खेत के चना और गेहूं सिंच

जाते हैं तो उनके पौधे घने हो जाते हैं और खूब कल्ले फूटते हैं।

28– अगहन बरखे हून। पूष बरखे दून।। माघ बरखे सवाई। फागुन बरखे मूर गमाई।।

–अगहन मास में पानी बरसने से जहां खेत में भरपूर फसल मिलती है, वहीं पूष में लागत की

दूनी और माघ में सवाई, पर वही बरसा यदि फाल्गुन मास में हो तो लाभ बजाय खेती पर

खर्च की गई घर की पूंजी भी डूब जाती है।

29– अगहन मास बोवाये जउआ। भ,त,भ, नहि खाइन कउआ।।

–जो कोई अगहन के महीने में जौ की बुवाई करते हैं तो यह निश्चित नहीं है कि फसल पककर आयेगी, क्योंकि बोते समय ही कौआ उसे निकाल–निकाल कर खा जाते हैं।

30– गोहूं यतना काहे? कातिक के चौबाहे।।

–गेहूं इतना अच्छा क्यों है? इसलिए कि खेत की कार्तिक माह में चार बार जुताई की गई थी।

31– माघ पूष जो दक्खिन चलै। तौ सामन के लच्छन भलै।।

–यदि पूष और माघ के महीने में दक्षिण दिशा वाली हवा चलती है तो सावन में अच्छी वर्षा होने की संभावना रहती है।

32– माघ मास जो गिरै मघाउट । गोहूं भूसा होय अघाउट।। //4//

–यदि माघ के महीने में महावट की वर्षा हो जाती है तो गेहूं के दाने और भूसा दोनों की अच्छी पैदावार होती है।

33– माघ म उक्खन जेठ म जाइ। पहिलेन बरखा भरगा ताल।।

कहैं घाघ हम होव बियोगी। कुइंया खोद के धोइहैं धोबी।।

–यदि माघ के महीने में ठंडी न पड़े और जेठ में हल्की ठंडी पड़े तथा पहली वर्षा में तालाब भर जाय तो समझना चाहिए कि इस वर्ष सूखा पड़ेगा कि किसान परेशान हो जाएंगे और धोबी कुंआ खोदकर कपड़ा साफ करेंगे।

34– माघ म बादर लोहित करै। तब जाना की पथरा परै।।

–यदि माघ के महीने में आकाश मंडल में लाल रंग के बादल घुमड़ रहे हों तो समझ लेना चाहिए कि शीघ्र ही ओला पड़ने की संभावना है।

35– माघ मास के बरखे पानी। गोहू पकै मसूर कै हानी।।

–यदि माघ के महीने में महावट की वर्षा होती है तो गेहूं की पैदावार तो बढ़ जाती है, परन्तु मसूर की फसल नष्ट हो जाती है।

36– माघ सुदी आठै घन गरजै। तो महिना भर पानी बरखै।।

–माघ शुक्ल अष्टमी को यदि मेघ गर्जन करें तो समझ लेना चाहिए कि निरन्तर एक माह तक पानी गिरेगा।

37– मरौं माघ का मारा, देंय अषाढ़ै दोष।।

–बैल का कथन है कि मुझे माघ के महीने में पेट भर भूसा चारा नहीं खिलाया गया, पर आज जब अषाढ़ में हल नहीं खींच पाता तो मुझे दोषी ठहराया जा रहा है।

38– फागुन मास बहै पुरबाइ। तब गोहूं मा गेरुआ धाई।। –यदि फागुन के महीने में पुरवाई हवा चले तो समझ लेना चाहिए कि गेहूं में गेरुआ रोग लगेगा।

39– लपका गरजी फागुन आबै। लाटा डोभरी का तरसाबै।। –यदि फागुन के महीने में आकाश मण्डल में मेघ गर्जन करें और बिजली चमके तो महुए के फूल मारे जाते हैं, फलस्वरूप महुए से बनने वाले व्यंजन लाटा, डोभरी आदि खाने को नहीं मिलते।

40– कातिक बात कहातिक। टगहन हंड़िया अदहन।।

–कार्तिक माह में दिन इनते छोटे होते हैं कि बात करते–करते समाप्त हो जाते हैं, इसी तरह अगहन माह के दिन भी इतने छोट होते हैं कि अगर बटलोई में चावल चढ़ा दिया जाय तो पकते–पकते दिन ढल जाता है।

41– पूष कोने घूस– पूष के महीने में सूर्य किनारे किनारे ही डूबने चला जाता है।

42– चइत चुमाचुम बइसाख म कर्रा। जेठ कठेठ असाढ़ सुख देत।। –चैत में थोड़ा थोड़ा और बैसाख में कड़ा घाम होता है, असाढ़ में वर्षा आते ही राहत मिल जाती है।

43– सामन महिना मन का भामन। भादौ चहला खोर मचामन।। क्वार आओ जर बोखार।।

–सावन का महीना बड़ा ही सुहावना होता है, पर भादों में रास्ते पगडंडी हर जगह कीचड़ मचा रहता है। उधर क्वांर घर–घर में मलेरिया बुखार फैलाने वाला महीना होता है।

नक्षत्रों का प्रभाव

1– आर्द्रा वरस पुनर्वस तपै। सूखै धान खाय नहिं सकै।।

–यदि आर्द्रा नक्षत्र में पानी बरसने के पश्चात् पुनर्वस नक्षत्र में धूप निकलने लगे तो धान सूख जाती है और चावल खाने को नहीं मिलता।

2– आर्द्रा पेड़ पुनर्वस पाती। होय सुरेखा दिया न बाती।।

–यदि आर्द्रा नक्षत्र में धान बोया जाय तो धान का पौधा मोटा होता है, पर पुनर्वस नक्षत्र के बोने से सिर्फ पत्तियां हरी किन्तु जो कोई अश्वलेखा नक्षत्र में बोते हैं, उनकी धान तो इतनी भी नहीं पकती कि उसे बेंचकर दीपावली का दीपक जला सकें।

3– आवत नहि अद्रा दिहिस जात न दीन्हिस हस्त। तब दोनों पछतात हैं पहुंना अउर ग्रहस्त।।

–लगते ही आर्द्रा नक्षत्र और समाप्ति के समय हस्त नक्षत्र में वर्षा नहीं हुई तो मेहमान और गृहस्थ दोनों को पछतावा रहता है, क्योंकि फसल नहीं होती।

4– आदि न बरखै अद्रा हस्त न बरख निदान। कहैं घाघ सुन घाघनी होंय किसान पिसान।।

–यदि लगते ही आर्द्रा और उतरते समय हस्त नक्षत्र में पानी नहीं बरसाया तो किसान लगान और गृहस्थी के बोझ में आटे की तरह पिसता रहता है।

5– चित्रा गोहूं अद्रा धान। वमा न गेरुआ वमा न धान।।

–जो किसान चित्रा नक्षत्र में गेहूं और आर्द्रा में धान बोते हैं, उनकी फसल अच्छी होती है, क्योंकि गेहूं में न तो गरुआ लगता है और न ही धान में गंधी कीड़ा।

6– पुखा पुनर्वस भरे न ताल। तौ पुन भरिहैं अगले साल।।

–यदि पुष्य और पुनर्वस नक्षत्र में तालाब नहीं भरे तो समझ लेना चाहिए कि वे अब अगले वर्ष ही भरेंगे, क्योंकि यही दोनों नक्षत्र ऐसे हैं, जिनमें खूब वर्षा होती है।

7– पुखा पानी का दुखा। –अक्सर पुष्य नक्षत्र में पानी की कमी रहती है।

8– सुरेखा न बोइये। कूट पीस खाइये।।

–अश्वलेखा नक्षत्र में बोने के बजाय धान को कूट पीस कर खा लेना अच्छा है, क्योंकि धान पकने की संभावना कम रहती है।

9– मघा, धरती अघा। –मघा नक्षत्र के बरसने से धरती तृप्त हो जाती है।

10– जो कहुं मघा बरख गा जल। सब अनाज का होई भल।।

–यदि मघा नक्षत्र में पर्याप्त वर्षा हो जाती है तो उससे सभी प्रकार के अनाजों को लाभ पहुंचता है।

11– पुरबा रोपै धान किसान। आधा पइरा आधी धान।।

–जो किसान पूर्वा नक्षत्र में धान का रोपा लगाते हैं, उसमें धान और पुवाल दोनों अच्छे होते हैं।

12– पुरबा जो पुरवाई पाबै। सूखी नदिया नाव चलाबै।।

–यदि पूर्वा नक्षत्र में पुरवैया हवा चलने लगे तो इतनी वर्षा होती है कि सूखी पड़ी हुई नदियों में नाव चलने लगती है।

13– पानी बरखै उत्तरा। मांड़ पियै ना कुत्तरा।। //6//

–यदि उत्तरा नक्षत्र में वर्षा हो तो धान की इतनी पैदावार होती है कि कुत्ते तक चावल का मांड़ नहीं पीते।

14– जो अद्रा मा बोबै साठी। दुक्खै मार निकारै लाठी।।

–यदि आर्द्रा नक्षत्र में धान की बुवाई हो जाय तो इतनी अच्छी पैदावार होती है कि सारे दुख तकलीफ दूर हो जाते हैं।

15– चटका मधा न पटका ऊपर। दूध भात न पटका ऊसर।।

–अगर मघा नक्षत्र में सूखा पड़ गया तो सारी धरती बंजर सी हो जाती है, फलस्वरूप न तो धान की फसल होती और जानवरों के चारे की कमी के कारण दूध भी नहीं होता।

16– हथिया बरखै चित मेंउ राय।घर बइठे किसान रेरिआय।।

–यदि हस्त नक्षत्र में पानी झड़ी लग जाय तो किसान का मन स्थिर नहीं रहता, क्योंकि खेत में उड़द और तिल की फसल नष्ट हो जाती है।

17– जो बरखा चित्रा मा होय। सगली खेती जाबै सोय।।

–यदि चित्रा नक्षत्र में वर्षा हो रही है तो सारी फसल जमीन में गिरकर नष्ट हो जाती है।

18– चित्रा बरखे तीन गे कोदों तिली कपास। चित्रा बरखे तीन भे गेहूं, शक्कर, मास।।

–चित्रा नक्षत्र के बरसने से जहां तीन अनाज कोदों, तिल और कपास नष्ट हो जाते हैं, वहीं गेहूं, गन्ना और मसूर की फसल अच्छी होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

19– उतरा गये निखत्तरा हाथी गे मुह बोर। बढ़ै बपुरी चिंत्तैं ज उनलाई लोक बहोर।।

–उत्तरा और हस्त नक्षत्र ये दोनों सूखे ही चले गये धन्य हो चित्रा नक्षत्र का जो पानी बरसा कर फसल को जिला दिया और परदेश गये लोग भी लौटकर घर आ गये।

20– रोहिन बरखे मृगतपे कुछ कुछ अद्रा जाय। अइसा बोलै भड्डरी स्वान भात ना खाय।।

–यदि रोहिणी नक्षत्र में पानी बरस गया हो और मृगसिरा नक्षत्र में तेज धूप खिलकर आर्द्रा में भी गर्मी पड़ी हो तो उस वर्ष इतनी वर्षा होती है कि कुत्ते तक भात नहीं खाते, क्योंकि धान की पैदावार बहुत अधिक होती है।

21– जो कछु बरखै स्वाती। चरखा चलै न तांती।।

–यदि स्वाती नक्षत्र में वर्षा होती है तो कपास की फली नष्ट हो जाती है, इसलिए उस वर्ष चरखा और धुनिया की धनुही नहीं चलती।

22– स्वाती नखत म कठिया बोबै। गेरुआ कबहूं पास न आबै।।

–यदि स्वाती नक्षत्र में कठिया गेहूं बोया गया हो तो गेरुआ लगने की संभावना नहीं रहती।

23– एक पानी जो बरखै स्वाती। पहिर किसानिन सोन कै पाती।।

–अगर स्वाती नक्षत्र में एक बार पानी बरसता है तो खेत में पलेवा हो जाता है, जिससे अधिक पैदावार होती है ओर किसान की पत्नी सोने के गहने बनवाती हैं।

24– हस्त न बजरी चित्र न चना। स्वाति न गोहूं बिसाख न घना।।

–हस्त नक्षत्र में बाजरा चित्रा में चना विशाखा नक्षत्र में पानी गिरने से धनिया और स्वाती नक्षत्र में पानी बरसने से गेहूं की फसल नहीं होती।

25– स्वाती गोहूं चित्रा चना। पकी निठोल और होई घना।।

–यदि स्वाती नक्षत्र में गेहूं और चित्रा में चना बोया गया हो तो वह ठोस दाने वाला होता है और शाखाएं भी खूब फूटती हैं।

26– चना चित्तरा चौगुना स्वाती गोहूं होय।

–चित्रा नक्षत्र में बोया गया चना और स्वाती नक्षत्र में बोया गया गेहूं अन्य नक्षत्र में बोये गए गेहूं, चने से चौगुना पैदावार देता है।

27– आधे हथिया मूर मुराई। आधे हथिया सरसों राई।।

–आधे हस्त नक्षत्र तक मूली की फसल बोनी चाहिए और उसके पश्चात् आधे नक्षत्र में सरसों और राई की फसल लेनी चाहिए।

28– हाथी बरखे तीन गे उरदा तिली कपास।

–हस्त नक्षत्र में पानी बरसने से उड़द तिल और कपास की फसलें नष्ट हो जाती हैं।

29– ऊख कंदानी काहे। स्वाती पानी पाये।।

–गन्ने की फसल इतनी अच्छी क्यों हुई? क्योंकि स्वाती नक्षत्र में उसकी एक बार सिंचाई की गई है।

30– रोहणी मृगसिर बोबै मक्का। लाभ न पाबै एकौ टक्का।।

–जो किसान रोहणी और मृगसिरा नक्षत्र में मक्का की बुवाई कर देते हैं तो तेज धूप के कारण फसल नष्ट हो जाती है और उन्हें एक टका भी लाभ नहीं मिलता।

31– चढ़तै बरखै अद्दरा उतरत बरखै हस्त। केतनौ राजा डांड ले तउऔ खुशी ग्रहस्त।।

–यदि लगते ही आर्द्रा नक्षत्र में पानी गिर गया हो और उतरते समय हस्त नक्षत्र में वर्षा हो तो राजस्व अधिकारी चाहे जितना कर वसूल करे, किसान को परेशानी नहीं होगी, क्योंकि फसल अच्छी होती है।

32– उत्तर दिशा बादर घुपै, दक्खिन करै निशान। चरबाहा ऊंचे करै जइयन करे बंधान।।

–यदि उत्तर दिशा की ओर बादल घुमड़ और दक्षिण की ओर बिजली चमककर गर्जना करे तो ग्वालों को चाहिए कि अपने गायों की पशुशाला ऊंचे स्थान में बना लें, क्योंकि घनघोर वर्षा के लक्षण हैं।

3– सात दिना जो दक्खिन कहै। सात दीप जल कहौ न रहै।।

–यदि सावन भादों मास में सात दिन तक दक्षिणी हवा चले तो बहुत समय तक वर्षा न होने

के लक्षण समझना चाहिए और फलस्वरूप सभी जगह का पानी सूख जायेगा।

34– तेज मंद जो बहै बतास। तब जानै बरखा कै आस।।

–यदि हवा कभी तेज और कभी मंद गति से चले तो समझ लेना चाहिए कि अच्छी वर्षा होगी।

35– बादर उचै महोबिया कोना। होई बरखा या परमाना।।

–यदि सतना जिले से वायव्य कोण (महोबा वाला कोना) की ओर बादल छुपे हों तो तेज वर्षा

होगी।

36– धन वा राजा धन वा देश। पानी बरखै अगहन शेष।।

–वह शासक और वह क्षेत्र धन्य है, जहां आधे अगहन के पश्चात् ठंड की वर्षा हो रही हो, क्योंकि इससे अच्छी उपज होगी।

37– जब हथिया पूंछ डोलाबै। तब घर–घर गोहूं आबै।।

–जब हस्त नक्षत्र में हवा के साथ वर्षा होती है तो उस वर्ष गेहूं की अच्छी पैदावार होती है।

38– पूरब बादल पच्छिम जाय। रोटी पकाय के मोटी खाय।।

–पूर्व की ओर घुमड़ कर यदि बादल पश्चिम की ओर आए तो पतली रोटी के बजाय मोटी रोटियां खाने लगना चाहिए, क्योंकि अनाज की अच्छी पैदावार होगी।

39– पच्छिम केर बादर। लवरा केर आदर।।

–पश्चिम की ओर के बादल से पानी की आशा रखना झूठे व्यक्ति से कुछ पाने की लालसा रखने जैसा है। उस बादल से पर्याप्त वर्षा नहीं होगी।

40– चलै बयार जो कोन इसान। ऊंचे खेती करैं किसान।।

–यदि ईशान कोण की ओर से हवा चल रही हो तो ऊंचे स्थान में खेती करना चाहिए क्योंकि अधिक वर्षा के कारण गहरी जमीन की खेती सड़ जाती है।

41– पुन परीबा गरज असाढ़। दिवस बहत्तर बरखा बाढ़।।

–यदि अषाढ़ मास में पूर्णमासी और उसके दूसरे दिन प्रतिपदा को मेघ गर्जन करे तो बहत्तर दिनों तक वर्षा और बाढ़ रह सकती है।

42– वायु चली जो दक्खिना। मांड न पइहा चिक्खना।।

–यदि दक्षिण दिशा की हवा सावन भादों मास में चल रही हो तो उस वर्ष मांड़ चखने तक को नहीं मिलेगा, अर्थात् धान की पैदावार नहीं होगी।

43– रात के दउड़ करै दिन छाया। कहै घाघ दिन बरखा आया।।

–रात्रि में बादल चलता रहे और दिन में सूर्य ढका रहे तो घाघ जी का कथन है कि वर्षा ऋतु आ गई।

44– माघ म गरमी जेठ म जाड़ा। कहै घाघ हम होव उजाड़ा।।

–यदि माघ मास में गर्मी और जेठ में ठंडक रहे तो घाघ का कथन है कि इस वर्ष हमारी फसल सूख जाएगी।

45– माघ मास जो परै न सीत। मंहगा अन्न मानिए मीत।।

–माघ मास में यदि ठंडी न पड़े तो समझ जाना चाहिए कि इस वर्ष अनाज मंहगा होगा।

46– कातिक सुदी एकादसी बादर बिजुली होय।

तौ असाढ़ मा भड्डरी बरखा चोखी होय।।

–यदि कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी को बादल घुमड़कर बिजली चमक रही हो तो भड्डरी ज्योतिषी का कथन है कि वर्षा अच्छी होगी।

वर्षा से संबंधित कहावतें

1– रात दिना घमछांहीं। बरखा के दिन नाहीं।।

–यदि रात्रि और दिन में बादल कभी दिखें कभी समाप्त हो जाएं तो समझ लेना चाहिए कि अब पानी नहीं बरसेगा।

2– लाल पियर जब होय अकाशा। तब नहिं आय बरखा कै आशा।।

–यदि आकाश लाल और पीले रंग का दिखने लगे तो समझ लेना चाहिए कि अब वर्षा ऋतु समाप्त होने को है।

3– लाल बरखै ताल भर। सेत बरखै खेत भर।।

–लाल रंग का बादल अधिक से अधिक एक तालाब के पानी के बराबर बरसेगा और सफद बादल एक खेत के पानी के बराबर इससे अधिक नहीं।

4– जब उठै धुंआ धार। तब भरै नदी नार।।

–नदी नाले तभी भरते हैं, जब आकाश में धुएं जैसा मटमैला बादल घुमड़ता है।

5– कलस क पानी गरम मा चिड़ी नहाबै धूर। अण्डा लइ चिंउटी चली तब बरखै भर पूर।।

–यदि घड़े का पानी कुनकुना हो जाय, चिड़िया धूल में लोटकर स्नान करें ओर चीटियां अण्डा लेकर निचले स्थान से ऊंचे स्थान की ओर भागने लगे तो समझना चाहिए कि अब तेज वर्षा होने वाली है।

6– शुक्रवार कै बादरी रही शनीचर छाय। कहै घाघ सुन घाघनी बिन बरखे ना जाय।।

–यदि शुक्रवार को बादल उठे और शनिवार को आकाश मंडल को ढक ले तो घाघ का कथन है कि हे घाघनी बगैर पानी बरसे वह नहीं जा सकता।

7– ढेला बइठ चील्ह जो बोलै। गली गली मा पानी डोलै।।

–यदि ढेला में बैठकर चील पक्षी आवाज करे तो समझना चाहिए कि तेज वर्षा होने के आसार हैं।

8– आमाझोर बहै पुरवाई। तब जाना की बरखा आई।।

–यदि पुरवाई हवा खूब तेजी से चले तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा ऋतु आने वाली है।

9– दिन के बादर रात के तारे। चली कन्त जहां जीबै बारे।।

–यदि दिन के समय आकाश में बादल रहें और रात्रि में तारे दिखाई दें तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा नहीं होगी, इसलिए पत्नी कहती है कि हे पति कहीं परदेश में निकल कर काम तलाशा जाए, जिससे बच्चों को जिलाया जा सके, क्योंकि यहां फसल सूख जाएगी।

10– पूरब धनु और पच्छिम भान। कहै घाघ बरखा नियरान।।

–यदि पूर्व की ओर इन्द्रधनुष उगा हो और पश्चिम की ओर सूर्य हो तो घाघ का कथन है कि वर्षा शीघ्र ही होने वाली है।

11– तीतुर बरनी बादरी रही गगन मा छाय। कहै घाघ सुन भड्डरी बिन बरखे न जाय।।

–यदि तीतर के रंग का बादल आकाश मण्डल को घेर ले तो घाघ का कथन है कि हे भड्डरी वर्षा अवश्य होगी।

12– उलटा गिरगिट ऊंचे चढ़ै। बरखा होय भूम जल बढ़ै।।

–यदि गिरगिट पीछे की ओर से ऊंचाई की ओर चढ़ रहा हो तो निश्चय मानिए कि वर्षा होगी और धरती में पानी ही पानी दिखेगा।

13– बादल होइ हैं बरखन हार। पलट जई दक्खिन बयार।।

–दक्षिणी हवा चल रही हो तो पानी नहीं बरसता बादल भले ही दिखाई दें। इसलिए अगर उन्हें बरसना होगा तो दक्षिणी हवा अपने आप पलट जाएगी।

14– छिन पुरबइया छिन पछुवाय। छिन मा बहै बड़ेरा आय।।

जो बादर बिन बादर आबै। कहै घाघ जल कहां समाबै।।

–यदि कभी पुरवइया कभी पछुआ और कभी बवंडर चलने लगे तथा बादल के अंदर बादल प्रवेश करे तो समझ लेना चाहिए कि घनघोर वर्षा होगी।

15– पहिल पवन पुरवइया आबै। कहै घाघ जल कहां समाबै।।

–यदि वर्षा ऋतु आते ही पुरवइया हवा चलने लगे तो इतनी वर्षा होगी कि नदी, तालाब भर जायेंगे।

16– दिन मा बादर रात तरइंया। आसौं ददउ धौं का करइंया।।

–यदि दिन के बादल और रात्रि के तारे दिखाई दें तो मौसम का मिजाज ठीक नहीं समझना चाहिए अर्थात् सूखा पड़ने की संभावना है।

17– उगे अगस्त फूल बन कांसा। अब नहिं आय बरखा कै आसा।।

–यदि अगस्त तारा उगने लगा हो और जंगल में कांस फूल गया हो तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा की संभावना नहीं है।

18– संझा धनुष बिहन्ने पानी।

–यदि सूर्य अस्त के समय इन्द्रधुनष उगा दिखाई दे तो अगले दिन सुबह अवश्य वर्षा होगी

19– नेरे भन्ना नेरे पानी। दूरी भन्ना दूरी पानी।। –यदि भन्ना नामक कीट पृथ्वी के नजदीक उड़े तो शीघ्र वर्षा होगी, अगर वह ऊंचाई पर उड़े तो पानी शीघ्र बरसने की संभावना नहीं होती।

20– कउआ बोले रात मा दिन मा बोल सियार। अइसन भाखैं भड्डरी निहचौं परै अकाल।।

–यदि दिन में गीदड़ और रात्रि में कौआ कांव–कांव करे तो भड्डरी का कथन है कि निश्चय अकाल पड़ेगा।

21– उत्तर चमके बिजुरी पूरुब बहै जो बायु। कहैं घाघ सुन घाघनी बरदा भीतर लायु।।

–यदि उत्तर की ओर बिजली चमके और हवा पुरवइया ले तो घाघ का कथन है कि घाघनी तुम अपने बैल बाहर से अंदर बाध दो, क्योंकि निश्चित ही वर्षा होगी।

22– दक्खिन बरखै सद्दौं काल।एक न बरखै बरखा काल।। –दक्षिणी हवा बाकी सभी ऋतुओं में पानी बरसाती है, पर वर्षा ऋतु में दक्षिणी हवा चलने से वर्षा नहीं हो सकती।

23– दिन मा गरमी रात म ओस।कहै घाघ बरखा सौ कोस।।

–घाघ का कथन है यदि दिन में गर्मी और रात्रि में ओस पड़े तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा अभी सौ कोस दूर है।

खेती किसानी

1– तीन सिंचाई तेरा गोड़। तब देखा उखी कै पोर।।

–गन्ने की गर्मी में यदि तीन बार सिंचाई तथा तेरह बार गुड़ाई की जाय तो पोर बड़े–बड़े तथा उपज अधिक होती है।

2– कठिया गोहूं करगी धान। जे बोबै व चतुर किसान।।

–कठिया गेहूं और करगी धान बोने वाला किसान चतुर माना जाता है, क्योंकि कठिया गेहूं सूखी कम नमी वाली धरती में भी जम जाता है और करगी धान में सूखा सहन करने की क्षमता होती है।

3– धान बोबै करगी। सुवर खाय ना समधी।।

–किसान को करगी धान बोना चाहिए, क्योंकि बाल में सेंकुर होने के कारण उसे सुअर नहीं खाते साथ ही लाल चावल होने के कारण समधी को भी नहीं खिलाई जाती।

4– पहिले खेत न डारे गोबर। अब सेतै ओर मउते थोमर।।

–पहले खेत में तुमने गोबर की खाद नहीं दी, अब पश्चाताप से क्या लाभ जब फसल कमजोर हुई।

5– पछुआ हवा ओसाबै जोई। घाघ कहै घुन कबौ न होई।।

–जो किसान पछुआ हवा चलने पर भूसे से दाने को उड़ाकर अलग करते हैं, उनके दाने में घुन नामक कीड़ा नहीं लगता।

6– गाजर सकला मूरी। तीनों बोबै दूरी।।

–गाजर, शकरकंद और मूली इन तीनों को दूर–दूर बोया जाय, तब अधिक लाभ मिलता है।

7– मसुरी बोबै डिल हर खेत। तब मुंह मांगा पइसा देत।।

–मसूर को ढेला वाले सूखे खेत में बोना चाहिए, तब उसमें अच्छी पैदावार होती है और मुंह मांगा दाम मिलता है।

8– बरखा पानी बहैं न पाबै। तब खेती का मजा जखाबै।।

–जब बरखा का पानी खेत में संचित रहेगा, तभी खेती की उपज अच्छी होगी।

9– हरिन फलांगन काकरी पैगे पैग कपास। जाय के कहा किसान से बोबै धनी उखास।।

–ककड़ी, खीरा उतनी दूर पर बोना चाहिए, जितनी हिरण की एक छलांग होती है और कपास आदमी के पग के बराबर दूर में, पर किसान को समझा दो कि वह गन्ने की फसल पास–पास लगाए।

10– जेतनै गहिरे जोतै खेत। बीज परे वतनै सुख देत।।

–खेती की जितनी गहरी जुताई की जाय बीज की बुवाई के पश्चात् वह उतना ही फसल के लिए लाभदायक होता है।

11– मेड़ बांध जोतैं मन देय। दसमन बीघा हमसे लेय।।

–जो किसान खेत में मेड़ बनाकर जुताई करता है और मन लगाकर खेती करता है तो उस किसान को मैं 10 प्रति बीघा देने को तैयार हूं अर्थात् कम से कम 10 मन अनाज अवश्य होगा।

12– दिन के सुवा रात के बांडा। ताकत ताकत चुर गें हाड़ा।।

–दिन में तोते बाल उतार लेते हैं और रात में सुअर फसल को खा जाते हैं, खेत ताकते ताकते देह पक गई है।

13– गोहूं बाहे धान बिदाहे।

–गेहूं उस खेत में खूब पैदावार देता है, जिसमें कई बार जुताई की जाय पर धान के लिए अधिक जुताई लाभप्रद नहीं होती, उसके लिए एक अड़ी ओर एक खड़ी दो जुताई ही पर्याप्त है।

14– तरे ओद ऊपर बदराई। तब गोहूं मां गेरुआ धाई।।

–जब नीचे जमीन गीली हो और ऊपर बादल हों, तब गेहूं को फसल में गेरुआ रोग लगता है।

15– गोहूं जौ जब पछुआ पाबै। गाह किसान ओही ओसवावै।।

–बैसाख में जब पछुआ हवा चले, तभी किसान को गेहूं की गहाई कर भूसे से दाने को अलग करना चाहिए, क्योंकि उससे दाने में घुन नामक कीड़ा नहीं लगता।

16– कच्चा खेत न जोते कोई। नहि अंकुरौ भर खेत न होई।।

–जब तक खेत जोतने लायक न हो जाय, तब तक गीले खेत को नहीं जोतना चाहिए नहीं तो उसमें बीज में अंकुरण तक नहीं होता।

17– जो कपास का खेत न गोड़ी। ओखे हाथ न आबै कौड़ी।।

–जो किसान कपास की फसल बोकर फलस की निराइ गुड़ाई नहीं करेगा, उसे एक कौड़ी भी लाभ नहीं मिलेगा।

18– गोहूं बोबै काट कपास। रहै न डीला जमें न घास।।

–गेहूं कपास की फसल काटकर तुरन्त बोया जा सकता है पर शर्त यह है कि खेत में न तो ढेले हो और न ही घास हो।

19– अकमन कोदो नीम जबा। बेर के फूले होय चना।।

–अगर मदार खूब फूला हो तो उस वर्ष कोदों की फसल अच्छी होती है, इसी प्रकार जिस वर्ष नीम खूब फूलती है, उस वर्ष जौ और जिस वर्ष बेर फूलती है, उस वर्ष चना अच्छा होता है।

20– ऊख उगाबै तब सब कोय। अगर बीच म जेठ न होय।।

–गन्ने की खेती सभी कर लेते पर समस्या तो यह है कि बीच में तेज गर्मी और पानी की कमी वाला जेठ माह पड़ता है।

21– तब गोहूं करै बोवाई। जब बर्र बरोठे आई।।

–गेहूं की बोनी तब करनी चाहिए, जब ठंड के कारण बर्र अपने छत्ते छोड़कर घर के अंदर आने लगे।

22– नहीं ईख सम खेती, हाथी सम व्यापार।

–न तो गन्ने की तरह फायदेमंद कोई खेती है और न ही हाथी बेंचने जैसा अन्य कोई व्यापार।

23– मेंदनि मेढ़क भइस किसान। मोर पपीहा घोड़ा धान।।

बाढ़ी मच्छ लता लपटानी। दसौं खुसी जब बरखै जानी।।

–जब अच्छी वर्षा होती है तो धरती, मेढ़क, भैंस, किसान तथा मोर, पपीहा, घोड़ा, धान, मछली और लता ये दसों बहुत प्रसन्न होते हैं।

24– कोदौ कहै भले में छोट। छोट बड़े का भरतेंव पेट।।

–कोदों का कथन है कि मैं भले ही देखनें में छोटा दिखता हूं, पर अकाल के समय छोटे–बड़े सभी लोगों के भोजन के काम आता हूं, क्योंकि मुझे अस्सी वर्ष तक रखा जा सकता है।

25– ऊख सरउती डिहुला धान। इनहीं छाड़ न बोबै आन।।

–किसान को चाहिए कि वह सरौती किस्म की देशी गन्ने की किस्म और डिहुला नामक जल्दी पकने वाली धान के अलावा और कोई किस्म न बोए, क्योंकि इनमें सूखा सहने की क्षमता होती है।

26– बोबै अरसी कब? माटी सरसी तब।।

–अलसी खेत में तभी बोनी चाहिए, जब उसमे पर्याप्त नमी हो।

27– धन तिल धन तिल बिउर कपास। चाइ चुइया कोदो धान।।

–तिल को घना कपास को दूर–दूर और कोदों, धान को बार–बार लौटकर खूब घना बोना चाहिए।

28– सामां कुटकी लोक जियामें। तीन पाख मा पक के आमें।।

–सांवा कुटकी सबको जीवित रखने वाले अन्न हैं, क्योंकि ये तीन पखवाड़े में ही पककर आ जाते हैं।

29– बोबत बनै त बोबै। नहीं बरा बनाय के खाबै।।

–उड़द की फसल खेत में तभी बोनी चाहिए, जब बुवाई करनी आती हो, क्योंकि घनी बुवाई से फसल बिल्कुल नहीं होती, इससे तो अच्छा है कि बड़े बनाकर खा लिया जाय।

30– चना सींच मा जबहिन आबै। ओके पहिले तुरत खोंटाबै।।

–चना जैसे ही सिंचाई करने लायक हो, उसके पहले उसके तने की चोटाई करा देनी चाहिए।

31– जब शैल खटा खट बाजै। तब चना खूब मन गाजै।।

–जब खेत जोतते समय रूखा हो जाय और जुए के शैलों से जुताई करते समय खट–खट की आवाज निकले तब समझना चाहिए कि चने की पैदावार अच्छी होगी।

32– गोहूं जबा क पांच पसेर। मटर क बीघा तीसक सेर।।

–गेहूं और जौ एक बीघा में पांच पसेरी और मटर को तीस सेर बोना चाहिए।

33– बोबै चना पसेरी तीन। जोन्हरी तीन सेर कई दीन।।

–चने को बीघा पीछे 15 सेर और ज्वार को तीन सेर बोना चाहिए।

34– दुइ अरहर और मोथी मास। डेढ़ सेर बोबे बीज कपास।।

–अरहर, उड़द, मूंग तथा मसूर तीन सेर तथा कपास प्रति बीघा डेढ़ सेर बोना चाहिए।

35– पांच पसेरी बिगहा धान। चार पसेरी जड़हन जान।।

–साधारण धान हो तो उसे एक बीघा में पांच पसेरी और अगर देर से पकने वाली जड़हन धान हो तो चार पसेरी प्रति बीघा बोना चाहिए।

36– सवा सेर बीघा सांमा जान। तिल सरसों अजुरी भर मान।।

–सांवा एक बीघा में सवा सेर और तिल सरसों एक अंजुली बोना चाहिए।

37– घनी अमारी सनई बोय। तब सुतरी कै आसा होय।।

–अमारी और सन के बीज को खूब घना बोना चाहिए, तभी अच्छी सुतली मिलने की सम्भावना होती है।

38– पोर काट के तुरत दबावै। तबहिन ऊख बहुत सुख पाबै।।

–गन्ने की गांठ को काटकर तुरंत गीली मिट्टी में दबा देना चाहिए, तभी उसमें अच्छा अंकुरण होता है।

39– पहिले ककरी पाछू धान। जे अस बोबै व चतुर किसान।।

–पानी गिरने पर सबसे पहले खीरा ककरी का बीज बोना चाहिए और उसके बाद धान जो कोई इस क्रम से बोता हे, वही चतुर किसान है।

40– गाजर गंत्री मूरी। तीनौ बोबै दूरी।।

–गाजर मूली और शकरकन्द को फासले से बोना चाहिए नहीं तो पैदावार नहीं होती।

45– सांमा अन्न कहाबै बड़का। सामन पाक जियाबै लड़का।।

–समां सभी अनाजों से बड़ा माना जाता है, क्योंकि वह सावन में ही पककर किसान के परिवार के खाने के लिए हो जाता है।

41– बारा बाह बगोरे गोहूं।

–यदि अषाढ़ से कार्तिक के बीच 12 बार आड़ी और खड़ी जुताई की जाय तो खरान और पड़त जमीन में भी अच्छी गेहूं की पैदावार होती ह, क्योंकि खेत में पर्याप्त नमी संचित हो जाती है।

42– गहिर न जोतै बोवे धान। तउनै कुठिला भरी किसान।।

–जो किसान खेत में धान बोना चाहे, उसे गहरी जुताई नहीं करनी चाहिए तभी धान की पैदावार होगी, क्योंकि गहरी जुताई से धान की पैदावार ठीक से नहीं होती।

43– गोहूं बाहे चना खोंटाए।

–गेहूं की पैदावार जहां कई बार की जुताई के बाद बोने से अच्छी होती है, वहीं चना के जमने से एक माह के अंदर खोटाई कराई जाय, तब अच्छी उपज मिलती है।

44– साठी होबै साठ दिन। जब पानी पाबै रात दिन।।

–जल्दी पकने वाली साठी धान साठ दिन में पक जाएगी, पर उसे रात और दिन के बीच एक बार पानी अवश्य चाहिए।

45– तीन पाख दुइ पानी। पकि आई कुटुक रानी।।

–यदि डेढ़ माह के बीच में दो बार भी पानी गिर जाय, तब भी कुटकी का पौधा तैयार हो जाता है और उसके दाने पक जाते हैं।

46– कुटको खेती म्यॅाव धन।

–कुटकी की खेती और बकरी पालन दोनों धंधे टिकाऊ नहीं होते।

47– मइदा गोहूं दिलहर चना।

–गेहूं हमेशा ढेला रहित खेत में बोना चाहिए पर चने की अच्छी पैदावार सूखे और ढेला वाले खेत में ही होती है।

48– पग पग माही बाजरा दादुर कुदनी ज्वार।

–बाजरा का बीज आदमी के एक पग के बराबर दूरी में और ज्वार इतनी दूर पर बोना चाहिए जितना मेढ़क एक बार में छलांग लगा लेता है।

49– धान गिरै बड़भागी का। गोहूं गिरै अभागी का।।

–धान की फसल तब गिरती है, जब उसके पौधों की बड़ी–बड़ी बाली में दाने आ जाते हैं, इसलिए फसल का कोई नुकसान नहीं होता पर गेहूं का पौधा बालें आने के पहले ही बढ़कर गिर जाता है, इसलिए धान गिरने वाला किसान किस्मत वाला और गेहूं गिरने वाला किसान बदकिस्मत माना जाता है।

50– जो मोहि देइ टोर मरोर। तब मैं होइहौं कुठिला फोर।।

–कोदों का कथन है कि किसान निदाई के समय मेरे पौधे को जब तोड़ मरोड़ और पैरों से कुचल देगा, तभी मेरी अच्छी पैदावार होगी।

51– आए फूल न बरखा पानी। धान मरा अधबीच जवानी।।

–यदि धान में फूल आते समय पानी नहीं बरसता तो धान की फसल आधी जवानी में ही नष्ट हो जाती है।

52– गोहूं गेरुआ गंधी धान। दोऊ कइन से मेरा किसान।।

–यदि गेहूं में गेरुआ रोग और धान में गंधी मक्खी लग जाती है तो किसान के ऊपर दोहरी मार पड़ जाती है, गेरुआ से जहां गेहूं का दाना पतला पड़ जाता है, वहीं गंधी कीड़ा दूध की अवस्था में दाने को खा जाता है।

53– चामें क चाही कठिया। गोहूं जेमा आधा गुड़ होय।।

–चबैना के लिए कठिया गेहूं बहुत स्वादिष्ट होता है, पर यदि साथ में गुड़ भी हो तो क्या कहना।

54– पांचै आम पचीसै महुआ। असी बरिस मा अमली कटहुआ।।

–आम पांच वर्ष में और महुआ 25 वर्ष में फल देने लगता है, पर इमली का पेड़ लगाने के अस्सी वर्ष में खाने के काम आता है।

55– जाय पेड़ जब बकुला बइठै।

–यदि किसी पेड़ में बगुलों का झुंड बैठना शुरू कर दे तो उसके बीट करने से पेड़ शीघ्र ही सूख जाता है।

56– जाय खेत जब जामी गोभी।

–यदि खेत में गोभी नामक खरपतवार जगने लगे तो खेत नष्ट समझना चाहिए, क्योंकि उससे फसल नहीं होती।

पशुओं की पहचान

बैल बेसाहै कजरा। भले दाम होय अगरा।।

अर्थः– आज तो प्रायः हर एक गांव में ट्रैक्टर हैं, पर 40–50 वर्ष पहले जब बगैर बेलों के खेती की कल्पना ही नहीं की जा सकती थी, इसलिए किसान के अनुभव व ज्ञान भी सिंचित था कि किस रंग का बैल तेज, किस रंग का मद्दा या गरियार होता है। उसी का ये निर्देश देती कहावतें–

1– बैल बेसाहै बच्छा। दिन–दिन होई अच्छा।।

–हमेशा कम अवस्था का बैल खरीदना चाहिए, क्योंकि उसके दिन प्रतिदिन बड़ा और हृष्टपुष्ट होने की संभावना रहती है।

2– बांधा बछवा जाय मठाय। बइठ जवान जाये तोंदिआय।।

–जिस प्रकार फौजी जवान यदि व्यायाम न करे तो उसकी तोंद निकल आती है, उसी प्रकार यदि गाय का बछड़ा जंगल चरने नहीं जाता और घर में ही बंधा रहता है तो उसकी चाल सुस्त हो जाती है।

3– कारी कछोटी झांए कान। इनहीं छांड़ न लीजै आन।।

–जिस बैल की पूंछ की जड़ के पास काला रंग हो और कान छोटे लुटरे हों, उसे बैल को छोड़कर दूसरा नहीं लेना चाहिए।

4– चौड़ा माथ बैगन खुरा। अइसन बैल न निकरै बुरा।।

–जिस बैल का मथ्था चौड़ा हो और खुर का रंग बैगनी हो, वह तेज गति से चलने वाला होता है। कभी बुरा नहीं निकलता।

5– बड़ सिंघा का लिहा न मोल। कुंइया डारा रुपिया खोल।।

–बड़े सींग वाले बैल को कभी नहीं खरीदना चाहिए, इससे अच्छा है कि रुपयों की थैली कुएं में खोल दी जाय।

6– उजर बरौनी मुंह महुला होय। जोतत देई हरवाहा रोय।।

–यदि आंख की बरोनी के बाल सफेद और बैल का मुंह पीला हो तो ऐसा बैल नहीं खरीदना चाहिए, क्योंकि वह बैल धीमी चाल चलने वाला होगा और हलवाहा परेशान हो जाएगा।

7– छोटे मुंह का अइंठा कान। निकहे बरदा कै पहिचान।।

–यदि बैल का मुंह छोटा और कान मुड़े हों तो वह बैल हल में चाल चलने वाला होगा।

8– छोटे कान और छोटिन पूछ। अइसन बैल लेय बिन पूछ।।

–यदि बैल के कान छोटे और पूछ भी छोटी हो तो ऐसे बैल को बगैर किसी से कुछ कहे सुने सीधे खरीद लेना चाहिए।

9– नटिया बरदा छोटिया हारी। दूब कहै मोर का बिगारी।।

–यदि बैल नौसिखिया नाटा और हाल की नास छोटी हो तो दूब घास का कथन है कि मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा, मैं कल फिर हरी हो जाऊंगी।

10– पूछ झलरी छोटे कान। अइसन बैल मेहनती जान।।

–यदि बैल की पूछ अधिक बालों वाली और कान छोटे हैं तो ऐसा बैल परिश्रमी होता है।

11– बूढ़ा बैल बेसाहै झीना कापड़ लेय। अपनौ करै अनरपन दइउ का दोहपन देय।।

–जो किसान झीना कपड़ा और बूढ़ा बैल खरीदता है, वह खुद तो अनाड़ीपन करता है पर बैल के मर जाने और कपड़े के शीघ्र फट जाने के कारण किस्मत को दोषी ठहराता है।

12– जब देखा पिय सम्पत थोरी। लइल्या गाय बिआउर घोड़ी।।

–एक स्त्री अपने पति से कहती है कि अगर घर की सम्पत्ति घट रही हो तो सारे धंधे छोड़कर दूध देती गाय और हर वर्ष बचे देने वाली घोड़ी खरीद लेना चाहिए।

13– दुइ हर खेति एक हर बारी। एक बैल से भली कुदारी।।

–साग सब्जी उगाने वाले के लिए एक हल, खेती करने के लिए दो हल होना जरूरी है, पर जिसके एक बैल हो, वह किसी के साझे में हल चलाने के बजाय कुदाल से खेत की गुड़ाई कर ले तो वह अधिक अच्छा है।

14– सींग मुड़े माथा ऊंचा होय मुंहे का गोल। रोम नरम चंचल करन तेज बैल अनमोल।।

–जिस बैल के सींग छोटे मुड़े हुए माथा चौड़ा उठा हुआ तथा रोम पतले और कान चंचल हों, वह बैल अनमोल समझा जाता है, क्योंकि हल में तेज गति से चलने वाला होता है।

15– जेखर बैल न बधिया। खेत क दइ देय अधिया।।

–जिस किसान के बैल बधिया नहीं कराए गए और उन्हें हल में जोता जा रहा है, उस किसान को चाहिए कि अपने खेत दूसरे को बंटाई में दे दे, क्योंकि उन बैलों से ठीक से खेती नहीं हो पाएगी।

16– बैल चराबै फेरी देय। न पूजै ता मोसे लेय।।

–जो किसान बैलों की खूब सेवा करता है और शाम सुबह अपने खेत को देखने जाता है तो अगर इतना करने पर भी उसे पेट भर भोजन नहीं मिलता तो वह मुझसे ले जाय।

17– पातर पिडुली मोटी रान। पूछ होय भुइमा तिर्रान।।

अइसन जोड़ी जेखे होय। ओही नीक कहै सब कोय।।

–जिन बैलों की पूछ घने बालों से भूमि को छूने वाली पतली पिंडली और जंघा की रान मोटी हो, इस प्रकार के बैलों की जोड़ी जिस किसान को हो, उसे सब कोई आदर से देखते हैं।

18– धोंची बैल नदी ओहिपार। थइली खोल देय एहिपार।।

–यदि बैल के सींग आगे की ओर मुड़े हों और वह बैल नदी के उस पार से दिखाई दे तो उसे खरीदने के लिए थैली खोल लेना चाहिए, क्योंकि यह बैल हल में तेज गति से चलने वाला होता है।

19– बिन बरदन के खेती। बिन पूंजी बइपार।।

–न तो बगैर बैलों के खेती की जा सकती है और न ही बगैर पूंजी के कोई व्यवसाय।

20– भूरी भइंस गरे दुर कंठा। कारी के दूध कि नांई मट्ठा।।

–यदि भैंस भूरे रंग की हो और गले में सफेद रोये के कंठ में धारी हों तो उस भैंस का मट्ठा ही अन्य भैसों के दूध जैसा स्वादिष्ट होता है।

कुछ अन्य कहावतें

1– धन के पन्द्रा मकर पचीस। जाड़ जानिए दिन चालीस।।

–सूर्य धनु राशि में 15 दिन और मकर राशि में 25 दिन तक रहता है, यही ठंडी का मुख्य समय है।

2– एक मा गिल्ली दुइ मा बिल्ली, तीन मा पिल्ली छै मा छेरी।

नमैं नार और दसैं कलोरी, गेरहें भइंस बरहे घोड़ी।

–गिलहरी एक माह में, बिल्ली दो माह में, कुतिया तीन माह में और बकरी गर्भाधान के पश्चात् छः माह में बच्चे जनती है। इसी प्रकार नौ माह पश्चात् स्त्री, 10 माह में गाय, ग्यारह माह में भैंस और बारह माह में घोड़ी बच्चा जनती हैं।

3– नहिं अति बरखा नहिं अति धूप। नहि अति बक्ता नहि अति चूप।।

–न तो अधिक पानी बरसना चाहिए और न ही अधिक धूप होनी चाहिए, इसी प्रकार मनुष्य न तो अधिक बोलने वाला अच्छा होता है और न ही चुप रहने वाला।

4– कुछ दिन दार न कुछ दिन बरी। अइसै तइसै सामन टरी।।

भादो म तरोई फरी, चना कै भाजी अई कुमार।

देई माघ अमुलक टार।। फागुन बगरी चर्रा मर्रा। खुल जई काम बूत का ढर्रा।।

–दाल और बड़ी खाते जैसे तैसे किसी प्रकार सावन मास बीत जाएगा, भादों में तरोई फलने लगेगी, फिर चने की भाजी आयेगी तो माघ तक तरकारी की समस्या हल हो जायेगी फिर फागुन में जौ चने मटर की फसल आ जाएगी और मेहनत मजदूरी के काम खुल जायेंगे।

दवा दारू और इलाज पर आधारित

1– माटी बाले नये पात्र मा त्रिफला रात फुलाय।

उठत सकारे धोयें आंख रोग मिट जाय।।

–मिट्टी के नव पात्र में हर्र बहेरा आंवले के फल को डाल दिया जाय और सुबह उठकर उसी जल से यदि आंखों को साफ किया जाय तो नेत्र संबंधी सभी रोगों में लाभप्रद है।

2– कारी मिरिच पिसाय के घिउ चीनी संग खाय।

नयन रोग सब दूर होइ गीध दृष्टि होइ जाय।।

–यदि काली मिर्च के चूर्ण को घी और शक्कर के साथ मिलाकर खाया जाय तो सारे नेत्र विकार दूर होकर मनुष्य की दृष्टि गीध की तरह तीव्र हो जाती है।

3– लहसुन दूध मदार का दूनौ साथ मिलाय।

बीछी काटे मा धरै बिख तुरंत उड़ जाय।।

–यदि लहसुन को बांटकर मदार के दूध के साथ मिला दिया जाए और उसे बिच्छू के काटे हुए स्थान में बांध दिया जाय तो सारा विष तुरंत नष्ट हो जाता है।

4– हर्र बहेला आमला घिउ शक्कर संग खाय। हाथी बगल दबाय के पांच कदम उड़ जाय।।

–जो व्यक्ति हर्र बहेरा और आंवला के चूर्ण को घी और शक्कर के साथ मिलाकर सेवन करता ह, उसके शरीर में इतनी ताकत आती है कि वह हाथी को बगल में दबाकर पांच कदम बराबर छलांग लगा सकता है।

5– रहै निरोगी जो कम खाय। काम न बिगड़ै जो गम खाय।।

–जो कम भोजन करता है, वह हमेशा निरोगी होता है, इसी प्रकार जो किसी के कुछ कह देने से जल्दी क्रोधित नहीं होता, उसका कोई काम नहीं बिगड़ता।

6– तात खाय औ भीतर सोबै। ओकर राग मनै मन रोबै।।

–जो लोग ताजा भोजन करते हैं और रात्रि में घर के अन्दर सोते हैं, उनके शरीर में कोई रोग नहीं होता।

7– जेहीं नींद न आबै, वा ना रहै निरास। भांग भुंज तरबा मलै निंदिया आवै पास।।

–जिसे रात्रि में नींद न आती हो वे भांग को पैर के तलवे में मलें तो नींद आ जाती है।

लकड़ियों के गुण और उपयोग पर आधारित

1– हर सांदन धबई कै नास। जाय न हरबी बढ़ई पास।।

–यदि सांदन लकड़ी का हल बनवाकर उसमें धवई की नास लगवाई जाय तो हल मजबूत बनता है और बार–बार बढ़ई के यहां जाकर सुधरवाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

2– जो हर तेंदू खैर बनाबै। उच बिहान बढ़ई घर धाबै।।

–जो किसान तेंदू अथवा खैर की लकड़ी का हल बनाते हैं, उन्हें बार–बार बढ़ई के यहां नई नास लगवाने जाना पड़ता है, क्योंकि हल की लकड़ी कमजोर होती है।

3– सेझा होय कि कारी बिरबा। काट बनाबै पाटी सिरबा।।

पेरुआ खटिया लगे कटाई। साठ साल ना दुमें दुमाई।।

–यदि अच्छी मजबूत खाट बनवानी हो तो उसकी पाटी और सिरबा सेझा अथवा कारी नामक लकड़ी का बनवाना चाहिए और चारों पाए कटाई की लकड़ी के बनाए जाए। अगर इन मजबूत समझी जानी वाली लकड़ी की खाट बनी तो वह साठ वर्ष तक खराब नहीं होगी।

4— सेझा बरसज बेल कटाई। कइमा कोसम काट मंगाई।।

सामन भादौं चइमस बाबै। तब लकड़ी घर मा लगबाबै।।

—सेझा, बरसज, बेल कटाई तथा कैमा, कोसम आदि लकड़ी इमारती मानी जाती है, पर छप्पर में लगवाने के लिए अगर कटाया जाय तो सावन और भादों मास में पहले इन्हें खुले मैदान में रख दिया जाय, ताकि बरसात का पानी इनके ऊपर पड़े अगर इस तरह की लकड़ी घर के छप्पर में लगी तो उसमें घुन कीड़ा नहीं लगता।

5— गोला सेबर औ किरबार। बांसा धवा बहेरा क्यार।।

जे छान्हीं छप्पर लगवाबै। भादौ भरे गोहार मचाबै।।

—जो व्यक्ति अपने छप्पर में सेंवर, किरवार, बांसा, धवा और बहेरा की लकड़ी के गोला बल्ली लगवाता है, उसे तब गुहार लगानी पड़ती है जब भादों की अंधेरी रात मं जोर से वर्षा हो रही होती है। क्योंकि ये सभी लकड़ी कमजोरी होती हैं और टूट जाती है।

6— सगमन सरई दहिमन राना। असी बरिस ना होय पुराना।।

—सागौन, साल, दहिमन यह ऐसी लकड़ी हैं जो अस्सी वर्ष बाद भी पुरानी नहीं होती। इसी तरह अनाज में कोदों अस्सी वर्ष तक खराब नहीं होता।

7— जलम जुगाध खजूर का मानी। एक सरत की पैर न पानी।।

—यदि मकान में खजूर के गोला बल्ली या मयार लगाई जाय तो वह सारी जिन्दगी चलने वाली होती है। शर्त यह है कि उसमें पानी न पड़े क्योंकि पानी पड़ने से वह शीघ्र ही सड़कर टूट जाती है।

8— बइर मकुइया चार कटाई। टोर करउंदा तेंदू खाई।।

रंधै भेड़ार बरउता भाजी। ई गरीब की आंहीं खाजी।।

—जंगल में बेर, मकोय, अचार, कटाई तथा करौंदा और तेंदू का फल तोड़कर खाते हैं एवं तरकारी भेड़ार नामक फल की और भाजी बरोता नामक बेलन के पत्ते की बनती है। यही सब वस्तुएं गरीबों के खाद्य पदार्थ हैं।

9— कोरबा सगले बांस पकेठ। औ कटावायं उतरत जेठ।।

गोला बल्ली ठोस लगाये। तीस साल नहि दुमें दुमायें।।

—जिस घर में गोला बल्ली मजबूत लकड़ी के लगे हों और सहतीर पके बांस की उस लकड़ी के लगे हों जो जेठ माह के अंतिम पखवाड़े में काटी गई है। इस तरह बनाया गया मकान बहुत मजबूत होता है और उसके छप्पर को 30 वर्ष तक नया नहीं बनाना पड़ता।

10— धनकट धवई कारी। निकहा बेट कुल्हारी।।

—धनकट, धवा और कारी नामक लकड़ी का कुल्हारी का बेट अच्छा होता है।

11— महुआ बड़ा मिठहुआ भाई। लाटा डोभरी खा बनाई।।

भुरकुन्ना खुरमा डोभराउरा। खा रसखीर मौहारी भउरा।।

येखे फर का तेल निकारी। यामा न घालै कोऊ कुल्हारी।।

–महुआ कितना मीठा पदार्थ है कि इससे लाटा, डोभरी भुरकुन्ना, खुरमा रसखीर, मौहारी आदि तरह–तरह के व्यंजनों को बनाकर खाया जाता है, इसके फल से तेल भी निकलता है। इसलिए ऐसे उपकारी पेड़ पर कोई कुल्हाड़ी न चलाए।

12– बेट खैर का होय धोखारी। टूट के दूरी परै कुल्हारी।।

–जो कोई अपनी कुल्हाड़ी में खैर का बेंट डालते हैं वे हमेशा धोखा खाते हैं, क्योंकि बेंट टूट जाता है और कुल्हाड़ी छिटक कर दूर गिरती है।

13– जउने वन मा अइल मकुइया। होन ना भूल चराबै गइया।।

–जिस जंगल में काफी घनी अइल और मकोय की झाड़ियां हों वहां चराने के लिए अपनी गाय आदि नहीं ले जाना चाहिए, क्योंकि यह कंटीली झाड़ियां मनुष्य के कपड़ों में उलझ जाती हैं और जानवरों का शरीर लहूलुहान हो जाता है।

14– धवई सिरसा बेल बहेरा। इनखे लकड़ी लगै मकोरा।।

–धवई, सिरसा, बेल और बहेरा यह लकड़ी ऐसी हैं, जिनमें अक्सर छेद करने वाला कीड़ा लग जाता है। इसलिए इन्हें मकान के छप्पर में नहीं लगाना चाहिए।

15– कच्चा बांस लगाबै कोरा। भादौं भरे उंचाबै डेरा।।

–जो व्यक्ति अपने छप्पर में प्रथम वर्ष कच्चे बांस लगवाता है, उसकी सारी लकड़ी घुन जाती है और खपरे कवेलू नीचे गिर आने के कारण सावन भादों में बोरिया बिस्तर बांधकर भागना पड़ता है।

देहाती बघेली लोकोक्तियां

1– अघान रहै बकुली न तीत लागै मछरी।

–जब बगुले का पेट भरा रहता है तो उसे आसपास तैर रहीं मछलियां भी अच्छी नहीं लगतीं। (जरूरत न रहने पर वस्तु की कीमत कम हो जाती है)

2– अंजुरी भर तिली, वंशीपुर का हार।

–एक अंजली तिल में बंशीपुर का सारा मैदान नहीं बोया जा सकता। (थोड़े साधनों से बड़ा काम नहीं हो सकता)

3– जोड़ी कै जोड़ी मांठा कै कोदई।

–हर चीज की इसी तरह जोड़ी मिल जाती है जैसे कोदों और मट्ठे की जोड़ी होती है। (गरीब का जोड़ीदार गरीब)

4– झुरही पोखरी केर मरुऐ ढेख होई।

–यदि पोखरी सूखी होगी तो उसमें चरने वाला सरिस भी दुबला पतला ही होगा। (जैसा भोजन वैसी तंदुरस्ती)

5— सीधे मीधे क उगर तयार।

—छोटे मोटे पशुओं को खाने के लिए लकड़बग्घा भी तैयार रहता है।

(गरीब कहीं सुरक्षित नहीं)

6— टें टें करब। —तोते की तरह शोर मचाना। (व्यर्थ बकवास करना)

7— केंचुरियान अस बागब।

—उस तरह उपक्रम करना जैसे केंचुली निकालने के पहले सर्प कमजोर हो जाता है। (आलसीपना)

8— केमाच अस लगाए बागब।

—जंगली किमाच के रूए के शरीर में लगने से जिस तरह लोग परेशान होते हैं उसी तरह परेशान फिरना। (परेशान)

9— खॉव चबांव धउरब।

—बाघ की तरह क्रोधित होकर दौड़ना। (क्रुद्ध होना)

10— चिचिरा कस ओगार।

—लटजीर के पौधे की तरह उदार कि जो भी पास से निकले उसी से लिपट जाय। (उदारवादी)

11— जोंक कस चिपकब।

—जोंक की तरह चिपक जाना। (एक बार पीछे पड़ तो छोड़ना नहीं)

12— ढेख कस नेटई देखाब।

—दूर से ही सारिस की तरह लंबी गर्दन दिखना। (ख्याति प्राप्त)

13— दुवारे केर बेर बनब।

—द्वार में लगे बेर का पेड़ बनना जैसे उसके कांटे हर आने जाने वाले के पैरों में लगते हैं। (दुष्ट प्रकृति)

14— भदउहा गूलर अस डेडिआब।

—बरसात के मेंढ़क की तरह शोर करना। (व्यर्थ बकवास)

15— मगर अस लोटब।

—मगरमच्छ की तरह कीचड़ में पड़े रहना। (सुस्त लापरवाह हो जाना)

16— मेंहदी कस रंग चढ़ब।

—मेंहदी की तरह रंग चढ़ना। (प्रभावित हो जाना)

17— खजूर अस बाढ़ जाब।

—खजूर की तरह बढ़ जाना। (स्वार्थी होना)

18— अमली अस मन खट्टा होइ जाब।

—इमली की तरह मन खट्टा हो जाना। (बात बिगड़ जाना)

19– नीम अस कस होइ जाब।

–नीम की तरह कड़वा हो जाना। (कड़वाहट आ जाना)

20– मिरचा कस झार लागब।

–शरीर में मिर्च की तरह लगना। (तिलमिला जाना)

21– व गुड़ कहां जेही चिटबा खाय जांय।

–मैं वह गुड़ ही नहीं जिसे चीटें खा जाएं। (इतना कमजोर नहीं हूं)

22– बिलारी कस छकन्दा मारब।

–बिल्ली की तरह छलांग लगाना। (अपने काम में दक्ष होना)

23– बोकरी कस मेंमिआब।

–बकरी की तरह मिमिआना। (गिड़गिड़ा कर बातें करना)

24– मर भुखही बाघिन अस परब।

–भूखी बाघिन की तरह टूट पड़ना। (आतुरता दिखाना)

25– हउहाय के बाघ अस परब।

–बाघ की तरह हौं की आवाज करके टूट पड़ना। (आक्रमण कर देना)

26– बाघिन अस गइल घाट म लागब।

–बच्चे वाली बाघिन की तरह रास्ता छेंक कर बैठना। (घात में बैठना)

27– बिलारी कस छउना लुकावत बागब।

–बिल्ली के बच्चों की तरह छिपाते फिरना। (सावधानी रखना)

28– बिरबा कस छाया देब।

–पेंड़ों की तरह छाया देना। (परोपकारी होना)

29– तेंदुआ कस छपरिआय जाब।

–तेंदुए की तरह दुबक जाना। (चालाक होना)

30– कोलहा कस बरदा फिरब।

–कोल्हू के बैल की तरह घूमना। (एक ही बात को दोहराते रहना)

31– छिगार कस कुलाचें मरब।

–हिरण की तरह छलांग लगाना। (फुर्तीला होना)

32– रीछ अस होकलब।

–भालू की तरह टूट पड़ना। (सीधे आक्रमण कर देना)

33– रेडी कस चिलकब।

–अरंड के बीज की तरह चमकदार होना। (प्रभावशाली होना)

34– जऊंन पेड़ फराथै ओहिन के डण्डा परा थै।

–जो पेड़ फलता है, उसी के ऊपर डंडे चलते हैं। (नेक व्यक्ति को ही सारी मुसीबतें उठानी पड़ती हैं)

35– जऊन फराथै वहै पेड़ नीचे आवथै।

–जो पेड़ फलता है, उसी की तो डालियां झुकती हैं। (अच्छे मनुष्य ही विनम्रशील होते हैं)

36– सुखान आमा म टुइंयां नहि बइठै।

–सूखे आम के पेड़ में तोते नहीं बैठते। (जहां गुण नहीं होते, वहां कोई नहीं जाता)

37– पके म नीमो मिठाय जाथी।

–पकने के पश्चात् नीम के फल में भी मीठापन आ जाता है। (सयानी अवस्था में सभी की बुद्धि परिपक्व हो जाती है)

I.C.H. के तहत
प्रान्तीय जागरुकता संस्थान,सतना (म0प्र0)
द्वारा संकलित

भाग–4

हमारे लोकगीत

(लोकगीत क्रमांक 1 से 31 तक)

भूमिका – लोकगीतों के संदर्भ में

मनुश्य के जन्म से लेकर मृत्यु के पूर्व तक के हमारे विभिन्न सोलह संस्कार एवं मांगलिक अवसरो (जन्म, बधाई, मुण्डन, कर्णवेध,ब्रतवंध/जनेउ विवाह ,विदाई व अनुश्ठान आदि) शोहर, दादर, बधाई, विदाई , बेलनहाई , गलहाई, परक्षन और पुजाई तथा बनरा, अंजुरी ,विवाह, सोहाग, गारी, के पारंपरिक लोकगीत एवं ऋतु, पर्व, त्योहार व मौसमी लोकगीत देवी गीत, होली गीत,सावन गीत कजरी, हिन्दुली तथा विरह गीत व कामगारों के लोकगीतो अतिरिक्त विभिन्न जातीय लोकगीत जैसे अहीरो का बिरहा लोकगीत , आदिवासियों का कोलदहंका लोकगीत जिनमे राग,सुर, लय व ताल के साथ जीवन के गहरे अर्थ भी समाहित होते हैं। इन लोकगीतों के रूप मे भारत की इन्ही अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के बदौलत सामाजिक प्रथाएं व परंपरांए आज भी टिकी हैं।

आज आधुनिकता की इस आंधी में हमारे परम्परागत ज्ञान का खजाना लुप्त न हो जाए। यह चिंता बहुत समसामायिक और जरूरी है। उनके संरक्षण और संवर्द्धन के लिए किए जाने वाले प्रयासों के लिए लोक जीवन में व्याप्त ज्ञान से समाज को बहुत उपयोगी सीख मिल सकती है। संगीत नाटक अकादमी दिल्ली के सौजन्य से बघेली अंचल के लोक जीवन में व्याप्त जीवन उपयोगी

कहावतों, मुहावरों और पहेलियों व लोकगीतो के साहित्य का बहुमूल्य ज्ञान संग्रह, निश्चित ही भावी समाज को लाभ देगा।

आज दे"ा व समाज के सामने दोहरी जिम्मेदारी है जहां एक ओर उन्हे अपने पूर्वजां की गौरव"ाली सांस्कृतिक विरासतों को सहेजना है वही उसमें श्रद्धा, प्राण भाक्ति तथा अनुभव को मिलाकर संस्कृति से युक्त विकास को भावी पीढ़ी के हांथों सौंपना है।

1– दादरा गीत

गोरी चली नैहर का , बलम सुसकी दै दै रोवै –2
सुसकी दै दै रोवै , हिचकी दै दै रोवै । गोरी चली.....
अंगना मे रोवै , दुअरवा मे रोवै– 2
ओसरवा मां मूड़ दै दै रोवै – बलम सुसकी दै दै रोवै –2 । गोरी चली.....
भुइया मे रोवै , पलंगवा मे रोवै –2
तकिया मां मूड़ दै दै रोवै – बलम सुसकी दै दै रोवै –2 । गोरी चली.....
अगितिया मे रोवै , पछितिया मे रोवै –2
बगिया/कोलिया मां मूड़ दै दै रोवै– बलम सुसकी दै दै रोवै –2 । गोरी चली.....

2– दादरा गीत

कट–कट शी"ा गिरे धरनी में भूमि

गिरे मेरे ऑगन में , विधवा हो गई बचपन में–2

आग लगे तोरे बाग बगइचा आग लगे राजधानी में

विधवा. हो गई बचपन में .....कट–कट.....

आग लगे तोरे कुइयां बउलिया आग लगे राजधानी में

विधवा हो गई. बचपन में .....कट–कट.....

आग लगे तोरे महल अटरिया आग लागे रजधानी में

विधवा. हो गई बचपन में .....कट–कट.....

3– दादरा गीत

चाहे जितना देव बिसराय बिसराय–2
माता की सुध नहिं बिसरय–2

(पनघट) जब मैं जाऊ पनिया भरन को–2
चाहे गागर भरू हजार–हजार
माता की सुध नहिं बिसरय। चाह जितना.....

(तालाब) जब मैं जाऊ चुनरी धोबन को–2
चाहे चूनर धुलु हजार–हजार
माता की सुध नहिं बिसरय। चाह जितना.....

(बगीचा) जब मैं जाऊ फुलवा तोड़न को–2
चाहे गजरा गुथु हजार–हजार
माता की सुध नहिं बिसरय। चाह जितना.....

मंदिर जाऊ द"र्ान करन को–2

चाहे पूजा करूॅ हजार–हजार
माता की सुध नहिं बिसरय। चाह जितना.....

4– होली गीत

अरे लाली चुनरिया की कोर काली–2
मोही लइद्या बलम हरियर साड़ी–2
साडी पहन मै तो बागा गई थी–2
मलिया का लडका नजर डारी । मोही लइद्या.....
साड़ी पहन मै तो तलबा गई थी–2
धोबी का लडका नजर डाली। मोही लइद्या.....
साडी़ पहन मै तो कोयना गई थी–2
कहरिन का लडका नजर डाली। मोही लइ्दया.....
साडी पहन मै महला गई थी–2
रानी का लडका नजर डाली। मोही लइद्या.....
लाली चुनरिया की कोर काली मोही लइद्या.....

5– होली गीत

पायल की झनकार सोनरा मोही पायल गढ दो सोनेन की–2
वह पायल मोरी सास रानी पहरै–2
ससुरा सुनै झनकार सोनरा मोही पायल.....
वह पायल मोरी जेठानी रानी पहिरै–2

जेठा सुनै झनकार सोनरा मोही.....
वह पायल मोरी देवरानी जो पहिरै–2
देवरा सुनै झनकार सोनरा मोही.....
पायल की झनकार सोनरा मोही पायल गढ दो सोनेन की–2

6– गैलहाई गीत

उडत गुलाबी हवा के मारे–2
ठंडा सा पानी गरम कर लायौ–2
सफरै न पायौ हवा के मारे–2 उडत गुलाबी.....
रूचि–रूचि के मै तो जेवना बनायौ–2
जेमय न पायौ हवा के मारे–2 उडत गुलाबी.....
लउगा और लैची का बीरा लगायौ–2
रचमै न पायौ हवा के मारे उडत गुलाबी.....

7– सोहाग गीत

आरे साकर खोर सेहरूआ के बारी, सेहरूआ के बारी
पै कलगी अरझ फटी जाय रानी के सोहगवा–2
अरे एक चुनु कलगी निरूआरा मोरि धनिया–2
पै कबहु न अउबै तुम्हरे दे"I, रानी के.....

अरे कइसे के कलगी निरूआरौ मोरे स्वामी–2
पै पापा जी मणये तरे ठार, रानी के सोहगवा–2 अरे सांकर.....
अरे एतनी लजोरिन तो हया मोरी धनिया–2
ता काहे बइठी हऊ ज्याहा का जोड़, रानी.....अरे सांकर.....

8– बन्ना गीत

बंन्ना का लगो शहर में ंव्याह रूपया पूजत नइयारे–2
उनकी आी है कंजूस तिजोरी खोलत नइयारे–2
उनके आजा चतुर चलाक तिजोरी खोल लयामैं रे। बन्ना का.....
उनकी मम्मी है कंजूस तिजोरी खोलत नइयार रे।–2
उनके पापा चतुर चलाक तिजोरी खोल ले यामैं रे
बंन्ना का लगो शहर में ंव्याह रूपया पूजत नइयारे–2

9– बन्ना गीत

बादल बरसै बड़े बड़े बूँद ललन मोरे कउने वन होइहै रे–2
उनकी मम्मी ढूढ़य अलियन गलियन
पापा ढूढय बजार ललन मोरे कउने वन.....
बादल बरसै.....

10–कजली सावन गीत

हरी रमा डसै कालिया नाग जहर बड़ा भारी रे हारी–2
हरी रमा सोने के लोटा गंगा जल पानी रामा–2
हरी रमा घूँटय कालिया नाग जहर बड़ा भारी.....हरी रामा डसै.....
हरी रमा सोने की थाली मा जेमना परोसौ रामा–2
हरी रमा जेमैं कालियां नाग जहर बड़ा भारी रे हारी। हरी रमा डसै.....
हरी रमा ठंडा सा पानी गरम भर लायौ रामा–2
हरी रमा सफरै कालिया नाग जहर बड़ा भारी रे हारी। हरी रमा डसै.....
हरी रमा डसै कालिया नाग जहर बड़ा भारी रे हारी–2

11–दादरा गीत

एक दिन पाले सुगन उड़ जइहै–2
इन बेटों को बेटा न कहिये–2
एक दिन बेटा पडो़सी बन जइहै–2 एक दिन पाले.....
इन बेटी को बेटी न कहिए–2
एक दिन बेटी पराये घर जइहैं–2 एक दिन पाले.....
इन महलों को महला न कहिए–2
एक दिन महल हमी से छुट जइहै–2 एक दिन पाले.....
अपने तन का गुमान न करिये–2
एक दिन ये तन खुदय चुप होइ है–2 एक दिन पाले.....
चार लोग मिल खाट उठइ है–2
एक दिन ये तल अगिन जल जइहै–2 एक दिन पाले.....

12– गइलहाई गीत

बाबुल कुसुम बोबाया बडी दूर कुसुम सीचैं कोया जई–2

बेटी कुसुम एको दूर कुसुम सीचैं तुम जइहा
बाबुल कुसुम सिचत हमें घाम लगे–2
बेटी छत्र तनाई देव गलिन–गलिन। बाबुल कुसुम.....
बाबुल कुसुम सिचत हमें प्यास लगी–2
बेटी कहरिन बसाय देव गलिन–गलिन– बाबुल कुसुम.....
बाबुल कुसुम सिचत हमें भूख लगी–2
बेटी फल लगवाई देब गलिन–गलिन। बाबुल कुसुम.....

13– बेलनहाई गीत

एजी द"ारथ जी के लाल, बेटी तो राजा जनक की–2
राजा द"ारथ जीने जामा मगवायो, पहिरै ना जानै, नादान।
बेटी तो..राजा द"ारथ....
राजा द"ारथ जीने मौर मगवायो–2 पहिरै जानै, नादान।
बेटी तो.राजा द"ारथ....
राजा द"ारथ जीने कंगन मगवायो–2 पहिरै जानै, नादान।
बेटी तो.राजा द"ारथ....

14– बेलनहाई गीत

के"ार की क्यारी बोबाय, बनरे को के"ार सो है–2
के"ार बोबामैं उनके पापा गये है–2
बोई आये लाल गुलाब बनरे को केसर.....के"ार की क्यारी बोबाय.....

15– लोक भजन

दो फूलन के गजरे मन बसे हमारे–2
जो मै होती मालिन की बेटी–2
अच्छे–अच्छे गजरा ले आती मन बसे.....दो फूलन के.....
जो मै होती दर्जी की बेटी–2
अच्छी अच्छी चुनरी ले आती मन बसे.....दो फूलन के.....
जो मैं होती सोनरा की बेटी–2
अच्छी अच्छी बेंदी ले आती मन बसे.....दो फूलन के.....
जो मैं होती कुम्हरा की बेटी–2
अच्छे अच्छे कलसा ले आती मन बसे हमारे.....दो फूलन के.....

16– दादरा गीत

हम बार–बार बगिया ना जावै राजा–2
वह बगिया मा ससुरल जी का डेरा–2
हम बार–बार घुंघटा न घालब राजा–2 ।। हम बार–बार.....

वह बगिया मा जेठानी जी का डेरा–2
हम बार–बार गंलिया न कर बै राजा–2।। हम बार–बार.....

वह बगिया मा देवरा जी का डेरा–2
हम बार–बार बोलिया न करबै राजा–2।। हम बार–बार.....
हम बार–बार बगिया ना जावै राजा–2

17– होली गीत

सॉची बलाव नहीं घालत छड़ी, तोरे सिर से गगरिया कैसे गिरी–2
ओहना से आये ससुर हमारे–2
उनहुन का घुघटा घालन लगी
मोरे सिर से गगरिया ऐसे गिरी। सॉची.....
ओहना से आये जेठा हमारे–2
उनहुन का गलिया काटन लगी
मोरे सिर से गगरिया ऐसे गिरी। सॉची बताव.....
ओहना से आये देवरा हमारे–2
उनहुन से बोलियॉ करने लगी। सॉची बताव.....
मोरे सिर से गगरिया ऐसे गिरी। सॉची बता नहीं घालव.....

18– बन्नी गीत

ससुराल जाके बन्नी–2 हमको ना भूल जाना–2
सासू के प्रेम बस में–2 मम्मी ना भूल जाना–2 ससुराल जाके.....
जेठी के प्रेम बस मे–2 चाची ना भूल जाना–2 ससुराल जाके.....
छोटी के प्रेम बस में–2 भाभी ना भूल जाना–2 ससुराल जाके
ननदी के प्रेम बस मे–2 बहना ना भूल जाना–2 ससुराल जाके.....
देवरा के प्रेम बस में–2 भइया ना भूल जाना–2 ससुराल जाके.....
ससुराल जाके बन्नी–2 हमको ना भूल जाना–2

19– गारी गीत

सुनाओं प्यारी सखियॉ समधी को गाली सुनाओ–2
आधे बरतिनयन के टोपी नही है–2
पहनाओ प्यारी सखियॉ टकलों को पगडी पहनाओं। सुनाओ.....

आधे बरातियन के जूता नहीं है–2
पहनाओ प्यारी सखियॉ लगडो को जूता पहनाओं। सुनाओ.....
आधे बरतियन के च"मा नहीं है–2
पहनाओ प्यारी सख्यिां अंधो को च"मा पहनाओ। सुनाओ प्यारी सख्यिॉ.....

20– बेलनहाई गीत

एजी खेलत रहयौ बालू रेत मुदरिया मोरी उहनै रे गिरी–2
एजी ससुर जगायौ आधी रात सासू गाली देत उठी–2। एजी खेलत.....
एजी जेठा जगायौ आधी रात जेठानी गाली देत उठी–2। एजी खेलत.....
एजी देवरा जगायौ आधी रात देवरनिया गाली देत उठी। एजी खेलत.....
एजी खेलत रहयौ बालू रेत मुदरिया मोरी उहनै रे गिरी–2

21– देवी गीत

अम्बे मइया जगदम्बे मइया सब कहते है मइया जीवन तूने दिया–2
तेरे माथे की बेदी दम–दम दमके मॉ
चम–चम चमके सब कहते है मइया जीवन तूने.....। अम्बे मइया.....
तेरे हाथ की चूडी चम–चम चमके मॉ
दम–दम दमके सब कहते हैं मइया जीवन तूने.....। अम्बे मइया.....
तेरे कान के कुंडल दम–दम दमके मॉ
चम–चम चमके सब कहते है जीवन तूने.....। अम्बे मइया.....
तेरे पाव की पायल दम–दम दमके मॉ
चम–चम चमके सब कहते है जीवन तूने.....। अम्बे मइया.....

22– देवी गीत

मइया तेरे मंदिर को फूलों से सजाना है–2
मइया तेरे माथे की बेदी क्यों चमकती है–2
टीके के बिच–बिच में–2 हीरे का जड़ावा है मइया तेरे.....
मइया तेरे हाथे की चूडी क्यों चमकती है–2
कंगन के बिच–बिच में हीरे का जड़ावा है–2 मइया तेरे.....
मइया तेरे कानों के कुंडल क्यों चमकते है–2
झुमकिन के बिच–बिच में हीरे का जड़ावा है–2 मइया तेरे.....
मइया तेरे पाव की पायल क्यो चमकती है–2
बिछिया के बिच–बिच में हीरे का जड़ावा है–2 मइया तेरे.....
मइया तेरे अंग की चुनरी क्यों चमकती है–2
चुनरी के ओर छोर में गोटे का जड़ावा है–2 मइया तेरे.....

23– देवी गीत

सवार महरानी भोर पे हो गई सवार–2
भोर सवार मइया बागा गई थी–2
दयाल महरानी माली पे हो गई दयाल–2 सवार महारानी.....
भोर सवार मइया कुयना गई थी–2
दयाल महारानी कहरिन पे हो गई दयाल। सवार महारानी.....
भोर सवार मइया तालाब गई थी–2
दयाल महारानी धोबी पे हो गई दयाल–2 सवार महारानी.....
भोर सवार मइया महल गई थी–2
दयाल महारानी दासी पे हो गई दयाल–2 सवार महारानी .....
सवार महरानी भोर पे हो गई सवार–2

24— देवी गीत

मेरी अम्बे मॉ, मेरी दुर्गे मॉ, अम्बे जगदम्बे मइया मेरी पार लगा दो नइया—2
मैं जल का लोटा लाइ मै तुझे नहलाने आई—2
इस जल को मॉ, इस जल को मॉ स्वीकार करो मेरी मइया। मेरी पार.....मेरी अम्बे.
...
मै लहगा चुनरी लाई मॉ तुझे पहनाने आई—2
इस चुनरी को, इस चुनरी को स्वीकार करो मेरी मइया। मेरी पार.....मेरी अम्बे....
मै हलुआ पूरी लाई मॉ तुझे खिलाने आई—2
इस भोजन को इस भोजन को स्वीकार करो मेरी मइया। मेरी पार.....मेरी अम्बे....
मै चूड़ी पायल लाई, मै बेदी टीका लाइ
इस सिंगार को मॉ इस सिंगार को मॉ स्वीकार करो मेरी मइया। मेरी पार.....मेरी अम्बे.

25— बन्नी गीत

बंगले के ऊपर बोले कबूतर आधी रात—2
कहो तो बनी मौरे मगाऊ जोडी चार—2
नही—नही रे अम्मा मौरे तो देगी मोरी सास—2 बंगले के.....

कहो तो बन्नी बेंदी मगाऊ जोडी चार—2
नहीं—नहीं रे अम्मा बेदी तो देंगी मेरी सास—2.....बंगले ऊपर.....
.
कहो तो बन्नी पायल मगाऊ जोडी चार—2
नहीं—नहीं रे अम्मा पायल तो देंगी मेरी सास—2...बंगले ऊपर.....

26– बेलनहाई गीत

निकल के देखो राधा प्यारी कितने हैं ब्योहारी–2
एक लाख मोरे सास ससुर हैं
सवा लाखा ब्योहारी–2
निकल के देखो राधा प्यारी कितने हैं ब्योहारी–2
निकल के देखो.....
एक लाख मोरे जेठ जेठानी
सवा लाख ब्योहारी–2
निकल के देखो राधा प्यारी कितने हैं ब्योहारी–2
निकल के देखो.....

27– लोक नृत्य गीत

झिमके चुनरिया से घाम अमा तरे डोलना उतार दे–2
डोलना उतार दे उतार दे । झिमके चुनरिया.....
पहिले लेबउआ ससुर जी मोरे आये, ससुर जी मोरे आये–2
नहीं जाऊ हो हो हो, नहीं जाऊ ससुरा जी के संग हो। अमा तरे .....।
झिमके चुनरिया....
दूसरे लेबउआ जेठा जी मोरे आये, जेठा जी मोरे आये–2
नहीं जाऊ हो हो हो, नहीं जाऊ जेठा जी के संग हो। अमा तरे .....।
झिमके चुनरिया....
तीसरे लेबउआ देवर जी मोरे आये, देवर जी मोरे आये–2

नहीं जाऊ हो हो हो, नहीं जाऊ देवर जी के संग हो। अमा तरे .....।
झिमके चुनरिया....
चौथे लेबउआ सइयां जी मोरे आये, संइया जी मोरे आये–2
चली जाऊ हो हो हो, चली जाऊ संइया जी के संग हो। अमा तरे .....।
झिमके चुनरिया....

28– सावन गीत

सखिया चला चली द"र्ान का बृज मे झूल रहे गोपाल–2
सखिया चला चली द"र्ान का बृज मे झूल रहे गोपाल–2
कउन काठ का बना हिंडोलना–2
कउन काठ का बना हिंडोलना–2
काहेन लागी डोहर सखियां। सखियां चला.....
सखिया चला चली द"र्ान का बृज मे झूल रहे गोपाल–2

29– कजरी गीत

हरि रमा रामा के कोमल पाव कंकड़ गड़ जइहै रे हारी–2
हरी रामा सोने की थाली मॉ जेवना परोसी रामा हरी रामा
रामा के रथ बडी़ दूर भोजन कइसे करिहैं रे रामा। हारी रामा.....

30– दादरा गीत

नदिया किनारे हवा डोले, हमार श्याम हमसे न बोले।
बागो में बोले बगइचा में बोले–2
मालिन से हॅस हॅस बोले। हमार भयाम हमसे न बोले। नदिया किनारे.....
ताला मे बोले तलइया मे बोले–2

धोबिन से हॅस हॅस बोले। हमार भयाम हमसे न बोले। नदिया किनारे.....
महला में बोले अटरिया में बोले–2
रानी से हॅस हॅस बोले। हमार भयाम हमसे न बोले। नदिया किनारे.....
नदिया किनारे हवा डोले, हमार श्याम हमसे न बोले।

31 –राई

काजल की डिबिया हेरानी रे सूने पडगै नैना
अंगना मे ढूड़ी बरोठे मां ढूड़ी,
जाने कहां हेराय गई रे फीके पड़ गए नैना। काजल....।
सासू से पूंछी ननदिया से पूंछी,
संइया से पूछत लजानी रे फीके पड़ गए नैना। काजल....।
देवरा से पूंछी देवरनिया से पूंछी,
जेठा से पूछत लजानी रे फीके पड़ गए नैना। काजल....।

कार्यालय प्रान्तीय जागरूकता संस्थान

सिविल लाइन, सतना म.प्र.

क्र0 694 मो0 न0 7898438580 दि0.
27 / 08 / 2015

प्रति,
श्रीमान निदे"ाक / संचालक महोदय
संगीत नाटक अकादमी, रबीन्द्र भवन फिरोजसाह रोड, नई दिल्ली

विषय :– अकादमी के **I.C.H./** भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण स्कीम 2014–15 के तहत सम्पन्न हुए कार्यक्रम का प्रगति प्रतिवेदन प्रेषित करने बावत।

संदर्भः–1 – संगोत नाटक अकादमी का पत्र क्रमांक **28-6 / ICH- Scheme / 59/2014-15 / 11290 DATE 2-2-2015** के अनुसार।
2 – संगीत नाटक अकादमी का पत्र क्रमांक **28-6 / ICH- Scheme / 26/2014-15 / 12736 DATE 12-03-2015** के अनुसार।

महोदय,

संगीत नाटक अकादमी द्वारा संदर्भित पत्र अनुसार भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण स्कीम **(I.C.H.)** 2014–15 अंतर्गत के प्रान्तीय जागरुकता संस्थान का स्वीकृति प्रस्ताव जिसका विशय – हमारी कहावतें / लोकोक्तियां एवं लोकगीत पर निर्दे"ानुसार उक्त आयोजन के सम्पन्न होने पश्चात कार्यक्रम का सम्पूर्ण गतिविधियों का प्रगति प्रतिवेदन विधिवत प्रारूप मे तैयार किया जाकर, संलग्न चाहे गए अन्य आव"यक सहपत्रो के सहित अग्रिम कार्यवाही हेतु सादर सम्प्रेषित है।

भवदीय
इन्द्रवती शुक्ला

संलग्न :–

1. प्रगति प्रतिवेदन प्रारूप में।
2. आमंत्रण कार्ड व प्र"ांसा पत्र की मूल कांपी ।
3. कार्यकम के फोटो ग्राप्स की मूल प्रतियां।
4. समाचार पत्रों की कटिंग्स की मूल प्रतियां।
5. फोटोग्राप्स, वी.डि.ओ. एवं अन्य डाटा सी0डी0 में।
6. कहावतें / लोकोक्तियां एवं लोकगीतो का लिखित संकलन हार्ड कांपी एवं डाटा सी0डी0 में।

कार्यालय प्रान्तीय जागरूकता संस्थान

सिविल लाइन, सतना म.प्र.

I.C.H./ भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण स्कीम 2014–15 के तहत सम्पन्न हुए कार्यक्रम का विन्दुवार प्रतिवेदन

1.	संस्था का नाम	प्रान्तीय जागरुकता संस्थान, सतना (म0प्र0)
2.	संपर्क व्यक्ति कानाम	इन्द्रवती शुक्ला मो0 न0– 7898438580
3.	संस्था का पता	आर– 256(टी. वी. टावर के पास)सिविल लाइन, सतना (म0प्र0)
4.	कार्यकम का विशय	हमारी कहावतें / लोकोक्तियां एवं लोकगीत
5	रिर्सच का उद्दे"य संक्षिप्त मे	प्रद"र्ान व प्रलेखन के माध्यम से जहां एक ओर सांस्कृतिक परंपराओं सुदृढ़ीकरण उनका संरक्षण, संवर्धन के साथ–साथ उन्हे स"ाक्त लोक बनाने और लोकरुचि को बढाते हुए उन्हे सुरक्षित व ब्यवस्थित करने ब्यावसायिक रूप से बढ़ावा देना। वहीं गौरव"ाली सांस्कृतिक विरासत सहेजना है और उसमें श्रद्धा, प्राण भाक्ति तथा अनुभव को मिलाकर भ संस्कृति,सभ्यता व संस्कारों से युक्त विकास भावी पीढ़ी के हांथों सौं
6.	संस्था द्वारा आयोजित / सम्पन्न कार्यक्रम विवरण A ग्रामीण एरिया वर्क व टाइम	**गतिविधियां ग्रामीण एरिया मे** ========== **प्रद"र्ान व प्रलेखन कार्यक्रम** 7 अप्रैल 2015 ग्राम पंचायत भवन मझगवां भटठा ,जनपद पं0–सोहावल **प्रलेखन व प्रद"र्ान कार्यक्रम** 12 मई 2015 ग्राम तुरकहा , जनपद पंचायत – उचेहरा जि0 सतना **ग्रामीण युवाओं / युवतियों की कार्य"ाला = 2** 29 मार्च, 2015 ग्राम पंचायत– रामस्थान, जनपद पं0 –सोहावल 12 अप्रेल, 2015 ग्राम मतहा, जनपद पं0–रामपुर बाघेलान जि0 सतना **बृद्धजन / वरिश्ठ नागरिकों का लघु ि"ाविर = 2** 03 मई, 2015 ग्राम सगमा, जनपद पंचायत –सोहावल, जि0 सतना 17 मई, 2015 ग्राम गंगबरिया, जनपद पं0 – नागौद, जि0 सतना **कार्यकम लोक प्रथा एवं लोक रस्मे = 2** (कामकाजी घरेलू महिलाओं का) 24 मई ,2015 ग्राम रिछहरी, जनपद पं0 रामपुर बाघेलान जि0 सतना 31 मई, 2015 ग्राम गोबरांव, जनपद पं0 – उचेहरा जि0 सतना

		छात्राओं का प्रत्यक्ष प्रद”र्ान व प्रतियोगिता 10 अगस्त, 2015, मैहर जि0 सतना म0प्र0 **ग्राम चौपाल/ग्राम सभा कैम्पेन = 2** (किसान एवं खेतिहर मजदूरो की) 07 जून 2015 ग्राम पंचायत बराखर्दु जनपद पं0 –मैहर जि0 सतना 13 जून, 2015 ग्राम लोहरौरा, जनपद पं0 – उचेहरा जि0 सतना

क्रमसः ...2....पर

		महिला लोक कलाकारो का **कला प्रद”र्ान व प्रलेखन कार्यक्रम = 2** 18 जून, 2015 ग्राम –कैमा , जनपद पं0 –सोहावल, जि0–सतना 21 जून, 2015 ग्राम –देउरा मोलहाई, ज0 पं0–रामनगर, जि0–सतना **पुरुश कवियों व लोक कलाकारो का कला प्रद”र्ान व प्रलेखन कार्यक्रम = 2** 28 जून, 2015 ग्राम –घुइंसा, जनपद पं0 –अमरपाटन, जि0–सतना 05 जुलाई, 2015 ग्राम –भाद, जनपद पं0–सोहावल, जि0–सतना
7.	आयोजित/सम्पन्न कार्यक्रम विवरण **B** **भाहरी** **एरिया वर्क** **व टाइम**	**गतिविधियां भाहरी एरिया मे** =============== सम्पन्न हुए, प्रद”र्ान व प्रलेखन कार्यक्रम/आयोजन का विवरण ——————————— **लोकरंजन समारोह** दिनांक 23 मार्च, 2015, बालाजी गार्डेन, स्वामी चौक, सतना **प्रलेखन कार्यक्रम** दिनांक 20 अप्रैल 2015 ,मारूती नगर, सतना **स्कूली छात्र/छात्राओं का प्रत्यक्ष प्रद”र्ान वप्रतियोगिता** 13 जुलाई, 2015, मां भाारदा कान्वेंट सकूल, मारूती नगर सतना 16 जुलाई, 2015, सरस्वती ि”ाक्षा मंदिर, गढिया टोला जि0सतना

		महिला लोक कलाकारो का कला प्रद”र्ान व प्रलेखन कार्यक्रम 19 जुलाई, 2015 को मुख्तियार गंज सतना **पुरुश कवियों व लोक कलाकारो का कला प्रद”र्ान व प्रलेखन कार्यक्रम** 26 जुलाई 2015 को बगहा सतना, जि0 सतना **खण्ड स्तरीय छात्रों का प्रत्यक्ष प्रद”र्ान व प्रतियोगित** 05 अगस्त, 2015 को उचहरा जिला– सतना म0प्र0

क्रमसः .3....पर

8.	अतिथि विवरण	**उपरोक्त आयोजन मे पधारे वि”ोष अथिति –** श्रीमती सुधा सिंह – अध्यक्ष – जिला पंचायत सतना, म0प्र0 श्री उमे”ा प्रताप सिंह – सभापति– वन समिति जिला पंचायत सतना श्री नारायण गौतम – जिला अध्यक्ष –अधिवक्ता संघ, जिला सतना श्रीमती भ्ाांति तिवारी – पार्शद– नगर पालिक निगम सतना श्री सती”ा भ्ार्मा जी – जिला उपाध्यक्ष– भारतीय जनता पार्टी सतना श्री सौरभ नायक – युवा मोर्चा संगठन प्रभारी– भाजपा सतना श्रीमती राजकुमारी भ्ाुक्ला – जिला मत्री– भाजपा महिला मोर्चा सतना श्रीमती नीता सोनी – जिला अध्यक्ष – भाजपा महिला मोर्चा सतना श्रीमती भ्ाुशमा गुप्ता – पूर्व पार्शद – नगर पालिक निगम सतना श्रीमती संध्या उर्मलिया – वरिश्ठ महिला समाजसेवी जिला सतना श्री रवि”ांकर पयासी – वरिश्ठ समाजसेवी श्री कमले”ा गुप्ता – समाजसेवी डा0 र”िम सिंह – उपाध्यक्ष – जिला पंचायत सतना श्रीमती प्रभा बागरी – सदस्य – जिला पंचायत सतना श्री पुश्पराज बागरी – पूर्व उपाध्यक्ष – जिला पंचायत सतना श्रीमती जान्हवी त्रिपाठी – भाजपा नेत्री वरिश्ठ महिला समाज सेवी डा0 अरूणेन्द्र सिंह – वरिश्ठ समाज सेवी श्री पवन कोल – सरपंच – ग्राम पंचायत भवन मझगवां भटठा श्री नारायण प्रसाद त्रिपाठी– संचालक – विनायक एजुके”ान सोसायट नोट :–उपरोक्त के अतिरिक्त आयोजन के दौरान संस्थान के कार्यकत कलाकारो से साथ–साथ काफी संख्या मे गणमान्य नागरिक व स्था जन प्रतिनधि एवं अन्य वि”ोश जनो की उपस्थित उल्लेखनीय रही है
9.	प्रस्तुतीकरण	कार्ययोजनानुसार संस्थान के कर्मचारियो द्वारा सुनि”चत एरिया मे भ्रमण व जनसंपर्क के साथ–साथ बैनर पंपलेट एवं आमंत्रण व

	का स्वरूप :–	समाचार पत्रों तथा शैक्षिक सामग्रियों का निर्माण व निः''ुल्क वितरण के माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण स्कीम (I.C.H.) के तहत गतिविधियों के लिए चयनित विशय कहावतें/लोकोक्तियां एवं लोकगीत के ब्यापक महत्व का प्रचार–प्रसार व वातावरण निर्माण करते हुए टारगेट ग्रुप के समायोजन से विशय वस्तु की बारीकियो का ध्यान रखते हुए उनका संकलन व लेखन प्रलेखन करते हुए नजदीकी बसाहटो के सेक्टर मे वि''ोश आयोजन के लिए सुनि''चत समय,स्थान व तिथि को द''र्क समुदाय व लक्षित समूह की उपस्थिति मे सम्पन्न हुए वि''ोश प्रद''र्न व प्रलेखन कार्यक्रम का विधिवतसुभारम्भ पश्चात प्रथम चरण में विन्ध्यांचल की कहावतें/लोकोक्तियां एवं लोकगीत पर प्रतिभागियों द्वारा लेखन किया गया एवं प्रलेखन प''चात प्रतिभागियों ने उन कहावतो के शब्दों में समाए अर्थ व भाव को स्पष्ट करने के साथ–साथ उसे विस्तार देते हुए, उसके आस–पास के वातावरण इतिहास और जीवनशैली को उजागर किया तथा लोकगीत पर प्रतिभागियों ने संस्कार गीत व मांगलिकगीत तथा मौसमी एवं पर्व–त्योहार अवसरों पर आधारित बहुरंगी पारंपरिक लोकगीतों की मौलिक प्रस्तुतियो का रोचक प्रर्द''न किया गया।.....

क्रमसः .4....पर

		.विशय आधारित विभिन्न गतिविधियों मे महिला एवं पुरुष कला प्रतिभा द्वारा समाज मे मनुष्य के जन्म सेलेकर मृत्यु के पूर्व तक के विविध संस एवं मांगलिक अवसर पर गाए जाने वाले पारंपरिक गीतो जैसेः–जन्म केस भाोहर , दादर, छठी, बरहों ,मुडंन, कन्च्छेदन, द्वारचार,अंजुरी,बनरा,विवाह, विदाई ,गैलहाई आदि अवसरो पर गाये जाने वाले मौलिक गीतो लेखन लोक वाद्यो की संगत के साथ लोकधुन में विधिवत साज वाज व आवाज साथ गायन की अनूठी प्रस्तुति दी गई जो अपनें आप में वि''िष्ट रही त भौतिकताएवं आधुनिकता के इस दौर में विलुप्तता की कगार पर खड़ी भ की इन तमामअमूर्त सांस्कृतिक विरासतो और विविध सांस्कृतिक परम्पराओ महत्व का बोध कराने वाली रही है जिनको सुनकर परिसर भा विभोर हो तथा उपस्थित जनो नें प्र''ंसा की। संस्थान द्वारा प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह आकर्षक पुरूस्कार/उपहार तथा नकद रा''ि से सम्मान करने पश्चात आयोजन मे उपस्थित स्थानीय अनुभवी जनो व संस्थान के विशय वि''ोशज्ञो व आमंत्रित अतिथियों नें विंध्य के विभिन्न अंचलों में भी आई0सी0एच0 के तहत ज्ञान की वाचिक परम्परा की सम्पदा कथा, गाथा, लोकोक्तियां/कहावतों, मुहावरों व लोकगीतो के कई अलिखित भाव तथा भाशा के रूप में जो लोक जीवन में सांसों की तरह मौजूद है, इनमें जीवन का जो ज्ञान रचा बसा है, उसकी उपयोगिता और महत्व

		तथा आव''यकता को देखते हुए विरासत में मिली इस बेश कीमती सास्कृतिक पूंजी को आयोजनो के माध्यम से आने वाले कल (भावी पीढ़ी) के लिए सहेज कर रखने व भावी पीढ़ी के हांथो में सौपने का पुनीत कार्य करने का समाज को संदे''ा दिया गया है।
10.	**कार्ययोजना पूर्णता की दि''ाा मे**	विशय वि''ोशज्ञो ने लोक सांस्कृतिक विधाओं की उपयोगिता, महत्व तथा परंपरिक लोक विधाओं के संरक्षण संवर्धन के महत्व के विषय पर विचार व्यक्त करते हुए विस्तार पूर्वक बताया कि मूर्त तथा अमूर्त लोक संस्कृतियां न सिर्फ समाज में स्वथ्य मनोरंजन की साधन हैं बल्कि इनका समागम दे''ा व समाज को जोड़ता है तथा भाक्ति प्रदान करता है। समारोहों के माध्यम से संस्कृतियों के आदान प्रदान की इस धनी परंपरा को विकसित करना अब बहुत जरूरी हो गया है। दुनिया जब तेज गति से भाग रही हो और सारे संबंध और सरोकार औपचारिक होते जा रहे हो , समाज की लोक परंपराए व कला संस्कृति जिन्दगी का आनंद है उनमें जो सादगी और सरोकार है वह आज भी जीवन्त है तथा जहा इन्सान ही नही बल्कि प्रकृति, जीव–जन्तु और एहसास के बीच गहरा अंर्तसंबंध है। कहावतो व लोक गीतो का व्यापक संसार है, इनमें सार तत्व मौजूद है। आयोजन के माध्यम से ऐसी सांस्कृतिक विरासत को आम जन मानस के सामने लाकर लोक सांस्कृतिक इतिहास की झलक समाज को सुनाने, दिखाने व समझाने का अन्ठा व अद्भुत काम हुआ हैं। और अंत में प्रतिभागी कलाकरो एवं अतिथियो तथा संस्थान के सहयोगियो का स्वल्पाहार तथा विदाई की गई। क्रमसः ...5....पर

11.	**निस्कर्ष**	परियोजन से सामाज के सभी वर्ग के प्रतिभागियो को अपनी प्र को प्रदर्''ित व प्रमाणित करने का उपयुक्त एवं सम्मान जनक मंचीय अ मिला व विविध भारतीय लोक सांस्कृतिक मूल्यों के सुदृढ़ीकरण के साथ संस्कृति साहित्य प्रेमी समाज को स्वस्थ्य व जीवन्त मनोरंजन से युक्त सं प्रेरणा अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित व प्रोत्साहित करने की मि बात चाहे भूगोल या इतिहास की हो, चाहे भाक्ति और भक्ति की हो अ फिर कला या संस्कृति की, भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों की जि विविधता यहां विंध्यांचल में देखने को मिलती है,''ायद ही कहीं और मि लोक भाशा सिर्फ लिखने की बोलने की नही बल्कि जीवन जीने की भाशा है। इसे म्यूजियम में सजाने के बजाय सहेजने उसे जिन्दा रखने व उन्नत''ाील बनाने की जरूरत है। उपरोक्तानुसार छोटी–छोटी गतिविधियो व कार्य''ाला के माध्यम से विंध्य अंचल मे (आई0सी0एच0) भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के तहत परियोजना गत लिए गए विशय <u>हमारी कहावते लोकोक्तियां एवं लोकगीत</u> जो भारतीय संस्कृत का अहम अंग है यह कार्ययोजना एक बड़े सोध के रूप में सफल होने जा रही है। कार्ययोजना के दौरान विंध्य की प्राचीन संस्कृति के द''ान

		हुए हैं अलग–अलग क्षेत्रों मे अलग–अलग संस्कृतियों के नाम रूप तथा भाव भाशा की अमूर्त ज्ञान पद्धतियां हैं जो देखने सुनने व सहजने को मिली हैं। इन गतिविधियों के माध्यम सें सांस्कृतिक चेतना का विकास होता है और वह एक पीढी से दूसरी पीढ़ी को सहजता के साथ हस्तांतरित होती रहती है, भारत गावों का दे”ा है भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराए गांवो में ही रचती बसती है, आज जहां एक आवज मैं पूर गांव इकट्ठा हो जाता है जहां खुसी और गम के मौके में गांव सिकुड़ कर एक परिवार बन जाता है वहां भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासतें स्पश्ट दिखाई देने लगती हैं। हमारी समाजिक पहचान की मूल आधार पौराणिक लोक सांस्कृतिक विधाएं जो दिनो दिन आधुनिकता की चपेट में आती जा रही हैं, संरक्षण संवर्धन के अभाव में इनका निरंतर अवमूल्यन होता जा रहा है। पा”चात्य संस्कृति की चकाचौंध से प्रभावित होकर विलुप्तता की कगार पर खड़ी अपनी अमूल्य पारंपरिक सांस्कृति विरासतों के प्रति आम जनमानस की बढती हुई अरूचि को दृष्टिगत रखते हुए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण एवं सम्वर्धन हेतु विंध्य की अमूर्त मौलिक संस्कृति के प्रति आम जनता में उत्कंठा/आकषर्ण पैदा करने के साथ ही भारतीय अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्य बनाये रखने की दि”ाा मे यह काम हो रहा है। आई0सी0एच0 के तहत मध्य प्रदे”ा के विभिन्न अंचलों विंध्यांचल की अमूल्य बहुरंगी संस्कृति की अपनी गौरव”ाली परंपरा है, और उस परंपरा की हिफाजत करने उसका संरक्षण, प्रोन्नयन और प्रसार करने व इन विविध विधाओ को तलासने तरासने तथा उन्हे सहेजने का भी काम हो रहा है। उपभोक्ता वादी संस्कृति सीधे मानवीय मूल्यों पर प्रहार कर रही है और ब्यक्ति को ब्यक्ति से अलग भी । ऐसे दौर में अमूर्त साहित्य एवं सांस्कृतिक विरासतों के सरंक्षण संवर्धन की दि”ाा में काम करनें की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

क्रमसः ...6....पर

12	कार्यकम का प्रभाव	द”ाकों पर कार्यकम का सकारात्मक प्रभाव पड़ा तथा लोग खु”ा जिज्ञासु एवं उत्साहित व आनंदित नजर आए। लोगो ने चहुमुखी जानकारी प्राप्त
13.	मीडिया का सहयोग	स्थानीय समाचार पत्रो के संवाददाता कार्यकम में सामिल हुए तथा कार्यक की खबर का ऐतिहासिक व बेहतरीन कवरेज भी किया गया। अखबार की कटिंग्स ... संलग्न है।
14.	कार्यकम के बाद लोगों की प्रतिकृया	1. भविष्य में उपरोक्तानुसार गतिविधियां करने की मांग । 2. कार्यकर्ताओ को चाय नास्ता पर अपने घर ले जाने का आमंत्रण। 3. भावी कार्यकमों में बढ़कर भाग लेने व सहयोग प्रदान करने की मं”ाा 4. संस्था के पदाधिकारी व कलाकारो के नाम, पते एवं फोन नंबर की जानकारी च 5. कायकम की प्र”ांसा करने के लिए। 6. धन्यवाद व्यक्त करने के लिए 7. संस्था से जुड़ने के लिए लोगो ने इच्छा जाहिर किया।

15.	परियोजना मे अब तक की व्यय रा”ा–	लगभग = रू0 1,70,000/–(एक लाख सत्तर हजार रुपये)
16.	प्रतिवेदन में निम्न संलग्न हैं। अ. कार्य प्रतिवेदन	हां
	ब. डाटा सी0डी0 मे	हां
	स. आमंत्रण कार्ड	हां
	द. प्र”ांसा पत्र	हां
	इ. फोटोग्रप्स	हां
	फ. समाचार पत्रो की कटिंग्स	हां
17.	कहावतें/लोकोक्तिय व लोकगीतो का लिखित संकलन	हां

स्थानः– सतना (म0प्र0)

इन्द्रवती शुक्ला

दिनांक

पता :– आर. 256 सिविल लाइन, सतना (म0प्र)
दूरभाष/ मो0 नं0 :– 7898438580–8962305606

<u>प्रगति प्रतिवेदन मे संलग्न यह लेख</u> .....

I.C.H./ भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण स्कीम 2014–15 के तहत प्रान्तीय जागरुकता संस्थान द्वारा सम्पन्न गतिविधियों के संदर्भ मे....

आव”यकता,उद्दे”य,महत्व एवं परिणाम ,:–आई0सी0एच0 के तहत सांस्कृतिक परंपराओं के सभी रूपों का जीवन्त अस्तित्व बनाए रखने उनके सुदृढ़ीकरण,संरक्षण,संवर्धन के साथ–साथ उन्हे स”ाक्त और लोकप्रिय बनाने के उद्दे”य से आई0सी0एच0 के विशयों की पहचान कर उनके प्रति जागरूकता और रुचि को बढाने,उन्हे सुरक्षित व ब्यवस्थित करने एवं ब्यावसायिक रूप से बढावा देने की आव”यकता के मददेनजर प्रद”ार्न कलाएं, सामाजिक प्रथाएं, मौखिक परंपराए, अभिब्यत्तिकयां ,रस्मे व रिवाज आदि विविध अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों पर समाज की अधिकाधिक जन भागीदारी हो इसके लिए कार्य”ाला,कवियों कलाकारों का प्रद”ार्न व

प्रलेखन,डाटावेस निर्माण,उत्सव ,िशविर, चौपाल, समारोह आदि विभिन्न आयोजनों, कार्यक्रमों व गतिविधयों के माध्यम सें प्रचारित प्रसारित करते हुए िशक्षा एवं संस्कृति का एकीकरण की दि'ाा में यह एक ठोस प्रयास है, हमारी कहावते/लोकोक्तियां एवं लोकगीतो के शब्दों में समाए अर्थ व भाव को स्पष्ट व विस्तारित करते हुए उसके आस–पास के वातावरण, इतिहास और पूरी जीवनशैली को उजागर व चरितार्थ करती है।

हमारे पुरुखों ने शब्द की महिमा और उसके मर्म को जिस तरह से आत्मसात किया था, कहावते उसकी जीती–जागती बानगी हैं। जानकार और मर्मज्ञ जनों के अनुसार जीवन के तरह–तरह के अनुभवों, पौराणिक और ऐतिहासिक व्यक्तियों, कथाओं, प्राकृतिक नियमों और लोक विश्वासों पर आधारित चुटीली, सारगर्भित, सजीव, संक्षिप्त लोक में प्रचलित और लोक में मान्य उन उक्तियों को लोकोक्ति कहते हैं जिनका प्रयोग किसी बात की पुष्टि या विरोध, सीख तथा भविष्य कथन आदि के लिए होता है। जीवन का पथ प्रदर्शन करती और जीवन मूल्यों को सींचने वाली बघेल खण्ड अंचल की पहेलियों, कहावतों/लोकोक्तियों एवं लोक गीतों मे नक्षत्र, वर्षा, अवर्षा, जीव–जन्तु, के स्वभाव और व्यवहार, खेती किसानी ,दवा–दारू और इलाज तथा वनस्पतियों और लकड़ियों के गुण,दोश,उपयोग सहित जीवन काल मे पिरिवार, समाज , िशक्षा व संस्कार अवसरो आदि सभी पहलुओं की बहुमूल्य जानकारी रची–बसी है अकादमी द्वारा उन्हे राश्ट्रीय स्तर पर सहेजने का काम किया गया है।

सैकड़ों हजारों साल के जीवन का अनुभवजनित व्यवहारिक ज्ञान आज भी हमें बहुत कुछ सिखा सकता है, जीवन की पाठशाला से निकला यह व्यवहारिक ज्ञान हमारी विरासत है। हमारे यहां लोकोक्तियों, कहावतों, में जो ज्ञान संग्रहित है वह गागर में सागर है। कृषि, जल, जंगल, जमीन, खेती–किसानी के तौर–तरीकों, बादलों के रंग और हवा के रुख से मौसम का ज्ञान, पशु–पक्षियों व जानवरों की पहचान, किस्में, और उनके व्यवहार तथा मनुश्य के जन्म से लेकर मृत्यु के पूर्व तक के हमारे विभिन्न संस्कार एवं मांगलिक अवसरो के लोकगीतआदि से प्राप्त नैसर्गिक ज्ञान हमारी धरोहर है।

लोकगीत जिनमे राग,सुर, लय व ताल के साथ जीवन के गहरे अर्थ भी समाहित होते हैं। यहां लोकगीतो की संमृद्ध व गौरव'ाली परंपरा है जो वि'व की श्रेश्ठतम् ,सार्वभौमिक एवं वैज्ञानिक भारतीय सुर संस्कृति है, लोकगीत में खुसी और गम की सहज अभिब्यक्ति है इन लोकगीतों के बदौलत सामाजिक प्रथाएं व परंपरांए आज भी टिकी हैं।

आज आधुनिकता की इस आंधी में हमारे परम्परागत ज्ञान का खजाना लुप्त न हो जाए यह चिंता बहुत समसामायिक और जरूरी है। उनके संरक्षण और संवर्द्धन के लिए किए जाने वाले प्रयासों से लोक जीवन में व्याप्त ज्ञान से समाज को बहुत उपयोगी सीख मिल सकती है। बघेली अंचल के लोक जीवन में व्याप्त जीवन उपयोगी कहावतों, मुहावरों और पहेलियों व लोकगीतों का बहुमूल्य ज्ञान संग्रह निश्चित ही भावी समाज को लाभ देगा, लोक साहित्य जनता द्वारा सामूहिक रूप से रचा जाता है, लोकगीतों में केवल मनोरंजन के सुमधुर क्षण ही नही होते बल्कि वे संघर्षो के साथ जीवन जीने की कला के विकास के साथ व्यापक सरोकारों की दि'ाा मे चेतना/नव जागरण का बोध कराती हैं। लोकगीतों में जीवन झलकता है उसमें कई तरह के अर्थ ,भाव व निस्कर्श निकालने की छमता होती है। संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से जन सरोकारो की दि'ाा मे अपने पूर्वजों की तमाम गौरव'ाली सांस्कृतिक विरासतों को सहेजना है वही उसमें श्रद्धा, प्राण भाक्ति तथा अनुभव को मिलाकर भारतीय संस्कृति,सभ्यता व संस्कारों से युक्त विकास को भावी पीढ़ी के हांथों सौंपना है।

भाग—1

I.C.H. के तहत

प्रान्तीय जागरुकता संस्थान,सतना (म0प्र0)

द्वारा संकलित

हमारी कहावते / लोकोक्तियां

क्रमांक 1 से 224 तक

(क्रमसः पृश्ठ क्रमांक 1 से 20 तक)

I.C.H./ भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं

का संरक्षण स्कीम 2014–15 के तहत

प्रान्तीय जागरुकता संस्थान,सतना (म0प्र0) द्वारा संकलित

विन्ध्यांचल (बघेलखण्ड) की बघेली कहावतें (उपाख्यान)

धौं कइसन कहित तैं मनई उख्खान–.....

भूमिका :– बारहमासी, नक्षत्रों का प्रभाव, वर्षा से संबंधित कहावतें, खेती किसानी,पशुओं की पहचान, लकड़ियों के गुण और उपयोग सहित कुछ अन्य मुहावरे लोकोक्तियां कहावतें जो जन जन की ज़बान पर रची–बसी हैं, ये कहावतें शुरू शुरू में किसी ग्रामीण मजदूर किसान के मुंह से निकली होंगी पर बाद में व्यापक लोक स्वीकृति मिल जाने के कारण के दूर–दूर तक फैलकर लोक की सम्पत्ति बन गई।

हमारी कहावतें/लोकोक्तियां निम्नुसार हैं .....

1. दऊ देवइयां मूसर टेढ़ –

अर्थ – अप्रत्याशित लाभ में बाधक बनना।

2. एक बूंद जो चइत म परै, सहस बूंद सामन कै हरै।

अर्थ – यदि चैत माह में एक बूंद पानी बरसता है तो उसके बदले सावन मास में

एक हजार बूंदों की कमी हो जाती है।

3. सूम के धन शैतान खाय –

अर्थ – कंजूस के धन का दुरुपयोग।

4. दक्खिन बरखे सद्दौं काल । एक न बरखै बरखा काल।।

अर्थ – कभी–कभी अच्छी खासी वर्शा हो रही होती है फिर अचानक दक्षिण दि"ाा की

ओर हवा चलने लगती है और एक दो दिन में सचमुच ही वर्षा रुक जाती है।

5. जब तक शक्ती तब तक भक्ती–

अर्थ – भाक्ति के अनुसार कार्य।

6. घोखे विद्या खोदे पानी–

अर्थ – विद्या के लिए अभ्यास जरूरी।

7. चैत मास दसमी बदी जो कहुं कोरी जाय। चौ मासे भर बादला भली भात बरसाय।।

अर्थ – यदि चैत माह कृष्ण पक्ष की दसवीं को पानी नहीं बरसता तो वर्षा ऋतु में

चारों महीने अच्छी वर्षा होती है।

8. नीके केर जमाना नहि आय –

अर्थ –अच्छाई के समय आज नही है– सठं प्रति सठं।

9. नाक दूर कि हंसिया–

अर्थ – परीक्षण के लिए उकसाना।

10. घुंघुची अपनेन रंग बाउर–

अर्थ – अपने रंग रूप पर घमंड करना।

11. चइत के पछुआ भादो जला, भदौं पछुआ माघ म पला।

अर्थ – यदि चैत माह में पछुआ हवा चले तो भादों मास में अच्छी वर्षा होती है, पर यदि

यही पछुआ भादों मास में चले तो समझ लेना चाहिए कि माघ मास में पाला लगेगा।

12. उजरे गांव पोड़की सुआसिन–

अर्थ – कमजोर व्यक्तियों पर शासन करना।

13. ओंठ चाटे पियास नहीं पटाय –

अर्थ–आव"यकता से कम प्राप्त होना।

14. घरी मा घर जरै अढ़ाई घरी भद्रा–

अर्थ– समयानुकूल काम करना।

15. एक बूंद जो चइत म परै, सहस बूंद सामन कै हरै।

अर्थः– यदि चैत के महीने में कभी पानी बरसने लगता हैतो यह तय है कि सावन सूखा जायेगा

और ऐसे मौके पर तो किसान के मुख से यह कहावत अपने आप निकल पड़ती है।

16. हर कउर मा सीताराम नहीं बोला जाय –

अर्थ—अतिशयोक्ति नहीं करना।

17. फूंक—फूंक के पांव धरै का चाही—

अर्थ—सावधानी बरतना।

18. उल्टा चोर कोतवाल का डांटै—

अर्थ— खुद गलती करना और सफाई देना या दूसरे को धमकाना।

19. चइत क पानी महा बेकार। खड़ी फसल में बंटाढार।।

अर्थ— चैत में बरसने वाला पानी बड़ा ही नुकसानदेह होता है, क्योंकि खड़ी फसल नष्ट हो

जाती है।

20. आय फंसे सो आय फंसे—

अर्थ— इच्छा के विरुद्ध संकोच में पड़ना।

21. चोर—चोर मौसेरे भाई—

अर्थ— एक ही विचार के असामाजिक तत्व।

22. जेठ मास जो तपै निरासा। तब जानै बरखा कै आशा।।

अर्थ—जब जेठ माह में खूब गर्मी पड़े, तब समझो कि वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होगी।

23. आपन खोर कुकुर बरियार—

अर्थ— अपने मुहल्ले में बल दिखाना।

24. अपने गइल मा कुकुरउ भोर होत है—

अर्थ— अपने घर या आपने दरवाजे में दवंगई/बहादुरी दिखाना।

25. उनके घर में उलटी गंगा बहत है—

अर्थ— परम्परा के विरुद्ध कार्य करना।

26. जेठ जरै माघ ठरै, गुड़ के डरी तबै मुंह परै।

अर्थ— यदि जेठ माह में तेज धूप और माघ माह में खूब ठंडी पड़ेगी, तभी गन्ने की फसल

होगी और खूब गुड़ खाने को मिलेगा।

27. ऐरा गैरा नत्थू खैरा —

अर्थ–वजूदहीन, असभ्य व्यक्ति का बोधक।

28. ऐरे गैरे पच कल्यानी–

अर्थ–मूर्ख तथा पगलापन करने वाले को।

29. जेकर बनै असढ़वा, ओकर वारै मास।

अर्थ– जिस किसान की खेती अषाढ़ माह में समय पर हो गई, उसके बारहों महीने अच्छे ही

अच्छे रहते हैं।

30. एक हाथ सिअै त दुइ हाथ फारय –

अर्थ– आमद से ज्यादा नुकसान।

31. सामन सूख सियारी। भादों सूख उन्हारी।।

अर्थ–यदि सावन मास में वर्षा नहीं होती तो खरीफ की फसल सूख जाती है, पर अगर भादों

मास में वर्षा नहीं होती तो रबी फसल की संभावना भी क्षीण हो जाती है।

32. आवा न गा घरहूं के गा–

अर्थ–बड़ा घाटा पड़ना।

33. फकीर केर कम्बलै दुशाला आय –

अर्थ– थोड़े में ही सन्तु"ट रहना।

34. सामन भादौं खेत निदावै। वा किसान निकहा धन पावै।।

अर्थ–जो किसान सावन और भादों के महीने में अपने खेतों की निंदाई कराता है,

उसकी फसल अच्छी होती है। फलस्वरूप उसे अच्छी आमदनी होती है।

35. कंजरौ नोन पानी मानत है–

अर्थ – नमक का एहसान मानना चाहिए।

36. नरदा के पंचायत मा बखरी हारिगे –

अर्थ– छोटी वस्तु के न्याय में बड़ा नुकसान।

37. धन्न भाग जहां बरस कुमार।

अर्थ– वह गांव बहुत ही भाग्यशाली है, जहां क्वांर के महीने में वर्षा हो गई है।

38. गमार कै गारी हंसिके टारी–

अर्थ – छोटे लोगों के मुंह न लगना।

39. सूधे केर मुंह कूकुर चाटै–

अर्थ–अधिक सीधा होना भी नुकसानदायक है।

40. आवा मोखा लइगा तोखा–

अर्थ–धोखा में पड़ना।

41. तेरा कातिक तीन अषाढ़। चूक जाय ते जाय बजार।।

अर्थ–अषाढ़ माह में धान बोने का सही समय 3 दिन और कार्तिक में गेहूं बोने के सही दिन मात्र 13 होते हैं। जो किसान इन 3 और 13 महत्वपूर्ण दिनों में अपनी खेती नहीं बो पाते तो उनके खेत में अच्छी पैदावार नहीं होती। फलस्वरूप उन्हें बाजार से अनाज खरीदना पड़ता है।

42. पांचौं उंगली बराबर नहीं होंय –

अर्थ– सब लोग एक समान नहीं होते।

43. पानी बरखै आधा पूष। आधा गोहूं, आधा भूस।।

अर्थ–यदि पूष माह में जाड़े की वर्षा हो जाती है तो गेहूं के दाने और भूसे दोनों की पैदावार

बढ़ जाती है।

44. आपु गए जजमानऊ घालै–

अर्थ– खुद फंसना दूसरे को भी फंसाना।

45. जीतब–हारब भगवान के अधीन है–

अर्थ–ईश्वर पर विश्वास

46. आए कि खुशी न गए को गम–

अर्थ–दोनों में अलमस्त रहना।

47. तपै नौतपा नौ दिन जोय। तौ पुन बरखा पूरन होय।।

अर्थ– यदि मृगसिरा नक्षत्र के अंतिम नौ दिनों में तेज धूप रहती है, बादल बूंदों का मौसम नहीं

रहता तो उस वर्ष वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होती है।

48. ऊंट चुरावै निहुरे–निहुरे–

अर्थ– बड़ा काम छुपाने से नहीं छिपता।

49. सिखए पूत दरबार नहीं जाय –

अर्थ–बिना पूर्ण अनुभव अधूरी शिक्षा काम नहीं आती।

50. मघा न बरखै भरै न खेत। माई न परसै भरै न पेट।।

अर्थ– यदि माघ नक्षत्र में पानी नहीं बरसता तो बंधी, बांध नहीं भरते। इसी प्रकार अगर माता

भोजन नहीं परोसती तो पुत्र का पेट नहीं भरता।

51. निबल पड़ेरुआ छत्तिस रोग–

अर्थ–दुर्दिन में आपत्तियों का दौर।

52. चईत गुड़ बइसाखै तेल। जेठ क पंथ असाढ़ क बेल।।

सामन साग न भादों दही। कुमार करइयाल न कातिक माही।।

अगहन जीरा पूषै घना। माघ न मिसरी फागुन चना।।

जे कोउ इनकर सेवन करिहैं। मरिहै न, त बेराम जरूरै परिहैं।।

अर्थ– चैत में गुड़, बैसाख में तेल नहीं खाना चाहिए, जेठ के महीने में यात्रा करना नुकसानदेह है। इसी तरह सावन मास में पत्ती वाली तरकारी भादौ माह में दही क्वार में करैला तथा कार्तिक माह मट्ठा खाना वर्जित है।

53. चिंहुआ मारे पानी नही कढ़य–

अर्थ– निर्बल को सताने से लाभ नहीं।

54. द"ी घोड़ी मरहठ भाशा–

अर्थ–बनावटीपना दिखाना।

55. पुखा पुनर्बस कोदों धान। मधा सुरेखा खेती आन।।

अर्थ– धान, कोदों की बुवाई के लिए पुष्य और पुनर्वस नक्षत्र उपयुक्त है, फिर मघा

और अश्वलेखा तो तिल उड़द आदि बोने वाले नक्षत्र हैं।

56. बड़ी बड़ाई, फटही रजाई–

अर्थ–झूठा बड़प्पन दिखाना, असलियत का अभाव

57. माघ तिला तिल बाढ़ै। फागुन ग्वाड़ा काढ़ै।।

अर्थ– माघ में दिन एक एक तिल करके बढ़ने लगता है पर फागुन में तो बड़े–बड़े कदम बढ़ाकर चलता है अर्थात् बहुत बड़ा दिन होता है।

58. जानै न सानै तरी घियै घिव–

अर्थ–गोपनीयता न समझ पाना।

59. मंगनी के बरदा मसक के जोतय –

अर्थ–दूसरे की चीज का दुरुपयोग करना।

60. छूंछी तोखा कोउ न पूंछी–

अर्थ–निर्धन का कहीं सम्मान नहीं।

61. सेंत के चाउर मौसिया के सेराध–

अर्थ–मुफ्त की धान का दुरुपयोग।

62. पुरबा जो पुरबाई पाबै। सूखी नदियां नाव चलाबैं।।

अर्थः– सूखे की स्थिति में पूर्वा नक्षत्र मं हवा का रुख बदलकर पूर्व की ओर हो जाय तो अच्छी बरसात अच्छी फसल के आसार दिखाई देने लगते। सयानो का अनुभव

63. माठा का जाय दोहनी पाछे लुकावै–

अर्थ–अपना काम गुप्त रखना।

64. टाठी हेराय ता गगरी मा हाथ डारय –

अथ–भ्रम की स्थिति।

65. दूसरे के पतरी के मोट बरा–

अर्थ–दूसरे की वस्तु ज्यादा दिखना।

66. आव बरा मोरे मुंह परा–

अर्थ–बिना परिश्रम फल की कामना।

67. गमार मरै लकड़ी के भार–

अर्थ–अज्ञानतावस अन्याय सहना।

68. लेना एक न देना दो–

अर्थ– कोइ मतलब नही रखना।

69. कमाई न धमाई धरौ केर गमाई–

अर्थ–नुकसान पर नुकसान होना।

70. होइगा बिआह मोर करबे का–

अर्थ–काम निकलने पर अहं दिखाना।

71. उआ कबहूं सरे नहीं गन्धाय –

अर्थ–किसी काम में न आना।

72. छटिल परे केर हर गंगा–

अर्थ–मौके का लाभ उठाना।

73. जबरा मारै रोबै न देय –

अर्थ–सक्षम व्यक्ति का दबाव।

74. जाने हये तीस मार खां–

अर्थ – झूठी 'ोखी बघारना।

75. चमकै दक्खिन उत्तर छोर। तब जानै पानी का जोर।।

अर्थ –यदि दक्षिण और उत्तर दि"ाा की ओर बादल चमक रहे हों तो तेज वर्षा के आसार

समझना चाहिए।

76. सौ सोनार केर एक लोहार केर–

अर्थ– एक का सौ के बराबर होना।

77. सांप के गोड़ नहीं देखात है–

अर्थ– अपनी परिस्थिति अपने को ही दिखती है।

78. ओरी के पानी बड़ेरी का जाय –

अर्थ–असम्भव का संभव होना।

79. अंधरन मा काने राजा–

अर्थ–अयोग्य लोगों पर थोड़ा पढ़ा व्यक्ति भी 'ाासन करता है।

80. बोलिस लोखरी फूला कांश। अब नहि आय बरखा कै आश।।

अर्थ –यदि लोमड़ी बोलने लगे और मैदान में उगे कांश के पौधे फूलने लगें तो समझ लेना चाहिए कि अब वर्षा ऋतु समाप्त होने वाली है।

81. उधौ का लेना न माधव का देना–

अर्थ–किसी का कर्जदार न होना।

82. राजन के घोड़े सूमन मा जोड़े–

अर्थ–दिखावा बड़ा खर्च कम

83. करिया बादर जिउ डेरबाबै। भुरबा बादर पानी लाबै।।

अर्थ –काला बादल देखकर भले ऐसा लगे कि भारी वर्षा होगी, पर वर्षा काले से नहीं भूरे बादल से होती है।

84. राजा के अगाड़ी घोड़ के पछाड़ी–

अर्थ–सावधानी बरतना चाहिए।

85. जइसै रहैं अपना, तइसैं देंय ढेकना–

अर्थ–अपने समान दूसरों को भी समझना।

86. ओइन गूना गूठैं, ओइन गमने जांय –

अर्थ– एक ही व्यक्ति की जिम्मेदारी।

87. बोली गोह फूल गा कांस। अब छांड़ा बरखा कै आस।।

अर्थ– यदि गोह बोलना शुरू कर दे और जंगल में कांस फूलने लगे तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा ऋतु समाप्त होने वाली है।

88. अकेले श्याम बहू, सगला गांव फगुहार–

अर्थ–एक में सबका दावा।

89. अकेले चना भाड़ नहीं फोड़य–

अर्थ–बिना समूह काम नहीं चलता।

90. अपनै जांघि मूंदे अपने जांघि उघारै–

अर्थ – घर की गोपनीयता भंग करना।

91. पितर पाख जे बोई अरसी। ओखे घर में रुपिया बरसी।।

अर्थ –जो किसान पितर पक्ष यानी कि क्वांर माह के प्रथम पखवाड़े में अलसी की बुवाइ

करता है, उसके घर में खूब रुपए आते हैं, क्योंकि अलसी की फसल अच्छी होती है।

92. अकेले हरदसिया सगला गांव रसिया–

अर्थ–एक ही पर सबकी निगाह।

93. लोह जानै लोहार जानै धौंकय वाले के बलाय जानै–

अर्थ– अपने को सुरक्षित रखना।

94. जेखे खेत परा नहिं गोबर। वा किसान का मानै दूबर।।

अर्थ–जिस किसान के खेत में गोबर की खाद नहीं पड़ी, उसे कमजोर किसान मानिये।

95. अबहिन आटा–दाल के भाव मालूम होय जई–

अर्थ–परीक्षा करना या वास्तविकता का सामना होना।

96. आपन दाम खोट त परोसिन कै कउन दो"ा–

अर्थ–खुद की कमी का एहसास।

97. जोतिस खेत घास न टूट। ओकर भाग सांझ के फूट।।

अर्थ– यदि किसान ने हल चलाया पर खेत की घास नहीं उखड़ी तो उस किसान की किस्मत तो उसी शाम को फूट गई, क्योंकि रात्रि में घास पुनः अंकुरित हो जाएगी और उस खेत में बोई गई फसल अच्छी नहीं होगी।

98. अपने गरज सवति के मइके जाय का परत है–

अर्थ– जहां इच्छा नही रहती अपने काम से वहां भी जाना पड़ता है।

99. अन्धे पावै कुत्ते खाय –

अर्थ–विचारहीन लोगों का समूह।

100. धान, पान, केरा। तीनौ पानी बोरा।।

अर्थ– धान, पान और केला इन तीनों को खूब सिंचाई की जरूरत पड़ती है, इसलिए इन्हें पानी में तर पौधा माना जाता है।

101. ओंठ चाटे पिआस नहीं पटाय –

अर्थ–अधिक आवश्यकता पर थोड़े से काम नहीं चलता।

102. अन्धा बांटै रेवड़ी चीन्ह–चीन्ह कर देय –

अर्थ–पक्षपात करके लाभ पहुंचाना।

103 आंख के अंध नाम नैन सुख–

अर्थ–कार्यप्रणाली में विपरीतता।

104. आंखी ओट पहार–

अर्थ–आंख से ओझल वस्तु से ध्यान हटना।

105. आसमान से गिरा खजूर मा अंटका–

अर्थ–एक से बचना दूसरे से फंसना।

106. आपन इज्जत अपने हाथ रहति है–

अर्थ–अपना सम्मान खुद बचाना।

107. आठ बराती नौ पोंगेदार–

अर्थ–मतलब के लोग कम बेकार लोग जादा।

108. आपन लड़िका दुसरे के मेहेरिया अच्छी लागति है–

अर्थ–स्वार्थ दृ"ट होना।

109. खाद डारे कै खेती। नहीं नदी कै रेती।।

अर्थ– यदि खेत में खाद डाली जाय, तब तो पैदावार होगी, अगर खाद नहीं डाली गई,

तब तो नदी की रेत और खेत की मिट्टी में कोई अंतर नहीं।

110. आम के आम गुठलियों के दाम–

अर्थ– डबल फायदा होना।

111. अधरम से धन होत है, बरि"ा पांच औ सात–

अर्थ–अन्याय की सम्पत्ति क्षणिक होती है।

112. आपन पेट त कुकुरउ बिलारी भरि लेत हैं–

अर्थ–स्वार्थपूर्ण भावना।

113. बैल अगोतर, भइंस पछोतर।

अर्थ– बैल का कन्धे वाला अग्रभाग पुष्ट होना चाहिए पर भैंस का थन वाला पिछला भाग।

114. आगी लगाय के पानी का दौड़य–

अर्थ–काम बिगाड़कर बनाने की कोशिश

115. आंखी फूटय पीर पटाय –

अर्थ–किसी तरह झगड़ा निपटाना।

116. आंधर आंखी पावय त पतिआय –

अर्थ–कुछ आशा हो तो हिम्मत बढ़े।

117. आपन हथा जगन्नथा–

अर्थ–अपने हाथ मलिकाना खर्च करो मनमाना।

118. आपन हार मेहेरिया के मार केसे कहै–

अर्थ–अपनी कमजोरी छिपाना।

119. आगे नात न पीछे पगहा, तेखे नांव न रोवै गदहा–

अर्थ–लावारिस व्यक्ति।

120. आंधी छोड़ सइघ का धावय, आधिउ जाय न पूरी पावय –

अर्थ–लालच में पड़ना।

121. आन के धन का चोर रोवय –

अर्थ– दूसरे के धन से ई"र्या करना

122. बैल बेसाहैं कजरा। दाम भले होय अगरा।।

अर्थ– हम"ा कजरारी आंखों वाला बैल खरीदना चाहिए, भले ही दाम अधिक देना पड़े,

क्योंकि कजरारी आंखों वाला बैल चलने में तेज होता है।

123. अपना रख पराया चख–

अर्थ–अपना बचाना दूसरे का उड़ाना।

124. आंखी न कान कजरउटा नौ ठे–

अर्थ–नाकाबिल होते हुए दिखाव फिजूल खर्ची।

125. आंधर के आगे रोवय, आपन दीदा खोवय –

अर्थ–नासमझ से फरियाद।

126. अपना दीजै दु"मन कीजै–

अर्थ–उधार देकर दु"मनी लेना।

127. आई कौड़िया आई बुद्ध गई कौड़िया गई बुद्धि –

अर्थ–पैसा आने पर बुद्धि आ जाती है और जााने चली जाती है।

128. आपु गए जजमानउ घालै–

अर्थ–खुद बिगड़ना औरों को भी बिगाड़ना।

129. आवा मोखा लइगा तोखा–

अर्थ–दूसरे का हक औरों को देना।

130. अपने खोर कुकुर बरियार–

अर्थ–अपने दल के साथ दबंगई दिखाना।

131. आधे मा अजगर आधे मा सबघर–

अर्थ–अकेले ज्यादा कब्जा करना।

132. एक बात तुम सुना हमारी। बूढ़ बैल से भली कुदारी।।

अर्थ– तुम मेरी एक बात ध्यान से सुनो कि बूढ़ा बैल खरीदकर लाने से तो अच्छा है कि

खेत की कुदाल से गुड़ाई कर ली जाय।

133. अघान रहै बकुली त तीत लागे मछरी–

अर्थ–सम्पन्नता में तिरस्कार।

134. आवत लक्ष्मी का कोऊ टटिया नहीं देय –

अर्थ– मिलने वाला लाभ लेना।

135. अतरे खेती दसरे गाय। ना देखौ जो ओकर जाय।।

अर्थ– जो किसान एक दिन के अंतर से खेत घूमने नहीं जाता और हर दूसरे दिन अपनी गौशाला में जाकर गायों को नहीं देखता वह हमेशा घाटे में रहता है।

136. आपन तेल भंड़वा मा नाइले हमार करहिया रितइ दे–

अर्थ–अपना स्वार्थ साधना

137. आपन फूली न निहारय दुसरे के परि–परि झांकय –

अर्थ–अपना दोष न देना।

138. अपना खाना अपना कमाना–

अर्थ–स्वतंत्र जीवन सामाजिकता की कमी।

139. ठांढी खेती गाभिन गाय। तब जाना जब मुंह मा जाय।।

अर्थ– खेती में खड़ी फसल और गाभिन गाय को तब अपनी समझना चाहिए, जब फसल कटकर घर आ जाय और गाय बछड़ा पैदा कर दूध देने लगे, क्योंकि इनके साथ हमेशा अनिश्चितता खड़ी रहती है।

140. अंधरन मा काने राजा–

अर्थ–अयोग्य लोगों पर 'ाासन करना।

141. अंगुरी पकड़ायन ता पहुचै पकड़ि लिहिस–

अर्थ–थोड़े सहारा से आगे बढ़ना।

142. चींटी संचे तीतुर खाय। सूम का धन सइतान लइ जाय।।

अर्थ– चींटियां दानों को संचित करती हैं और तीतर उन दानों को खाते हैं, ठीक उसी तरह जैसे सूम कंजूस का धन दूसरा कोई उपभोग करता है।

143. अब आवा ऊंट पहाड़ के नीचे–

अर्थ–सेर को सवा सेर मिलना।

144. औरत जब खिसिआय के दौरत, तब कुछ नहि औरत–

अर्थ–औरत से विवशता।

145. ओरी के पानी बड़ेरी का जाय –

अर्थ– असम्भव का सम्भव होना।

146. बार सुपेत न ओकर होय। त्रिफला से आपन सिर धोय।।

अर्थ– जो व्यक्ति हर्रा बहेरा और आंवले के भिगोये जल से अपने बालों को साफ करता है,

उसके बाल पककर सफेद नहीं होते वे काले बने रहते हैं।

147. अधाधुंध के राज मा गदहा पंजीरी खाय –

अर्थ–कुशासन से मूर्खों को फायदा।

148. बिलारी क नेउना नहि पचै।

अर्थ– बिल्ली को नेनू (नवनीत) नहीं पचती। (सभी को सब चीज हजम नहीं होती)

149. आई मौज फकीर की दिया झोपड़ा फूंक–

अर्थ–विरक्त पुरु''ा मनमौजी होता है।

150.रोज भोर खटिया से उठ के पियै तुरंतै पानी।

ओके घर मा बैद न आबै बात ल्या या मानी।।

अर्थ– जो व्यक्ति सुबह खाट से उठते ही तुरंत पानी पीता है, उसके घर में वैद्य के आने की

जरूरत नहीं पड़ती, क्योंकि उसे कोई बीमारी नहीं घेरती।

151. अपने चाटे कोऊ गोर नहीं होय –

अर्थ– अपनी बड़ाई खुद करना।

152.बाघ मुखारी नहिं करै।

अर्थ– शेर कभी दातून नहीं करता। (शक्तिशाली के लिए कोई कानून कायदे नहीं होते)

153. आंधर का खबावै फेर घरे पहुंचावै–

अर्थ–किसी काम में झंझट

154. खेते लगी मकुइयां बारी। केखर हिम्मत मूड़ निकारी।।

अर्थ– जिसके खेत के चारों ओर मकोय की बाड़ लगी हो तो कोई दुस्साहसी जानवर तक उसमें सिर नहीं डाल सकता।

155. बिल्ली के भइंसी नहि लागैं।

अर्थ– बिल्ली की भैंस नहीं लगती पर उसे दूध की कभी कमी नहीं रहती।

(मौका तलाशते रहने वाले के लिए कोई चीज दुर्लभ नहीं)

156. आन के लरिका, टोरबा, आपन हीरालाल–

अर्थ–अपनी बड़ाई दसरों की निंदा

157. महुआ के टपके धरती नहिं फटै।

अर्थ –महुआ के टपकने से धरती नहीं फटतो। (थोड़ी भूलें नजर अन्दाज भी करना पड़ता है)

158. आप टेक निभाइस, मंसेरुआ के मेछा मुड़ाइस–

अर्थ–हठ के बस गलत काम करना।

159. दूध–बियारी जे करै सोधी हर्रे खाय। जानकर अइसा कहै व सौमा ठहराय।।

अर्थ –जो व्यक्ति व्यालू में दूध का सेवन और भोजन के उपरान्त शोधी हुई हर्र खाता है

तो विद्वानों का कथन है कि वह शतायु होता है।

160. पेटे म मुसबा अस लोटब।

अर्थ –पेट में चूहे लोटना। (भूख के कारण बुरा हाल)

161. अउर बात सब खोटी, सही दाल और रोटी–

अर्थ–सिर्फ खाने को महत्व देना।

162. अहिर के बच्चा कबौ न सच्चा–

अर्थ–जातीय दो''ा

163. कडुवा तेल जो नाक लगाबै। ओकर नाक रोग मिट जाबै।।

अर्थ –जो सरसों का कड़वा तेल नाक में डालते हैं, उनके नाक के सभी रोग दूर हो जाते

164. य ता हमका आंखी फूट नहीं सोहाय –

अर्थ–किसी व्यक्ति के प्रति गुस्सा करना।

165. सांप के गोड़ सांपै क देखाथे।

अर्थ –सांप के पैर सांप को ही दिखाई देते हैं।

(अपने घर की बात वही जान सकता है, दूसरा नहीं)

166. य लरिका त काटी अंगुरी नहीं मूतय –

अर्थ –अकर्मण्यता का प्रतीक।

167. नीम गुन बत्तीस। हर्र गुन छत्तीस।।

अर्थ –नीम में यदि बत्तीस गुण हैं तो हर्र में छत्तीस गुण होते हैं।

168. केकरा केर बच्चे बिला खोदै जानाथै।

अर्थ –केकड़े का बच्चा यूं ही बिल खोदना जानता है। (कुछ गुण जन्मजात होते हैं, उन्हें अलग से नहीं सीखना पड़ता)

169. इहां दूध के धुला कोऊ नहीं आय –

अर्थ–सबके ईमानदारी में 'ाक।

170. य कान से सुनै व कान से निकारि देय –

अर्थ–अनसुनी करना।

171. है महुआ केतना उपकारी। वमा न घाला कोऊ कुल्हारी।।

अर्थ –महुआ का पौधा कितना उपकार करने वाला होता है कि उसके फल से तेल और फूल से तरह–तरह के व्यंजन बनते हैं, इसलिए उसके ऊपर कोई कुल्हाड़ी न चलाए।

172. य हमका तेल के छांह से देखत है–

अर्थ–अधिक ई''र्या करना।

173. लहटी गाय गोलइंदा खाय। धउर धउर मउहारे जाय।।

अर्थ –जो गाय एक बार महुए के फल का स्वाद पा जाती है, वह बार–बार महुआ के घने पेड़ों वाले जंगल की ओर भागती है। (किसी चीज में आशक्त हो जाना)

174. य त कबहूं सरे नही गन्धाय –

अर्थ–कभी किसी के काम में न आना

175. तेंदू महुआ जामुन आमा। फर लकड़ी सब आमैं कामा।।

अर्थ –तेंदू, महुआ, जामुन और आम ये इतने उपयोगी पेड़ हैं, जिसकी लकड़ी और फल दोनों

हमारे काम आते हैं।

176. य त आंधी पानी से लड़ति है–

अर्थ–अति विवादी स्वभाव।

177. उहै बांस के डलिया टोपरा ओही के दउरी सूप।

अर्थ –उसी बांस के डलिया टोकना बनते हैं और उसी की दौरी और सूप भी।
(एक ही वस्तु से बनाने वाला कई कई चीज बना सकता है)

178. य अरब दरब मा काम अई–

अर्थ – संग्रह करने की भावना।

179. केकरा के बच्चा माटिन खोदत है –

अर्थ – जन्मजात गुण का होना ।

180. जेखर बंदरवा ओहिन से नाचा थै।

अर्थ –जिसका बन्दर होता है, उसी से नाचता है। (जिसकी चीज होती है उसे चलाने की
तरकीब वही जानता है)

181. कुछ तु समझे कुछ हम समझेन–

अर्थ – एक दूसरे की चालाकी समझना।

182. पानी कस पातर।

अर्थ –पानी तरह पतला होना। (पारदर्शी)

183. केला खात गाल फाटत है–

अर्थ – जादा रहीसी दिखाना।

184. तिलिन से तेल होथै।

अर्थ –तिल से ही तेल निकलता है। (कुछ बुनियादी गुण होना)

185. कहे के लाज न कहवाये के–

अर्थ – बेसर्म होना ।

186. कीचड़ मां पाथर मारे से अपनेन उपर आवत है–

अर्थ– ना समझ व मूर्ख के मुह न लगाना चाहिए।

187. कर भला तो हो भला–

अर्थ – अच्छे कार्य अच्छा परिणाम।

188. आमा कस मीठ।

अर्थ –आम की तरह मीठा होना। (मृदुभाषी होना)

189. करनी करै तो क्यों डरै करि के क्यों पछिताय।
बोवै पेड बबूल का आम कहां ते खाय।।

190. काबुल गये मुगल बनि आये, बोलै अटपट वनी।
आव–आव कहि प्रान निकरिगें,धरा सिरहने पानी।।
का पराई नीकि सूखी का पराई जोय ।
आना काना रोटी पोव तुमाहि न पूछी कोय ।।

191. कमाई न धमाई घरौ के गमाई–

अर्थ – फायदा के बजाय घर की पूजी का डूबना।

192. बांस अस बढ़ जाब।

अर्थ –बांस की तरह लंबा हो तो जाना पर मोटा न होना। (एक तरफा विकास)

193. तेल अस चुपरब।

अर्थ –तेल की तरह चुपड़ देना। (खुशामद करना)

194. कसाइउ नोन पानी मानत है –

अर्थ – नमक क अहसान ।

195. केखर–केखर लेई नाव –कथरी ओढ़े सगला गावं–

अर्थ – सभी की स्थिति व द''ा एक समान होना।

196. करियन बरदा जेठपूत – बड़े माग से होय सपूत–

अर्थ – काला बैल और जेश्ठ पुत्र भाग्य''ाली का सपूत होता है।

197. पाथर म दूब जमाउब।

अर्थ– पत्थर में भी दूब घास उगा लेना। (असम्भव को सम्भव बनाना)

198. कहे कहे पथरउ करमट लै लेत है–

अर्थ – निवेदन व प्ररेणा जड़ व निर्जीव पर भी पड़ जाता है।

199. खर कहवइया दाढ़ी जार –

अर्थ – सत्य कहने वाले की निन्दा की जाती है।

200. खाय त पछिताय, न खाय त पछिताय –

अर्थ – दुसन्धि में पड़ना– अनिर्णय की स्थिति।

201. टिटिहरी कस उतान।

अर्थ –आसमान गिरने की आशंका से ग्रसित टिटिहरी पक्षी अपने पैर को ऊपर करके अण्डे

सेती है कि अगर आकासा गिरे तो वह अपने पंजे से रोक लेगी। (व्यर्थ ही आशंकित रहना)

202. खरी मजूरी चोखा काम–

अर्थ –अच्छा दाम देने पर अच्छा काम मिलता है।

203. खाय भतार केर गावै यार केर–

अर्थ – खाना कपड़ा पती का गुणगान यार दोस्तों का।

204. चिरई कस बसेर।

अर्थ –चिड़ियों की तरह बसेरा जैसा चिड़ियों का किसी एक पेड़ में स्थाई निवास नहीं होता।

(स्थायित्व न होना)

205. खोदा पहाड़ निकली चुहिया–

अर्थ –बहुत परिश्रम के बाद छोटा सा लाभ या प्रतिपल।

206. खोटा बेटा खोटा दाम, समय परे पर आवै काम–

अर्थ – बिगड़ पुत्र और अचल पैसा भी कभी काम आ जाता है।

207. कुइंया केर गूलर बनब।

अर्थ –कूप मण्डूक बनना। (सीमित दृष्टि)

208. खरामाल के सौ ग्राहक –

अर्थ – सच्चाई के सेकड़ों साथी ।

209. कंजरउ नोन पानी मागत है–

अर्थ – निर्दयी निर्मोही ब्यक्ति भी नमक क अहसान मानता है।

210. सौठे पीपर न खाय के एकठे ऊमर खाय लेय।

अर्थ –पीपल के छोटे छोटे बहुत से फल खाने के बजाय क्यों न ऊमर का एक ही फल खा

लिया जाय। (फुटकर काम के बजाय बड़ा और थोक काम)

211. लेय अहार त पेलै पहार–

अर्थ– फुल मात्रा मे भोजन करने वाला अच्छा परिश्रम भी करता है।

212. खाईं खोदै और को, वाको कूप तैयार–

अर्थ – दूसरे के लिए गडढा खनने वाला स्वयं गिरता है।

213. जब पखियारी केर मऊत आबा थी, त पखना जमि आवाथे।

अर्थ –जब दीमक की मौत आती है, तब उसके पंख निकल आते हैं।

(घमंड समूल नष्ट कर देता है)

214. खुदा मेहरवान त गदहा पहलवान–

अर्थ–भगवान कि कृपा हो जाय तो गिरा य कमजोर भी बहादुर हो जाता है।

215. खेत विगाड़ै पटवारी, अ बिटिया का महतारी–

अर्थ – पटवारी के चूक से जमीन और मां के छूट संतान हांथ से चली जाती है।

216. अरुआ कस हूंकी।

अर्थ –उल्लू की तरह घूं–घूं करना। (गंवारपन का प्रदर्शन)

217. खीर मां साझी महेरी म निनार–

अर्थ – सुख में साथी दुख में दूर।

218. घुइंस अस लहटब।

अर्थ –जंगली चूहों द्वारा अनाज उजाड़ देना। (गरीबी आ जाना)

219.खाये के गाल नहाये के बाल उपरै देखात हैं–

अर्थ – अपने ज्ञान व अनुभव से सब समझ लेना।

220. अरहर कस बहुरब।

अर्थ –बहुत दिनों बाद लौटकर आना जैसे अरहर नौ–दस माह बाद आती है।

221. गिरदान कस मूंड़ हलाउब।

अर्थ –गिरगिट की तरह सिर हिलाना। (आंख मूंदकर सारी बातें स्वीकार कर लेना)

222. खाय बोकरी अस, सूखै लकड़ी अस–

अर्थ – कितना भी खाय पर खाने का असर न होना।

223. गोलइंदा कस गाल देखाब।

अर्थ –महुए के फल की तरह गोल मटोल गाल दिखाना। (मोटा तगड़ा हो जाना)

224. खाय के पर रहु , मारि के टर रहु –

अर्थ – भोजन के बाद विश्राम व लड़ाई के बाद प्रस्थान जरूरी होता है।

भाग–2

I.C.H. के तहत

प्रान्तीय जागरुकता संस्थान,सतना (म0प्र0)

द्वारा संकलित

हमारे लोकगीत

क्रमांक 1 से 69 तक

(क्रमसः पृश्ठ क्रमांक 1 से 29 तक)

I.C.H./ भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं

का संरक्षण स्कीम 2014–15 के तहत

प्रान्तीय जागरुकता संस्थान,सतना (म0प्र0) द्वारा संकलित

विन्ध्यांचल (बघेलखण्ड) की बघेली–लोकगीत

प्रथम चरण में मनुश्य के जन्म से लेकर मृत्यु के पूर्व तक के हमारे विभिन्न सोलह संस्कार एवं मांगलिक अवसरो (जन्म, बधाई, मुण्डन, कर्णवेध,ब्रतवंध/जनेउ विवाह ,विदाई व पुजाई अनुश्ठान आदि) के पारंपरिक एवं ऋतु, पर्व, त्योहार व मौसमी लोकगीत जिनमे राग,सुर, लय व ताल के साथ जीवन के गहरे अर्थ भी समाहित होते हैं। यहां लोकगीतो की एक संमृद्ध व गौरव''ाली परंपरा है जो वि''व की श्रेश्ठतम् ,सार्वभौमिक एवं वैज्ञानिक भारतीय सुर सांस्कृतिक है, लोकगीत में खुसी और गम की सहज अभिब्यक्ति है, इन लोकगीतों में जीवन झलकता है उसमं कई तरह के अर्थ ,भाव व निस्कर्श निकालने की छमता होती है।इन लोकगीतों के बदौलत सामाजिक प्रथाएं व परंपरांए आज भी टिकी हैं। विभिन्न आयोजनों के माध्यम सें प्रस्तुत संग्रहित संकलन में स्वाभाविक क्षेत्र व अंचल की संस्कृति में कफी दूर–दूर तक समानता के बदौलत कई–कई गीत व कहावतें (सेम) एकदम मिलती–जुलती पाई गई हैं अतः उन्हे छटनी कर मौलिक लोकगीतों का लेख संग्रह भेजा जा रहा है। मांगलिक/ संस्कार गीत माला

मनुश्य के जन्म से लेकर मृत्यु के पूर्व तक के हमारे विभिन्न सोलह संस्कार एवं मांगलिक अवसरो पर गाए जानें वाले कमबद्ध गीत.....

1– सोहर गीत (बच्चा के पैदा होते समय का गीत)

धन्य धन्य नगर अयोध्या ,धन्य राजा द"ारथ
धन्य राजा द"ारथ हो.....। .धन्य धन्य नगर.....
अब धन्य हो कौ"ाल्या तुम्हारे भाग रमइया जहां जनमे,
रमइया जहॉ जनमे है हो....2 । .धन्य धन्य नगर.....
जउने दिन रामा जनम भे हैं , हाथि घोड़ा लुटीगे हैं–2
आवा हथियन के बल से करहुआ , रमइया द्वारा घूमय–2। धन्य धन्य नगर .....
जउने दिन रामा जनम भे हैं सोनमन जुटगे हैं, –2
आबा सोनमन के बल से बेसरिया रमइया नाके सा है–2 धन्य धन्य नगर .....
जउने दिन रामा जनम भे है, गउअन लुटि गे है–2
आवा गउअन के बल से बछवलना, रमइया दूध पीहै–2 हो.....धन्य धन्य नगर.....
.

2. – कुॅआ पूजन गीत

जल भरौं हिलोर हिलोर रे"ाम की डोरी–2
रे"ाम डोरी तबै निक लागै–2 जब पतली सो धनिया होय । रे"ाम की डोरी.....
पतली सी धनिया तबै निक लागै–2 जब सोने घइलना होय। रे"ाम की डोरी.....
सोने घइलना तब निक लागै–2 जब रूपे गोड़रिया होय। रे"ाम की डोरी.....
रूप गोड़रिया तब निक लागै–2 जब पतली से कमरिया होय। रे"ाम की डोरो.....
.
पतली कमरिया तब निक लगै–2 जब कोरा मॉ बालक होय। रे"ाम की डोरी.....
कोरा मा बालक तब निक लागै–2 जब काली झलरिया होय। रे"ाम की डोरी.....
काली झलरिया तब निक लागै–2 जब का"ाी मा मुण्डन होय। रे"ाम की डोरी.....
.
का"ाी मा मुण्डन तब निक लागै–2 जब फूफू झलरिया लेय। रे"ाम की डोरी.....

फूफू झलरिया तब निक लागै–2 जब लोई मा मोहर होय। रे''ाम की डोरी.....
जल भरौं

3– जन्मदिन/मुण्डन/कन्छेदन

श्रीकृश्ण लिहिन अवतार सखी रे, मंमा के महलों मे –2
इन महलन मे सासू नहीं है –2
पिपरी कौन पिसाये, सखी रे मंमा के महलों मे.....। श्रीकृश्ण लिहिन.....
इन महलन मे जेठानी नहीं है –2
छठियॉ कौन धराये, सखी रे मंमा के महलों मे.....। श्रीकृश्ण लिहिन.....
इन महलन मे ननदी नहीं है –2
सोबरी कौन पुताबै, सखी रे मंमा के महलों मे.....। श्रीकृश्ण लिहिन.....
इन महलन मे देवरा नहीं है–2
बंसी कौन बजाये, सखी रे मंमा के महलों मे.....। श्रीकृश्ण लिहिन.....
श्रीकृश्ण लिहिन अवतार सखी रे, मंमा के महलों मे ।

4–ब्रतवंध गीत (जनेउ संस्कार हाते समय का गीत)

अरे अरे कातिक कुमार चैत कबै लगिहैं हो।
हो कबै आजा जइहैं बजरिया, कपड़ा लै अइहैं हो।
हो कबै आजी रंगिहै पियरिया बरन कब होइहैं हो। अरे अरे कातिक.....
हो कबै पापा जइहैं बजरिया, कपड़ा लै अइहैं हो।
हो कबै अम्मा रंगिहै पियरिया बरन कब होइहैं हो। अरे अरे कातिक.....
हो कबै चाचा जइहैं बजरिया, कपड़ा लै अइहैं हो।
हो कबै चाची रंगिहै पियरिया बरन कब होइहैं हो। अरे अरे कातिक.....
हो कबै भइआ जइहैं बजरिया, कपड़ा लै अइहैं हो।

हो कबै भाभी रंगिहै पियरिया बरन कब होइहैं हो। अरे अरे कातिक.....

5 – मंडप गीत (मंडप पडते समय का गीत)

चलो सखी देखन चलियो रे जहां मड़वा परत है
बढइया बेटउना तै मोरे भइया
अच्छे–अच्छे खम्भा ले अइयों रे
जहां मडवा परत है। चलो सखी.....

6 – तिलकोत्सव गीत (तिलक चढ़ते समय का गीत)

आयो तिलक अगरे से, बन्ना ससुरे से ,तिलक बड़ी थोड़ी है–2
बन्ना के आजा तिलक नहीं छोरै–2
तिलक नहीं ठेगैं, तिलक बडी़ थोडी़ है। आयो तिलक.....
बन्ना के पापा तिलक नहीं छोरै–2
तिलक नहीं ठेगैं, तिलक बडी़ थोडी़ है। आयो तिलक.....
बन्ना के फूफा तिलक नहीं छोरै–2
तिलक नहीं ठेगैं, तिलक बडी थोडी़ है। आयो तिलक.....

7 – बारात प्रस्थान गीत (बारात जाते समय का गीत)

बेटा बेग करो तैयार तुम्हे कोई सजन बुलावैं–2
अम्मा चलो हमारे साथ अकेले हम न जावै रे–2
बेटा बाबुल को ले लो सथ दुलन्हिया ब्याह ले आवा रे।।
चाची चलो हमारे साथ अकले हम न जावै रे–2
बेटा चाचा को ले लो साथ दुलन्हिया ब्याह ले आवा रे।
बेटा बेग करो तैयार तुम्हे कोई सजन बुलावैं–2

8 – द्वार चार गीत (बारात बधू पक्ष के यंहा पहुचने समय का गीत)

मेरा हरियाला बन्ना मेरा सहजादा बन्ना

बन्नी के घर को आया–2

बेंदी भी लूट लिया, टीका भी लूट लिया

सारा धन लूट लिया–2

बन्नी के घर को आया –2 । मेरा हरि.....

कंगन भी लूट लिया, कुण्डल भी लूट लिया

सारा धन लूट लिया–2

बन्नी के घर को आया –2 । मेरा हरि.....

9 –बन्नी चढाव गीत (दुल्हन को मण्डप में लातें समय का गीत)

बराती फूल बरसाओं बन्नी मंडप पे आई है–2
बन्नी के माथ की बेंदी बन्नी सास ने भेजी–2
पहन लो प्यार से बन्नी तुम्हे ससुराल जाना है। बाराती.....
बन्नी के हाथ की चूडी बन्नी की सास ने भेजी–2
पहन लो प्यार से बन्नी तुम्हे ससुराल जाना है। बाराती.....
बन्नी के कान के कुंडल बन्नी की सास ने भेजा–2
पहन लो प्यार से बन्नी तुम्हे ससुराल जाना है। बाराती.....
बन्नी की गले की चैन बन्नी की सास ने भेजा–2
पहन लो प्यार से बन्नी तुम्हे ससुराल जाना है। बाराती.....

10 – जयमाल गीत (विवाह की र''म जयमाल पड़ते समय का गीत)

बन्नी–बन्ना

अंचला भीतर करलो जी लग जइहै नजरिया–2
ये बन्ना अपने आजा जी के प्यारे–2
आजी के ऑखो के तारे जी, लाग जइहै–.....
ये बन्ना अपने पापा जी के प्यारे–2
मम्मी के ऑखो के तारे जी, लाग. जइहै–.....

ये बन्ना अपने चाचा जी के प्यारे–2
चाची के ऑखो के तारे जी, लाग.. जइहै–.....

11 – चढ़ाव गीत (विवाह की र''म चढ़ाव चढ़ते समय का गीत)

आज श्री सीता जी का चढ़त चढ़ाव
हरे मण्डप के नीचे जी–2
धन्य सासु धन्य ससुरा ऐसी
बहु पायो हरे मण्डप के नीचे जी–2। आज श्री सीता.....

.

12 – विवाह गीत (विवाह र''म का गीत)

कोया लगाये है आमा रे जामुन हो, कोया लगाये लखराम
कोया लगाये है सुधर बजरिया , हो सेंदुरा तो मंहग बिकाय
बाबुल लगाये है आमा रे जामुन हो, पीतिया लगाये लखराम
भइया लगाये है सुधर बजरिया हो सेंदुरा मंहग बिकाय हो। कोया.....

13 – लावा परसाई गीत (विवाह की एक र''म लावा परसाई का गीत)

लावा परस भइया लावा त बहिनी तुम्हारी हो
एक पिपरी तोरी बहिनी, दूसर बहनोइया हो। लावा परस.....
एक पिपरी तोरी फूफू , दूसर फूफा हो। लावा परस.....
एक पिपरी चाची बहिनी, दूसर चाचा हो। लावा परस.....
एक पिपरी मौसी बहिनी, दूसर मौसा हो। लावा परस.....

14 – अंजुरी गीत (विवाह की एक र''म अंजुरी का गीत)

हॉथ मा सेधउरा लीन्हें, खाय बीरा पान हो कि–2
आ न जात्या मोरी धना हमरेन साथ हो कि–2
कइसे के आई स्वामी, तुम्हरेन दे"ा हो कि–2
ठाढ़े देखय माया बाबुल नागरी के लोग हो कि। ठाढ़े देखय.....।हॉथ मा.....
कइसे के आई स्वामी तुम्हरेन दे"ा हो कि–2
ठाढ़े देखय चाचा चाची नगरी के लोग हो कि–2 ठाढ़े देखय.....।हॉथ मा.....
कइसे के आई स्वामी तुम्हरेन दे"ा हो कि–2
ठाढ़े देखय भइया भाभी नगरी के लोग हो कि–2 ठाढ़े देखय.....।हॉथ मा.....

15 – बनरा गीत (विवाह की एक र"म का गीत)

द्वारे डाल दो सतरंगिया, चौपड़ खेलै रे बनरा –2
चौपड़ खेलै रे बन्ना, चौपड़ खेले रे बनरा –2 ।
अपने आजा से बाजी लगामैं रे बनरा – 2
पड़गा दाव पलटगा पांसा बाजी जीतै रे बन्ना। द्वारे डाल दो.....
.
अपने बाबुल से बाजी लगामै रे बनरा –2
पड़गा दाव पलटगा पांसा बाजी जीतै रे बन्ना । द्वारे डाल दो.....
.....
अपने चाचा से बाजी लगामैं रे बन्ना–2
पड़गा दाव पलटगा पांसा बाजी जीतै रे बन्ना । द्वारे डाल दो.....
.....
अपने भइया से बाजी लगामै रे बन्ना–2
पड़गा दाव पलटगा पांसा बाजी जीतै र बन्ना । द्वारे डाल दो.....
.....
द्वारे डाल दो सतरंगिया चौपड़ खेलै रे बंना–2
चौपड़ खेलै रे बन्ना, चौपड़ खेले रे बन्ना।

16 – बेलनहाई गीत (विवाह की एक र"म का गीत)

ऐजी ऐसी प्यारी बहनी चिट्ठिया लिख भेजैं, चले आमैं भइया हमार–2
एजी कइसे के अउबैं बहनी तुम्हरे हम दे"ाय
पड़गे है उअत के घाम–2 । ऐ जी एसी.....

ऐजी दर्जी बुलाउबै छत्र तनउबै
चले आमै भइया हमार–2 । ऐ जी एसी.....
ऐजी कइसे के अउबै बिहनी तुम्हरे हम दे"ाय
पड़गे है नदिया औ नार। ऐजी एसी.....
ऐजी नदिया अ नार मा पुल बधबउबै
चले आमै भइया हमार–2। ऐजी एसी प्यारी.....
ऐ जी कइसे के अउबैं बहिनी तुम्हरे हम दे"ाय
मर जाबै भूख और प्यास–2। ऐजी एसी प्यारी.....
एजी गलियन गलियन जेवना बनबउबै ,गंगा जल की धार। ऐ जी एसी प्यारी.....
....
ऐजी ऐसी प्यारी बहनी चिट्ठिया लिख भेजैं, चले आमैं भइया हमार–2

17 – गारी गीत (विवाह मे बरातियों के भोजन करते समय का गीत)

राम जंगल में बागत है जाइके, कुटिया सूनी पाइन आइके –2
मृगा मार राज जब आये, कुटिया को सूनी जब पाये,
मन ही मन बहुत ही पछताये, सोच कीन्ही है मन में हर्शाये के,
कुटिया सूनी पाइन आइके। राम जंगल में..... (अंतरा–1)
पूछे राम वृक्ष से जाई, यहॉ को आई सीता माई,
हमको दइयो तनिक बताई वृक्ष न बोले न तनिकौ बताय के,
कुटिया सूनी पाइन आयके। राम जंगल में.....(अंतरा–2)
आयके राम ने ढूढ़त जायी, इतने मे मिल गये जटाऊ,
दीन्हीं सबला हाल बताई, रोकत मैं रथ को चोंच से लड़ाय के,
कुटिया सूनी पाइन आय के। राम जंगल में.....(अंतरा–3)
गिद्ध से पूरा पता बताई, राम ने उसकी कियों दवाई,
गिद्ध को सीधे बैकुण्ठ पठाई, कहो सब कोऊ राम राम आइके,
कुटिया सूनी पाइन आय के। राम जंगल में.....(अंतरा–4)

गारी गीत–2 (विवाह मे बरातियों के भोजन करते समय का गीत)

पांतिन पांनि परिगै पतरिया, बैठे लखन चारो भाई
काहे के पतरी काहेन के दोना काहे न डोभ डोभाई।
पान की पतरी छिउलन के दोना, लौंगन डोम डोभाई। पांतिन.....

काहे के रोटी काहेन के साग काहे न सांध सोंधाई।
मैदा की रोटी गोभी के साग,घिव सुरहिन केर सोंधाई। पांतिन.....

18 – सोहाग गीत (विवाह अवसर का गीत)

अरे एतने जतन सेरे पाल्यौ रे चिरइया–2
पै उड़ गै विदेि"ाया के दे"ा। रानी के सोहगवा।
अरे आजा उनके रोमय रूमाल मुख पोछय–2
पै आजी उनकी रोमय निरा धार। रानी.....
अरे चाचा उनके रोमय रूमाल मुख पोछय–2
पै चाची उनकी रोमय निरा धार। रानी.....
अरे भइआ उनके रोमय रूमाल मुख पोछय–2
पै भाभी उनकी रोमय निरा धार। रानी.....

19 – कलेवा गीत

(विवाह प"ाचात बरात विदाई के पूव वर का कलेवा/नास्ता अवसर का गीत)

दूल्हे कर लो कलेवा दिल खोल के , विनय करो हाथ जोड़ के ।
टी.व्ही. मागै टी.व्ही. नइया, मोटर मागै मोटर नइया
कार हमको देने नइया
लाला लैले साइकिलिया दिल खोल के, विनय करू हाथ जोड के। दूल्हे कर.....
कूलर. मागै कूलर नइया, पंखा मागै पंखा नइया
एसी हमको देने नइया
लाला लैले तू बेनमा दिल खोल के, विनय करू हाथ जोड के। दूल्हे कर.....

.

20 – बिदाई गीत (विवाह के बाद बारात व लड़की की विदाई अवसर का गीत)

द्वारे माही बाजा बाजै भितरे सहनाई हो कि–2
आज मण्डप सूना होइगा बेटी ब्याही दूरी हो कि–2
बाहिरे से आजा रोमय भीतरे से आजी हो कि–2
आज मण्डप सूना होइगा बेटी ब्याही दूसरी हो। द्वारे माही.....।
बाहिरे से पापा रोमय भीतरे से माइ हो कि–2
आज मण्डप सूना होइगा बेटी ब्याही दूसरी हो। द्वारे माही.....।

21 – परछन गीत (बारात वापस वर के घर आने पर परछन अवसर का गीत)

धीरे करो परछनिया, सिया राम लाये दुल्हनिया –2
पहली परछनिया उनकी आजी करत है –2। धीरे करो परछनिया.....
दूसरी परछनिया उनकी माया करत है –2। धीरे करो परछनिया.....
तिसरी परछनिया उनकी चाची करत हैं –2। धीरे करो परछनिया.....
चौथी परछनिया उनकी भौजी करत है –2। धीरे करो परछनिया.....
धीरे करो परछनिया, सिया राम लाये दुल्हनिया –2

22 – डोला मुदाई गीत (विवाह की एक र”म डोला मुदाई गीत का गीत)

लाला खोल दे केवडिया हो...मैं देखों तुम्हरी धना।
धौ सावल है धौ गोर.....मैं देखों तुम्हरी धना। लाला.....।
धौ पातर है धौ मोट.....मैं देखो तुम्हरी धना। लाला.....
धौ लम्बी है धौ छोट.....मैं देखो तुम्हरी धना। लाला.....
लाला खोल दे केवडिया हो...मैं देखों तुम्हरी धना।

23 – गैलहाई गीत (मंडप छूटने के बाद बहाने नदी जाते समय का गीत)

लक्षिमण लिए बाण रामा हिरनिया मारै–2
पहली हिरनिया बागा मा मारिन, बागा बिच मारिन
मालिन के ओटे, रामा हिरनिया मारै–2। लक्षिमन.....।
दुसरी हिरनिया कुअन बिच मारिन, कुअन बिच मारिन
कहरिन के ओटे, रामा हिरनिया मारै–2। लक्षिमन.....।
तिसरी हिरनिया महल बिच मारिन, महल बिच मारिन
रनियन के ओटे, रामा हिरनिया मारै–2। लक्षिमन.....।

24 – देवी पूजन गीत (नई बहू आने पर देवी की पुजाई समय का गीत)

मइया विनती करू मैं दोऊ कर जोड़े–2
मइया पहली अरज मोरी सुन लीजै–2 मइया विनती.....
मइया दूसरी अरज मोरी सुनली जै–2
मोरे पाव की पायल अमर कीजै–2.....मइया विनती.....
मइया तिसरी अरज मोरी सुनली जै–2
मोरे हाथ चूड़ी अमर कीजै–2 मइया विनती.....
मइया चौथी अरज मोरी सुनली जै–2
मोरे गले का हरवा़ अमर कीजै–2 मइया विनती.....

25 – होरी गीत (वैवाहिक अवसर पर गाया जाने वाला होरी गीत)

बिजनैया चमा चम लौगे जड़ी–2
ठंडा सा पानी गरम कर लायो,
तुम सफरो न राजा मै मायके चली। बिजनैया.....
सोने के थाली में जैमना परोस्यौं,
तुम ज्योमो न राजा मै मायके चली। बिजनैया.....

2— सिर बाधे मुकुट खेले होरी–2

पहली होरी गया मा खेलिन
गया गजाधर की है जोड़ी। सिर बाधे.....।
दुसरी होरी वृन्दवन मा खेलिन
राधा कि"ान की है जोड़ी। सिर बाधे.....।
तिसरी होरी अयोध्या मा खेलिन
रामा सिया की है जोड़ी। सिर बाधे.....।

26 — कजरी गीत (सावन महीने में गाया जाने वाला गीत)

हरि रामा बेला फुलै आधीरात
चमेली भिनसारे रे हारी–2
हरि रामा ठण्डा सा पानी गरम कर लायो रामा–2
हरि रामा ससुरा सफरैं आधीरात
सास भिनासारे रे हारी । हरि रामा.....।
हरिरामा सोने के लोटा गंगा जल पानी रामा –2
हरिरामा ससुरा घुटै आधीरात
सास भिनसारे रे हरि । हरि रामा.....।
हरि रामा रूचि रूचि के मैं तो जेमना बनायो रामा।
हरे रामा ससुरा जेमैं आधीरात, सास भिनसारे रे हरि। हरि.....

27 — हिंदुली गीत (सावन महीने में गाया जाने वाला गीत)

लगत अशढ़वा बोले रे पापी मोरिला पै
मोरो मन लागै नईहरवा हो ना–2
आजी मोरी होती खबर मोरी करती पै
आजा दिहिन बिसराई हो ना।
माया मोरी होती खबर मोरी करती पै
बाबू दिहिन बिसराई हो ना।
भइया मोरे होतै खबर मोरी लेते पै
भाभी दिहिन बिसराई हो ना। लगत अशढवा.....।

आइये देखे–सुनें और पढें
–लिखे कुछ बेघंली के और भी लोकगीतो का संकलन

28 – बन्ना गीत

लै धनुश बन्ना ठाड़ोरी, कोई जोडी तो मिलाय दो–2
जोडी़ तो मिलाय दो, जोडी़ तो मिलाय दो,– लै धनुश.....
मॉथे बन्ना जी के मौरे भी सोहै–2
टिपकिन बिच सिया जानकी, कोई जोडी़ तो मिलाय दो,– लै धनुश.....
बन्ना जी के कानो मे कुंडल सोहे –2
झुमकिन बिच सिया जानकी , कोई जोडी़ तो मिलाय दो,– लै धनुश.....
.
अंग बन्ना जी के जामा सोहे –2
चुनरी के बिच सिया जानकी, कोई जोड़ी तो मिलाय दो,– लै धनुश.....
.
हाथ बन्ना जी के घड़िया सोहे–2
कंगन बिच सिया जानकी कोई जोडी़ तो मिलाय दो,– लै धनुश.....
लै धनुश बन्ना ठाड़ोरी, कोई जोडी तो मिलाय दो ।

29 – बधाई गीत

लालन के जनम दिन द"ाहरा मनाएगें–2
द"ाहरा मनाएगे दीवाली मनाएगें, रहे जिंदगानी तो होली मनाएगें।लालन के.....
...
लालन के जनम दिन मे ंसासू बुलाएगे–2
सासू बुलाएगे पिपरी पिसायेगें, रहे जिंदगानी तो अम्मा बुलायेगें। लालन के.....
.....
लालन के जनम दिन में जेठी बुलाएगें–2
जेठी बुलायेगें लड्डु बधाएगें, रहे जिंदगानी तो चाची बुलायेगें। लालन के.....
.....
लालन के जनम दिन मे ननदी बुलाएगें–2
ननदी बुलायेगे सोबरी पुतायेगें, रहे जिंदगानी तो बहना बुलायेगें। लालन के.....
.....
लालन के जनम दिन में देवरा बुलायेगें–2

देवरा बुलायेगें बंसी बजवायेगें, रहे जिंदगानी तो भइया बुलायेंगें। लालन के..........
....
लालन के जनम दिन द''ाहरा मनाएगे।

30 – देवी गीत

देवी पूजन चली भर सॉस रसीली मालिनियॉ–2
रॉछड़ गेरूआ गंगा जल पानी–2
अरे कंचन थाली सजाय रसीली. मालिनियॉ । देवी पूजन चली.............................
मेवा बतासा से भरगै डलिया–2
अरे रूचि–रूचि जेवना बनाय रसीली मालिनियॉ । देवी पूजन चली...........................
..
देवी पूजन चली भर सॉस रसीली मालिनिया।

31 – सोहाग गीत

अरे इतने दिनन केरी पाली रे चिरइया –2
पैं ले गये बिदे''ाया उड़ाय, रानी के सोहगवा–2
अरे आजा उनके रोमैं रूमाल मुख पोछै–2
पै आजी उनकी रोमैं निराधार , रानी के............................
अरे पापा उनके रोमैं रूमाल मुख पोछै–2
पै माया उनकी रोमैं निराधार ,रानी के.....................
अरे चाचा उनके रोमैं रूमाल मुख पोछै–2
पै भाभी उनकी रोमैं निराधार, रानी के.......................
अरे इतने दिनन केरी पाली रे चिरइया –2
पैं ले गये बिदे''ाया उड़ाय, रानी के सोहगवा।

32 – अंजुरी गीत

कोया गूथे मोती माला, कोया गूथे हार हो कि कोया गूथे हार हो की

कोया करे ढेंरिया के सोलह सिंगार हो । कोया गूथे मोती.......
माया गूथे मोती माला चाची गूथे हार हो कि–2
भाभी करै ढेरिया के सोलह सिंगार हो ।
कोया देखे मोति माला कोया देखै हार हो की–2
कोया देखे डेंरिया के सोलह सिंगार हो ।
सासू देखे मोति माला जेठी देखै हार हो कि–2
सइयां देखे डेरिया के सोलह सिंगार हो–2
कोया गूथे मोती माला..................................

33 – बन्ना गीत

उनके लाला के लिये कलम म"ायानी, बगल में किताब
ललन मोरे पढ़ने को जइहै रे, ललन मोरे पढने को जइहै रे–2
(1) उनकी मम्मी (माया) लिए कटोरन दूध
गलीन बिच ठाड़ निहारे रे–। उनके लाला लिए ....
(2) उनकी चाची लिए कटोरन दूध
गलीन बिच ठाड़ निहारे रे। उनके लाला लिए ....
(3) उनकी आजी लिये कटोरन दूध
गलीन बिच ठाड़ निहारे रे। उनके लाला लिए ....
.उनके लाला के लिये कलम म"ायानी, बगल में किताब
ललन मोरे पढ़ने को जइहै रे, ललन मोरे पढने को जइहै रे–2

34 – दादरा गीत (मुण्डन/कन्छेदन अवसर का)

हमसे जुलुम जेठानी करैं, बरजा राजा जेठ – 2
(1) आधी रात सासू पनिया को भेजैं–2
मटकी फोड जेठानी धरैं, बरजा राजा जेठ। हमसे जुलुम जेठानी करैं.......................
(2) आधी रात सासू पीसबे को भेजै–2
मुठिया तोड़ जेठानी धरैं, बरजा राजा जेठ। हमसे जुलुम जेठानी करैं.......................
(3) आधी रात सासू जेमना को भेजैं–2
बटुआ तोड़ जेठानी धरैं, बरजा राजा जेठ। हमसे जुलुम जेठानी करैं......................

हमसे जुलुम जेठानी करैं, बरजा राजा जेठ–2

35 – दादरा गीत

रात काहे रोये रे ललन तैं, बिहाने घुनघुनमा मागउवै–2
(1) ससुरे मे होती तो सासू से कहती –2
अम्मा से, अम्मा से कहत लजान्यौं, बिहाने .....रात काहे.....
(2) ससुरे मा होती तो जेठानी से कहती –2
चाची से, चाची से कहत लजान्यौं, बिहाने .....रात काहे.....
(3) ससुरे मा होती तो देवरानी से कहती –2
भाभी से, भाभी से कहत लजान्यौं, बिहाने .....रात काहे.....
(4) ससुरे मा होती तो ननदी से कहती –2
बहना से , बहना से कहत लजान्यौं, बिहाने .....रात काहे.....
रात काहे रोये रे ललन तैं, बिहाने घुनघुनमा मागउवै–2

36 – सोहाग गीत

अरे हली भाली डोलिया, सजाया मोरे बाबुल–2
पै चले जाब ससुरू के दे"ा, रानी के सोहगवा–2
अरे ससुरू के दे"ा न जया मोरी बेटी –2
पै मर जइहा भूखी या पियास, रानी के सोहगवां .....
अरे भूॅख सहि लेबै पियास सहि लेबै
पै सहबै न आजी जी के बोल, रानी के.....
अरे ससुरू के दे"ा न जया मोरी बेटी –2
पै मर जइहा भूखी या पियास, रानी के सोहगवां .....

अरे भूँख सहि लेबै पियास सहि लेबै
पै सहबै न माया जी के बोल, रानी के.....। अरे हलि भली डोलिया.....
.....।

37 – गारी गीत

बखरी तो भली बनवाया जनक जी, खिडकी लगवाया फुलवारी की हाजी,
आये सजन चारो भइय बराती दमक
रहे मुस्काई की हाजी हो। बखरी तो भली.....
पैर धोबाबन का कोपरी मंगाई ,जल तो मंगाई
गंगाजल की हाजी हो। बखरी तो भली.....
पातन पातन परगै पतरिया निरखै सीतल
सुकुमारी की हाजी हो। बखरी तो भली.....
बखरी तो भली बनवाया जनक जी, खिडकी लगवाया फुलवारी की हाजी,

38 – दादरा गीत (नचनहाई– मांगलिक अवसर पर महिलाओं के नृत्य का गीत)

कउनौ बरन के गजरा हो मोहि नीक न लागैं–2
मइके के नीक लागै बाग बगइचा –2
ससुरे के फूली फुलवरिया हो मोही नीक न लागे–2
कउनौ बरन.....
मइके के नीक लागै घर खपरैला–2
ससुरे के रंगीली महलिया हो मोही नीक न लागे।–2 कउनौ बरन के .....
.
मइके के नीक लागे अम्मा और बहना–2
ससुरे के सासु ननदिया हो मोही नीक न लागे। कउनौ बरन के .....
कउनौ बरन के गजरा हो मोहि नीक न लागैं।

39 – दादरा हास्य गीत

दिये गोल टोपी नजर मारे अपना–2
पनिया भरन गई संग गये अपना–2
फूट गई गागर फिसल गये अपना। दिये गोल टोपी.....
रोटिया बनाने गई संग गये अपना–2
फूल गई रोटी पिचक गये अपना। दिये गोल टोपी.....
सेजा सोबन गई संग गये अपना–2
खिसक गया सेजा उलट गये अपना–2 दिये गोल टोपी.....
दिये गोल टोपी नजर मारे अपना–2

40 – अंजुरी गीत

कोया गूथे मोती माला, कोया गूथे हार हो कि कोया गूथे हार हो की
कोया करे ढेंरिया के सोलह सिंगार हो
माया गूथे मोती माला चाची गूथे हार हो कि–2
भाभी करै ढेरिया के सोलह सिंगार हो
कोया देखे मोति माला कोया देखै हार हो की–2
कोया देखे ढेंरिया के सोलह सिंगार हो
सासू देखे मोति माला जेठी देखै हार हो कि–2
सइया देखे डेरिया के सोलह सिंगार हो–2
कोया गूथे मोतो माला.....

41 –बेलनहाई गीत

उअत के सुरज बहुत निक लागै अथवत छायी ललाई जी–2
बेटी का जनम बहुत निक लागैं, धन सम्पत्ति घर होई जी। उअत के सुरज.....
माया कहै बेटी नेरे बियहबैं, बाबुल काहे कुछ दूरी जी–2
भइया कहै बहिनी गंगा बियहबैं, भौजी न बोलय मुख बोल जी। उअत के सुरज.....
माया कहै बेटी जल्दी बुलउबै बाबुल कहै कुछ देरी जी–2। उअत के सुरज.....
उअत के सुरज बहुत निक लागै अथवत छायी ललाई जी–2

42 – बेलनहाई गीत

निहुर के गोरिया अंगना बटोरय
जोगिया ठार दुआर मोरे लाल –2
जोगिया–जोगिया न करा सजनी, लागौ मैं सजना तुम्हार मोरे लाल
जो तुम जोगिया मोरे सजवा लगत हो
सासू का तीरथ कराना मोरे लाल । निहुर के .....
जो तुम जोगिया मोरे सजना लगत हो
जेठी अलग करावा मोरे लाल । निहुर के.....
जो तुम जोगिया मोरे सजना लगत हो
ननदी को गमना करावा मोरे लाल। निहुर के गोरिया.....

43 – दादरा गीत

मोरे सइयॉ के महलिया लगे रे फुलवा –2
हमरे ससुर जी के तीन है लडिका –2
हॉ–हॉ ओतन्यों सुन्दर, गुइया ओतन्यों मा सुन्दर हमार बलमा–2 मोरे सइया .....
हमरे ससुर जी के तीन महलिया–2
हॉ–हॉ ओतन्यो मा सुन्दर ,गुइया ओतन्यो मा सुन्दर हमार महला–2 मोरे सइया ..
.....
हमरे ससुर जी के तीन हैं नतियॉ–2
हॉ–हॉ ओतन्यों मा सुन्दर, गुइया ओतन्यों मा सुन्दर हमार ललना–2 मोरे सइया .
.....
मोरे सइयॉ के महलिया लगे रे फुलवा–2

44 –बेलनहाई गीत

रामलखन तपसी दोनो भइया, साधू बने चले जाय मोरे लाल –2
चलते–चलते बागा मा पहुॅचे, मालिन उठी घबराय मोरे लाल ।
ठहरो–ठहरो ओ साधू भइया, गजरा गुहाय लिये जाव मोरे लाल। रामलखन तपसी....

तोर गुहा गजरा न लेबै मालिन, साधू धरम घट जाये मोरे लाल। रामलखन तपसी.....
चलते चलते ताला मा पहुॅचे, धोबिन उठी घबराय मोरे लाल।
ठहरो ठहरो ओ साधू भइया, कप ड़ा धुलाय लिये जाओ मोरे लाल। रामलखन तपसी.....
तोर धुबा कपड़ा न पहिनब धोबिनिया, साधू धरम घट जाय मोरे लाल।रामलखन तपसी..
चलते चलते कुअना मा पहुॅचे कहरिन उठी घबराय मोरे लाल।
ठहरो–ठहरो ओ साधू भइया, पनिया भराय लियो जाओ मोरे लाल। रामलखन तपसी....
तोर भरा पनिया न पीबै कहरिन, साधू धरम घट जाय मोरे लाल। रामलखन तपसी....
रामलखन तपसी दोनो भइया साधू बने चले जाय मोरे लाल ।

45 – दादरा गीत

घनी अमरइया कोयल कहॉ बोलय रे–2
सासू मागे लहगा ननद मागे चुनरी–2
सइयां मागे पागा रंगाय कहां पाऊ रे । घनी अमरइया.....
सास मागे कंगना ननद मागे चूड़ी–2
सइया मागे मुदरी गढाय कहॉ पाऊ रे । घनी अमरइया.....
सास मागे लौग ननद मागे लइची–2
साइया मागे बीरा रचाय कहॉ पाऊ रे। घनी अमरइया.....
सास मागे लड्डू ननद मागे पेंड़ा–2
सइया मागे बरफी जमाय कहॉ पाऊ रे। घनी अमरइया.....

46 – बेलनहाई गीत

फर गई अमिया लचक गई डलियॉ, को तोड़ै को खाय मोरे लाल ।
जो घर होते ननद के बिरना, वो तोड़त हम खाब मोरे लाल। फर गई अमिया.....
.....
चार महीना बरसा ऋतु आई, को देय छानी छबाये मोरे लाल। फर गई अमिया.....
.....
जो घर होते ननदी के बिरना, छानी देते छबाये मोरे लाल। फर गई अमिया.....
चार महीना गरमी ऋतु आई, को देय बिजनिया डोलाये मोरे लाल। फर गई अमिया.....
जो घर होते ननद के बिरना, देते बिजनिया डोलाय मोरे लाल। फर गई अमिया....
.....
फर गई अमिया लचक गई डलियॉ, को तोड़ै को खाय मोरे लाल।

47 – दादरा गीत

खपरइले के बिरले बॉस शयन पर बूंदा चुऐ – 2
ससुरा जो हाते ता धन के छबउते –2
ससुइया के कौन वि''वास, शयन पर बूंदा चुऐ – खपरइले के बिरल.....
जेठा जो होते ता धन के छबउते–2
जेठनिया के कउन वि''वास, भायन पर बूंदा चुए – खपरइले के बिरले.....
देवरा जो होते ता धन के छबउते–2
देवरनिया के कउन वि''वास, भायन पर बूंदा चुए – खपरइले के बिरले.....
ननदोइया जो होते ता धन क छबउते–2
ननदिया का कौन वि''वास, भायन पर बूंदा चुऐ – खपरइले के बिरले.....
खपरइले के बिरले बॉस शयन पर बूंदा चुऐ ।

48 – गारी गीत

बखरी तो भली बनवाया हो जनक जी, खिड़की लगवाया फुलवारी जी–2
आये सजन चारो भइया बराती, दमक रहे मुस्काई जी। बखरी तो भली.....
गोड़ धोबन का कोपरी मगाइन, जल तो मगाइन गंगा जल जी। बखरी तो भली....
.....
पांतिन–पांतिन पड़गै पतरिया, निरखै सीतल सुकुमारी जी। बखरी तो भली.....

एक–एक सखियॉ गारी सुनामैं , खात रहै मुस्काई जी। बखरी तो भली.....
बखरी तो भली बनवाया हो जनक जी, खिड़की लगवाया फुलवारी जी ।

49 – बेलनहाई गीत

आये मेहमान हमे अच्छे लगत हैं, काहै की सब्जी बनाऊ मोरे लाल – 2
कटहर बनाऊ मोहे अटहर लगत है, काहे की सब्जी बनाऊ मोरे लाल। आय मेहमान.....
आलू बनाऊ मोहे भालू लगत है, काहे की सब्जी बनाऊ मोरे लाल। आये मेहमान.....
करइला बनाऊ मोहि करूआ लगत है, काहे की सब्जी बनाऊ मोरे लाल। आये मेहमान..
परवर बनाऊ मोहि करवर लगत है, काहे की सब्जी बनाऊ मोरे लाल। आये मेहमान.....
आये मेहमान हमे अच्छे लगत हैं, काहै की सब्जी बनाऊ मोरे लाल

50 – बेलनहाई गीत

एजी हमरे ससुर जी के बाग बगइचा, फूल फुलै झर जाय –2
एजी कोया गलामै बेला रे चमेली, कोया लगामै अनार।
एजी कोया लगामै अंतर के बिरवा, बगिया महक रहि जाय। एजी हमरे ससुर.....
एजी रामा लगामै बेला रे चमेली, लक्ष्मण लगामैं अनार।
एजी सीता लगामै अंतर के बिरवा, बगिया महक रहि जाय। एजी हमरे ससुर.....
एजी काहे से सींचैं बेला रे चमेली, काहे से सीचैं अनार।
एजी काहे से सीचैं अंतर के बिरवा, बगिया महक रहि जाय। एजी हमरे ससुर.....
एजी गगरी से सीचैं बेला रे चमेली, लोटा से सीचैं अनार।
एजी सोने घइलना से अंतर के बिरवा, बगिया महक रहि जाय। एजी हमरे ससुर.....

51 – कजरी गीत

सखियॉ समझ के डालै जै माला, राम जी की समली सुरतियॉ ना ।
सोने के थाली में जेमना परोसैव
सीता समझ के जेमना जेवामय । राम जी की.....
सोने के लोटा गंगा जल पानी
सीता समझ के जलवा घुटामैं । राज जी की.....
लौग सुपाड़ी का बीरा लगायव
सीता समझ के बिरिया रचामैं। राम जी की.....
सखियां समझ के डालै जै माला, राम जी की समली सुरतिया ना

52 – दादरा गीत

हमरे हुये नन्दलाल हो, चली आना ननदिया –2
काठे का पलना न लाना ननदिया –2
चंदन के हमरे रिवाज हो, चली आना ननदिया। हमरे हुये नन्दलाल.....
लड़का बच्चा न लाला ननदिया –2
हमरे है गोदी मा लाल हो, चली आना ननदिया। हमरे हुये नन्दलाल.....
हमसे नेगा न माग्या ननदिया –2
हम तुमका झूमका देब हो , चली आना ननदिया। हमरे हुये नन्दलाल.....
हमरे हुये नन्दलाल हो चली आना ननदिया।

53 – दादरा गीत

रामा के बारी उमरिया हो, विकट बन कइसे के रहिहैं–2
जो मै जनत्यों रामा वन जइहै –2
वन ही मा बागा लगउत्यों। विकट बन कइसे.....। रामा के बारी.....
जो मै जनत्यों रामा वन जइहैं –2
वन ही मै कुटिया बनउत्यों। विकट बन कइसे.....। रामा के बारी.....
जो मै जनत्यों रामा वन जइहैं –2
वन ही मै ताला खोदउत्यों। विकट बन कइसे.....। रामा के बारी.....
जो मै जनत्यों रामा वन जइहैं –2
वन ही मा कुअना खोदउत्यों। विकट बन कइसे.....। रामा के बारी.....
जो मै जनत्यों रामा वन जइहैं –2
वन ही मा भक्ति रमाउत्यों। विकट बन कइसे.....। रामा के बारी.....
रामा के बारी उमरिया हो, विकट बन कइसे के रहिहैं।

54 – दादरा गीत

वन बोलय मुरइली राम निदिया न लागै रे –2
रह रह मुरइली मै तोहि बतइहौं, बतइहौं ससुर जी से आज। निदिया न.....
रह रह मुरइली मै तोहि बतइहौं, बतइहौं जेठ जी से आज। निदिया न.....
रह रह मुरइली मै तोहि बतइहौं, बतइहौं देवर जी से आज। निदिया न.....
रह रह मुरइली मै तोहि बतइहौं, बतइहौं सइयां जी से आज। निदिया न.....
वन बोलय मुरइली राम निदिया न लागै रे ।

55 – दादरा गीत

धीर धरो सवर करो राजा, मोरी बाजे पयलिया –2
सास मोरी घर मा ससुर मोरे घर मां–2
ससुरा की लाज राखो राजा। मोरी बाजे पयलिया.....। धीर धरो .....
जेठानी मोरी घर मा जेठ मोरे घर मां–2
जेठा की लाज राखो राजा। मोरी बाजे पयलिया.....। धीर धरो .....
देवरानी मोरी घर मा देवर मोरे घर मां–2
देवरा की लाज राखो राजा। मोरी बाजे पयलिया.....। धीर धरो .....
धीर धरो सवर करो राजा, मोरी बाजे पयलिया ं।

56 – कजरी गीत

सखियॉ चला चली दर्शन का बृज मा झूल रहे नंदलाल ।
कोया झूलै कोया झुलामे–2
कोया खींचै डोर रामा – 2 ं। सखियॉ.....
रामा झूलै लक्ष्मण झुलामैं – 2
हनुमत खींचै डोर रामा – 2 । सखियॉ चला.....
ब्रम्हा झूलै विष्णु झुलामैं – 2
शंकर खींचै डोर रामा – 2 । सखियॉ चला.....
राधा झूलै रूकमिन झुलामैं – 2
ललिता खीचै डोर रामा – 2 ं। सखियॉ चला.....

57 – गैलहाई गीत

गेंदा का फूल कहां पाऊॅ हो, राजा मोरे गेंदा का बिरझै –2
वह फूल फूलै मोरे ससुरा जी के बगिया –2
सासरानी टोरन न देय हो, राजा मोरे.....। गेंदा का फूल.....
वह फूल फूलै मोरे जेठानी जी की बगिया–2
जेठानी टोरन न देय हो, राजा मोरे.....। गेंदा का फूल.....
वह फूल फूलै मोरे देवरा जी की बगिया–2
देवरानी टोरन न देय हो, राजा मोरे.....। गेंदा का फूल.....
गेंदा का फूल कहां पाऊॅ हो, राजा मोरे गेंदा का बिरझै ।

58 – दादरा गीत

कट कट भीष गिरै धरनी मा, भुजा गिरै मोरे आंगन मॉ –
विधवा हो गई बचपन मॉ। –2
आग लगै तोरे बागा बगइचा, आग लगै राजधानी मॉ। विधवा हो गई.....
आग लगै तोरे महल अटरिया, आग लगै राजधानी मॉ। विधवा हो गई.....
आग लगै तोरे कुइयॉ बउलिया, आग लगै राजधानी मॉ। विधवा हो गई.....
कट कट भीष गिरै धरनी मा, भुजा गिरै मोरे आंगन मॉ –
विधवा हो गई बचपन मॉ।

59 – सोहर गीत

वृन्दा रे वन के रहइया चंदन वन जइहा, चंदन वन जइहा हो–
अब लाय लालि पलगरया, ललन पहुडउबै ललन पहुडउबै हो। वृन्दा रे वन.....
केही चाही लाली पलगरिया, केही रे दोनो मोरिला हो –
अब केही चाही सोना परेउना, केही रे कठपुतली हो– 2। वृन्दा रे वन.....
ललना का लली पलगरिया , राजन दोनो मुरिला हो –2
अब देवरा का सोने परेउना , ननद कठपुतली हो –2। वृन्दा रे वन.....
डोलै लागी लाली पलगरिया, बोलय रे दोनो मुरिला हो –2
अब पढ़ै लागे सोने के परेउना, नाचे रे कठपुतली हो –2। वृन्दा रे वन.....
वृन्दा रे वन के रहइया चंदन वन जइहा, चंदन वन जइहा हो ।

60 – भोले बाबा गीत

भोलन तुम्हरे लम्बे दे"ावा हो,
अरे लम्बे दे"ावा हो मोरी फेंकी नजर नहीं जाय हो। भोलन तुम्हरे.....
पवनसुत धीरे बहे हो,
अरे धीरे बहे हो, मोरे यात्री का निबल शरीर हो। । पवनसुत..... भोलन तुम्हरे.....
पहड़िया मा रामा लड़े हो,
अरे रामा लड़े हो, और लंका मा लड़े हनुमान हो। पहड़िया मा ..... भोलन तुम्हरे.....
भरत जी से जातै कहे हो,
अरे जातै कहे हो,मोर लक्षिमण के लगी भाक्तिबाण हो। भरत जी से.....भोलन तुम्हरे.....

61 –कुँआ पूजन गीत

ऊपर बदर घुमडाय हो, नीचे गोरी पनिया का निकली–2
जाई कहे मोरे राजा ससुर से,
अंगने मा कुंइया खोदाये हो। ऊपर बदर घुमडाय.....
जाई कहे मोरे राजा जेठ से,
अंगने मा कुंइया खोदाये हो। ऊपर बदर घुमडाय.....
जाई कहे मोरे देवर जी से,
अंगने मा कुंइया खोदाये हो। ऊपर बदर घुमडाय.....
ऊपर बदर घुमडाय हो, नीचे गोरी पनिया का निकली

62 – सोहर गीत

कहना उपजी हैं बेलिया त कहना चमेलिया, त कहना चमेलिया हो आवे
कहना उपजी झलरिया, झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....। 2
बागा मॉ उपजी है बेलिया त अँगने चमेलिया त अँगने चमेलिया हो आवे
अंचला मॉ उपजी झलरिया झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....। कहना उपजी...
काहे मॉ सीचौं मै बेलिया त काहेन चमेलिया त काहेन चमेलिया हो आवे
काहे मॉ सीचौं झलरिया, झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....। कहना उपजी...
दुधवा मॉ सीचौं मै बेलिया त दहिया चमेलिया ता दहिया चमेलिया हो आवे
तेलवा से सीचौं झलरिया झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....। कहना उपजी...
काहे मा तोड़ौ बेलिया त काहे मॉ चमेलिया काहे चेमलिया हो आवे
कहो मां लेव झलरिया झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....। कहना उपजी...
.टुकनी मा तोड़ौ मै बेलिया ता अँचला चमेलिया ता अँचला चेमलिया हो आवे

लोई मा लेव झलरिया झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो..... । कहना उपजी....
कहना उपजी हैं बेलिया त कहना चमेलिया, त कहना चमेलिया हो आवे
कहना उपजी झलरिया, झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....।

63 – कजरी गीत

चला सखी झूलन केरि भई बेरिया, मधुवन बोलन लागे मोर
कौन काठ का बना हिंडोलना–2
काहेन लागी डोर रामा । चला.....
चंदन काठ का बना हिंडोलना–2
रे''ाम लागी डोर रामा। चला सखी.....
कोया झूलै कोया झुलामैं–2
कोया खींचै डोर रामा । चला सखी.....
राधा झूलै कृश्ण (''याम) झुलामैं–2
सखियॉ खींचै डोर रामा। चला सखी.....

64 – कुऑ पूजन गीत

जल कैसे भरौं जमुना गहरी, जमुना गहरी–2
ठाढ़े भरौं चूनर सरकत है–2
निहुरे भरौ भीगे चुनरी – भीगे चुनरी। जल कैस भरौं.....
धीरे चलौं घर बालक रोबै–2
तेज चलौं छलकै गगरी – छलकै गगरी। जल कैस भरौं.....
जल कैसे भरौं जमुना गहरी, जमुना गहरी।

65 –भगत गीत

बेर बेर बरजौं तोही रे मलिनिया,
गली बिच गमला न बोए होमा। मइया गली बिच गमला न बोए होमा। –2

अउती होइहै भाारदा माता–2 गमला गरज उड़ जाय होमा। बेर बेर.....
अउती होइहै काली माता–2 गमला गरज उड़ जाय होमा। बेर बेर.....
अउती होइहै दुर्गा माता–2 गमला गरज उड़ जाय होमा। बेर बेर.....

66 – दादरा गीत

कान्हा मटकी न फोड़ो डगरियन में – 2
जो कान्हा तुम्हें भूख लगी हो–2
कान्हा जेवना रखो है रसोइयन मे। कान्हा मटकी न.....
जो कान्हा तुम्हें प्यास लगी हो–2
कान्हा जलवा रखो है गगरियन मा। कान्हा मटकी न.....
जो कान्हा तुम्हे बंसी बजानी हो–2
कान्हा मुरली रखी है तोरे कमरिया मे–2। कान्हा मटकी न...

67 –सोहाग गीत

अरे सीता बियाहन चले राजा द''ारथ–2
पै चली आमै गंगे की धार रानी के सोहगवा –2
अरे राजा द''ारथ जैसे ससुरा मैं पायौं–2।
और पायौं कौ"ाल्या जैसी सास रानी के सोहगवा। अरे सीता.....
अरे लक्षिमण भइया जइसन देवरा मै पायौं–2
पय वर पायौं भगवान रानी के सोहगवा। अरे सीता.....
अरे एक हाथे लोटा दूसर हाथे गजरा–2
पै चली आमै देवी हमार रानी के सोहगवा। अरे सीता.....
अरे नगर आयोध्या एक राज्य मैं पायौं–2
अरे अचल रहे अहिबात रानी के सोहगवा। अरे सीता..... अरे सीता बियाहन ।

68 –बेलनहाई गीत

ऐजी सीता बियाहन चले राजा द''ारथ धरती का लागे है उमंग–2
ऐजी माया मोरी दिहिन है नौमन सोनमा, बाबुल मोरे लहर पटोर। ऐजी सीता.....
...
ऐजी भइया मोरे दिहिन है सुरंग चुनरिया, भौजी सेंदुर भरी मांग। ऐजी सीता.....
.....
ऐजी माया केरे सोनमा नौ दिन पहिरयन, फटगै लहर पटोर । ऐजी सीता.....
ऐजी भइया चुनरिया छिनर छुन जइहै रह गई सेंदुर भरी मॉग। ऐजी सीता.....
ऐजी माया मोरी रोमैं अलियन गलियन, पापा मोरे रोमै दरबार। ऐजी सीता.....
ऐजी भइया मोरे रोमैं डोलिया के आस–पास, कहा चली बहिनी हमार। ऐजी सीता.....
ऐजी सीता बियाहन चले राजा द''ारथ, धरती का लगी है उमंग। ऐजी सीता.....
.
ऐजी सीता बियाहन चले राजा द''ारथ धरतो का लागे है उमंग–2

69 –सोहर गीत

आधे तलवा मा नाग ता आधे मा नागिन ता आधे मा नागिन हो आबा
आधा तलाब मोरा सूना ता एक कमल बिना, एक कमल बिना हो.....। आबा.....
आधे ओसरिया मा गोपी बइठे आधे मा गोपिया ता आधे मा गोपिया हो आबा।
आधी ओसरिया मोरी सूनी ता एक ननद बिना एक ननद बिना हो.....। आबा.....
जो सुन पाइन बिरना ता मिचिक दिहिन बटुवा मिचिक दिहिन बटुवा हो आबा।
उगिल दिहिन पान ता पान का बीरा, ता पान का बीरा हो .....। आबा.....
घोड़े पीठ भये है सवार चले बहिनी लेबामैं ता बाहिनी लेबामै हो .....। आबा.....
आधे तलवा मा नाग ता आधे मा नागिन ता आधे मा नागिन हो आबा।

पंजीयन क्रमांक - 5192/03

7898438580
Phone : 07672-228007
Mobile : 9329429839

प्रान्तीय जागरूकता संस्थान

मध्यप्रदेश

R-256 सिविल लाइन, जिला-सतना, मध्यप्रदेश

पत्र क्र. 694 /प्रा.जा.सं. दिनांक 27-08-2015

प्रति,

श्रीमान निदेशक / संचालक महोदय
संगीत नाटक अकादमी, रबीन्द्र भवन फिरोजसाह रोड, नई दिल्ली

विषय :– अकादमी के **I.C.H./** भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण स्कीम 2014–15 के तहत सम्पन्न हुए कार्यक्रम का प्रगति प्रतिवेदन प्रेषित करने बावत।

संदर्भः–1 – संगीत नाटक अकादमी का पत्र क्रमांक **28-6 / ICH- Scheme / 59/2014-15 / 11290 DATE 2-2-2015** के अनुसार।
2 – संगीत नाटक अकादमी का पत्र क्रमांक **28-6 / ICH- Scheme / 26/2014-15 / 12736 DATE 12-03-2015** के अनुसार।

महोदय,

संगीत नाटक अकादमी द्वारा संदर्भित पत्र अनुसार भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण स्कीम **(I.C.H.)** 2014–15 अंतर्गत के प्रान्तीय जागरुकता संस्थान का स्वीकृति प्रस्ताव जिसका विषय – हमारी कहावतें/लोकोक्तियां एवं लोकगीत पर निर्देशानुसार उक्त आयोजन के सम्पन्न होने पश्चात कार्यक्रम का सम्पूर्ण गतिविधियाँ, प्रगति प्रतिवेदन विधिवत प्रारूप मे तैयार किया जाकर, संलग्न चाहे गए अन्य आवश्यक सहपत्रो के सहित अग्रिम कार्यवाही हेतु सादर सम्प्रेषित है।

भवदीय इन्द्रवती
इन्द्रवती शुक्ला
अध्यक्ष
प्रान्तीय जागरूकता संस्थान, (म.प्र.)

संलग्न :–

1. प्रगति प्रतिवेदन प्रारूप में। पृ: 1 से 7
2. आमंत्रण कार्ड व प्रशंसा पत्र की मूल कांपी पृ 8 से 10
3. कार्यक्रम के फोटो ग्राप्स की मूल प्रतियां। पृ. 11 से 34
4. समाचार पत्रों की कटिंग्स की मूल प्रतियां। पृ: 35 से 85
5. फोटोग्राप्स, वी.डि.ओ. एवं अन्य डाटा सी0डी0 में। Uploading के बाद
6. कहावतें/लोकोक्तियां एवं लोकगीतो का लिखित संकलन हार्ड कांपी एवं डाटा सी0डी0 में। 86 से 106 एवं 107 से

कार्यालय प्रान्तीय जागरूकता संस्थान

सिविल लाइन, सतना म.प्र.

I.C.H./ भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण स्कीम 2014–15 के तहत सम्पन्न हुए कार्यक्रम का विन्दुवार प्रतिवेदन

1.	संस्था का नाम	प्रान्तीय जागरुकता संस्थान, सतना (म0प्र0)
2.	संपर्क व्यक्ति कानाम	इन्द्रवती शुक्ला मो0 न0– 7898438580
3.	संस्था का पता	आर– 256(टी. वी. टावर के पास)सिविल लाइन, सतना (म0प्र0)
4.	कार्यक्रम का विषय	हमारी कहावतें/लोकोक्तियां एवं लोकगीत
5	रिर्सच का उद्देश्य संक्षिप्त मे	प्रदर्शन व प्रलेखन के माध्यम से जहां एक ओर सांस्कृतिक परंपराओं का सुदृढ़ीकरण उनका संरक्षण, संवर्धन के साथ–साथ उन्हे सशक्त लोकप्रिय बनाने और लोकरुचि को बढाते हुए उन्हे सुरक्षित व ब्यवस्थित करने एवं ब्यावसायिक रूप से बढ़ावा देना। वहीं गौरवशाली सांस्कृतिक विरासतों को सहेजना है और उसमें श्रद्धा, प्राण शक्ति तथा अनुभव को मिलाकर भारतीय संस्कृति,सभ्यता व संस्कारों से युक्त विकास भावी पीढ़ी के हांथों सौंपना है।
6.	संस्था द्वारा आयोजित/सम्पन्न कार्यक्रम विवरण A ग्रामीण एरिया वर्क व टाइम	गतिविधियां ग्रामीण एरिया मे ========== **प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम** 7 अप्रैल 2015 ग्राम पंचायत भवन मझगवां भटठा ,जनपद पं0–सोहावल **प्रलेखन व प्रदर्शन कार्यक्रम** 12 मई 2015 ग्राम तुरकहा , जनपद पंचायत – उचेहरा जि0 सतना **ग्रामीण युवाओं/युवतियों की कार्यशाला =2** 29 मार्च, 2015 ग्राम पंचायत– रामस्थान, जनपद पं0 –सोहावल 12 अप्रेल, 2015 ग्राम मतहा, जनपद पं0–रामपुर बाघेलान जि0 सतना **बृद्धजन/वरिष्ठ नागरिकों का लघु शिविर =2** 03 मई, 2015 ग्राम सगमा, जनपद पंचायत –सोहावल, जि0 सतना 17 मई, 2015 ग्राम गंगबरिया, जनपद पं0 – नागौद, जि0 सतना **कार्यकम लोक प्रथा एवं लोक रस्मे =2** (कामकाजी घरेलू महिलाओं का) 24 मई ,2015 ग्राम रिछहरी, जनपद पं0 रामपुर बाघेलान जि0 सतना 31 मई, 2015 ग्राम गोबरांव, जनपद पं0 – उचेहरा जि0 सतना **छात्राओं का प्रत्यक्ष प्रदर्शन व प्रतियोगिता** 10 अगस्त, 2015, मैहर जि0 सतना म0प्र0 **ग्राम चौपाल/ग्राम सभा कैम्पेन =2** (किसान एवं खेतिहर मजदूरो की) 07 जून 2015 ग्राम पंचायत बराखर्दु जनपद पं0 –मैहर जि0 सतना 13 जून, 2015 ग्राम लोहरौरा, जनपद पं0 – उचेहरा जि0 सतना

क्रमसः ...2....पर

इन्द्रवती

अध्यक्ष

प्रान्तीय जागरुकता संस्थान, (म.प्र.)

		महिला लोक कलाकारो का **कला प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम = 2** 18 जून, 2015 ग्राम –कैमा , जनपद पं0 –सोहावल, जि0– सतना 21 जून, 2015 ग्राम –देउरा मोलहाई, ज0 पं0–रामनगर, जि0– सतना **पुरुष कवियों व लोक कलाकारो का कला प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम = 2** 28 जून, 2015 ग्राम –घुइंसा, जनपद पं0 –अमरपाटन, जि0– सतना 05 जुलाई, 2015 ग्राम –भाद, जनपद पं0–सोहावल, जि0– सतना
7.	आयोजित/सम्पन्न कार्यक्रम विवरण **B** शहरी **एरिया वर्क व टाइम**	गतिविधियां शहरी एरिया मे ==================== **सम्पन्न हुए, प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम/आयोजन का विवरण** **लोकरंजन समारोह** दिनांक 23 मार्च, 2015, बालाजी गार्डेन, स्वामी चौक, सतना **प्रलेखन कार्यक्रम** दिनांक 20 अप्रैल 2015 ,मारूती नगर, सतना **स्कूली छात्र/छात्राओं का प्रत्यक्ष प्रदर्शन वप्रतियोगिता= 2** 13 जुलाई, 2015, मां शारदा कान्वेंट सकूल, मारूती नगर सतना 16 जुलाई, 2015, सरस्वती शिक्षा मंदिर, गढिया टोला जि0सतना **महिला लोक कलाकारो का कला प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम** 19 जुलाई, 2015 को मुख्तियार गंज सतना **पुरुष कवियों व लोक कलाकारो का कला प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम** 26 जुलाई 2015 को बगहा सतना, जि0 सतना **खण्ड स्तरीय छात्रों का प्रत्यक्ष प्रदर्शन व प्रतियोगिता** 05 अगस्त, 2015 को उचहरा जिला– सतना म0प्र0

क्रमसः .3....पर

अध्यक्ष
प्रान्तीय जागरूकता संस्थान, (म.प्र.)

8.	अतिथि विवरण	**उपरोक्त आयोजन मे पधारे विशेष अथिति –** श्रीमती सुधा सिंह – अध्यक्ष – जिला पंचायत सतना, म0प्र0 श्री उमेश प्रताप सिंह – सभापति– वन समिति जिला पंचायत सतना श्री नारायण गौतम – जिला अध्यक्ष –अधिवक्ता संघ, जिला सतना श्रीमती शांति तिवारी – पार्षद– नगर पालिक निगम सतना श्री सतीश शर्मा जी – जिला उपाध्यक्ष– भारतीय जनता पार्टी सतना श्री सौरभ नायक – युवा मोर्चा संगठन प्रभारी– भाजपा सतना श्रीमती राजकुमारी शुक्ला – जिला मत्री– भाजपा महिला मोर्चा सतना श्रीमती नीता सोनी – जिला अध्यक्ष – भाजपा महिला मोर्चा सतना श्रीमती शुषमा गुप्ता – पूर्व पार्षद – नगर पालिक निगम सतना श्रीमती संध्या उर्मलिया – वरिष्ठ महिला समाजसेवी जिला सतना श्री रविशंकर पयासी – वरिष्ठ समाजसेवी श्री कमलेश गुप्ता – समाजसेवी डा0 रश्मि सिंह – उपाध्यक्ष – जिला पंचायत सतना श्रीमती प्रभा बागरी – सदस्य – जिला पंचायत सतना श्री पुष्पराज बागरी – पूर्व उपाध्यक्ष – जिला पंचायत सतना श्रीमती जान्हवी त्रिपाठी – भाजपा नेत्री वरिष्ठ महिला समाज सेवी डा0 अरूणेन्द्र सिंह – वरिष्ठ समाज सेवी श्री पवन कोल – सरपंच – ग्राम पंचायत भवन मझगवां भटठा श्री नारायण प्रसाद त्रिपाठी– संचालक – विनायक एजुकेशन सोसायटी नोट :–उपरोक्त के अतिरिक्त आयोजन के दौरान संस्थान के कार्यकर्ताओ व कलाकारो से साथ–साथ काफी संख्या मे गणमान्य नागरिक व स्थानीय जन प्रतिनधि एवं अन्य विशेष जनो की उपस्थित उल्लेखनीय रही है।
9.	प्रस्तुतीकरण का स्वरूप :–	कार्ययोजनानुसार संस्थान के कर्मचारियो द्वारा सुनिश्चित एरिया मे भ्रमण व जनसंपर्क के साथ–साथ बैनर पंपलेट एवं आमंत्रण व समाचार पत्रों तथा शैक्षिक सामग्रियों का निर्माण व निःशुल्क वितरण के माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण स्कीम (I.C.H.) के तहत गतिविधियों के लिए चयनित विषय कहावतें/लोकोक्तियां एवं लोकगीत के ब्यापक महत्व का प्रचार–प्रसार व वातावरण निर्माण करते हुए टारगेट ग्रुप के समायोजन से विषय वस्तु की बारीकियो का ध्यान रखते हुए उनका संकलन व लेखन प्रलेखन करते हुए नजदीकी बसाहटो के सेक्टर मे विशेष आयोजन के लिए सुनिश्चित समय,स्थान व तिथि को दर्शक समुदाय व लक्षित समूह की उपस्थिति मे सम्पन्न हुए विशेष प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम का विधिवतसुभारम्भ पश्चात प्रथम चरण में विन्ध्यांचल की कहावतें/लोकोक्तियां एवं लोकगीत पर प्रतिभागियों द्वारा लेखन किया गया एवं प्रलेखन पश्चात प्रतिभागियों ने उन कहावतो के शब्दों में समाए अर्थ व भाव को स्पष्ट करने के साथ–साथ उसे विस्तार देते हुए, उसके आस–पास के वातावरण इतिहास और जीवनशैली को उजागर किया तथा लोकगीत पर प्रतिभागियों ने संस्कार गीत व मांगलिकगीत तथा मौसमी एवं पर्व–त्योहार अवसरों पर आधारित बहुरंगी पारंपरिक लोकगीतों की मौलिक प्रस्तुतियो का रोचक प्रर्दशन किया गया।.....

क्रमसः .4....पर

अध्यक्ष
प्रान्तीय जागरूकता संस्थान, (म.प्र.)

		.विषय आधारित विभिन्न गतिविधियों मे महिला एवं पुरुष कला प्रतिभागियो द्वारा समाज मे मनुष्य के जन्म सेलेकर मृत्यु के पूर्व तक के विविध संस्कार एवं मांगलिक अवसर पर गाए जाने वाले पारंपरिक गीतो जैसेः—जन्म केसमयं शोहर , दादर, छठी, बरहों ,मुडंन, कन्छेदन, द्वारचार,अंजुरी,बनरा,विवाह, गारी विदाई ,गैलहाई आदि अवसरो पर गाये जाने वाले मौलिक गीतो लेखन तथा लोक वाद्यो की संगत के साथ लोकधुन में विधिवत साज वाज व आवाज के साथ गायन की अनूठी प्रस्तुति दी गई जो अपनें आप में विशिष्ट रही तथा भौतिकताएवं आधुनिकता के इस दौर में विलुप्तता की कगार पर खड़ी भारत की इन तमामअमूर्त सांस्कृतिक विरासतो और विविध सांस्कृतिक परम्पराओंके महत्व का बोध कराने वाली रही है जिनको सुनकर परिसर भा विभोर होगया तथा उपस्थित जनो नें प्रशंसा की। संस्थान द्वारा प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह आकर्षक पुरूस्कार/उपहार तथा नकद राशि से सम्मान करने पश्चात आयोजन मे उपस्थित स्थानीय अनुभवी जनो व संस्थान के विषय विशेषज्ञो व आमंत्रित अतिथियों नें विंध्य के विभिन्न अंचलों में भी आई0सी0एच0 के तहत ज्ञान की वाचिक परम्परा की सम्पदा कथा, गाथा, लोकोक्तियां/कहावतों, मुहावरों व लोकगीतो के कई अलिखित भाव तथा भाषा के रूप में जो लोक जीवन में सांसों की तरह मौजूद है, इनमें जीवन का जो ज्ञान रचा बसा है, उसकी उपयोगिता और महत्व तथा आवश्यकता को देखते हुए विरासत में मिली इस बेश कीमती सास्कृतिक पूंजी को आयोजनो के माध्यम से आने वाले कल (भावी पीढ़ी) के लिए सहेज कर रखने व भावी पीढ़ी के हांथो में सौपने का पुनीत कार्य करने का समाज को संदेश दिया गया है।
10.	कार्ययोजना पूर्णता की दिशा मे	विषय विशेषज्ञो ने लोक सांस्कृतिक विधाओं की उपयोगिता, महत्व तथा परंपरिक लोक विधाओं के संरक्षण संवर्धन के महत्व के विषय पर विचार व्यक्त करते हुए विस्तार पूर्वक बताया कि मूर्त तथा अमूर्त लोक संस्कृतियां न सिर्फ समाज में स्वथ्य मनोरंजन की साधन हैं बल्कि इनका समागम देश व समाज को जोड़ता है तथा शक्ति प्रदान करता है। समारोहों के माध्यम से संस्कृतियों के आदान प्रदान की इस धनी परंपरा को विकसित करना अब बहुत जरूरी हो गया है। दुनिया जब तेज गति से भाग रही हो और सारे संबंध और सरोकार औपचारिक होते जा रहे हो , समाज की लोक परंपराए व कला संस्कृति जिन्दगी का आनंद है उनमें जो सादगी और सरोकार है वह आज भी जीवन्त है तथा जहा इन्सान ही नही बल्कि प्रकृति, जीव—जन्तु और एहसास के बीच गहरा अंर्तसंबंध है। कहावतो व लोक गीतो का व्यापक संसार है, इनमें सार तत्व मौजूद है। आयोजन के माध्यम से ऐसी सांस्कृतिक विरासत को आम जन मानस के सामने लाकर लोक सांस्कृतिक इतिहास की झलक समाज को सुनाने, दिखाने व समझाने का अनूठा व अद्भुत काम हुआ हैं। और अंत में प्रतिभागी कलाकरो एवं अतिथियो तथा संस्थान के सहयोगियो का स्वल्पाहार तथा विदाई की गई।

क्रमसः ...5....पर

अध्यक्ष
प्रान्तीय जागरूकता संस्थान, (म.प्र.)

11.	निस्कर्ष	परियोजन से सामाज के सभी वर्ग के प्रतिभागियो को अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित व प्रमाणित करने का उपयुक्त एवं सम्मान जनक मंचीय अवसर मिला व विविध भारतीय लोक सांस्कृतिक मूल्यों के सुदृढ़ीकरण के साथ साथ संस्कृति साहित्य प्रेमी समाज को स्वस्थ्य व जीवन्त मनोरंजन से युक्त संदेश प्रेरणा अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित व प्रोत्साहित करने की मिली है बात चाहे भूगोल या इतिहास की हो, चाहे शक्ति और भक्ति की हो अथवा फिर कला या संस्कृति की, भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों की जितनी विविधता यहां विंध्यांचल में देखने को मिलती है,शायद ही कहीं और मिले। लोक भाषा सिर्फ लिखने की बोलने की नही बल्कि जीवन जीने की भाषा है। इसे म्यूजियम में सजाने के बजाय सहेजने उसे जिन्दा रखने व उन्नतशील बनाने की जरूरत है। उपरोक्तानुसार छोटी–छोटी गतिविधियो व कार्यशाला के माध्यम से विंध्य अंचल मे (आई0सी0एच0) भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के तहत परियोजना गत लिए गए विषय हमारी कहावते लोकोक्तियां एवं लोकगीत जो भारतीय संस्कृत का अहम अंग है यह कार्ययोजना एक बड़े सोध के रूप में सफल होने जा रही है। कार्ययोजना के दौरान विंध्य की प्राचीन संस्कृति के दर्शन हुए हैं अलग–अलग क्षेत्रों मे अलग–अलग संस्कृतियों के नाम रूप तथा भाव भाषा की अमूर्त ज्ञान पद्धतियां हैं जो देखने सुनने व सहजने को मिली हैं। इन गतिविधियों के माध्यम सें सांस्कृतिक चेतना का विकास होता है और वह एक पीढी से दूसरी पीढ़ी को सहजता के साथ हस्तांतरित होती रहती है, भारत गावों का देश है भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराए गांवो में ही रचती बसती है, आज जहां एक आवज में पूर गांव इकट्ठा हो जाता है जहां खुसी और गम के मौके में गांव सिकुड़ कर एक परिवार बन जाता है वहां भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासतें स्पष्ट दिखाई देने लगती हैं। हमारी समाजिक पहचान की मूल आधार पौराणिक लोक सांस्कृतिक विधाएं जो दिनो दिन आधुनिकता की चपेट में आती जा रही हैं, संरक्षण संवर्धन के अभाव में इनका निरंतर अवमूल्यन होता जा रहा है। पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध से प्रभावित होकर विलुप्तता की कगार पर खड़ी अपनी अमूल्य पारंपरिक सांस्कृति विरासतों के प्रति आम जनमानस की बढती हुई अरूचि को दृष्टिगत रखते हुए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण एवं सम्वर्धन हेतु विंध्य की अमूर्त मौलिक संस्कृति के प्रति आम जनता में उत्कंठा/आकषर्ण पैदा करने के साथ ही भारतीय अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्य बनाये रखने की दिशा मे यह काम हो रहा है। आई0सी0एच0 के तहत मध्य प्रदेश के विभिन्न अंचलों विंध्यांचल की अमूल्य बहुरंगी संस्कृति की अपनी गौरवशाली परंपरा है, और उस परंपरा की हिफाजत करने उसका संरक्षण, प्रोन्नयन और प्रसार करने व इन विविध विधाओ को तलासने तरासने तथा उन्हे सहेजने का भी काम हो रहा है। उपभोक्ता वादी संस्कृति सीधे मानवीय मूल्यों पर प्रहार कर रही है और व्यक्ति को व्यक्ति से अलग भी । ऐसे दौर में अमूर्त साहित्य एवं सांस्कृतिक विरासतों के सरंक्षण संवर्धन की दिशा में काम करनें की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

क्रमसः ...6....पर

अध्यक्ष

प्रान्तीय जागरूकता संस्थान, (म.प्र.)

12	**कार्यक्रम का प्रभाव**	दर्शको पर कार्यक्रम का सकारात्मक प्रभाव पड़ा तथा लोग खुश जिज्ञासु एवं उत्साहित व आनंदित नजर आए। लोगो ने चहुमुखी जानकारी प्राप्त की।
13.	**मीडिया का सहयोग**	स्थानीय समाचार पत्रो के संवाददाता कार्यक्रम में सामिल हुए तथा कार्यक्रम की खबर का ऐतिहासिक व बेहतरीन कवरेज भी किया गया। अखबार की कटिंग्स ... **संलग्न है।**
14.	**कार्यक्रम के बाद लोगों की प्रतिकृया**	1. भविष्य में उपरोक्तानुसार गतिविधियां करने की मांग । 2. कार्यकर्ताओ को चाय नास्ता पर अपने घर ले जाने का आमंत्रण। 3. भावी कार्यक्रमों में बढ़कर भाग लेने व सहयोग प्रदान करने की मंशा। 4. संस्था के पदाधिकारी व कलाकारो के नाम, पते एवं फोन नंबर की जानकारी चाही। **5.** कार्यक्रम की प्रशंसा करने के लिए। **6.** धन्यवाद व्यक्त करने के लिए। **7.** संस्था से जुड़ने के लिए लोगो ने इच्छा जाहिर किया।
15.	परियोजना मे अब तक **की व्यय राशि–**	**लगभग = रू0 1,70,000/–(एक लाख सत्तर हजार रुपये)**
16.	**प्रतिवेदन में निम्न संलग्न हैं।** **अ.** कार्य प्रतिवेदन	**हां**
	ब. डाटा सी0डी0 मे	**हां**
	स. आमंत्रण कार्ड	**हां**
	द. प्रशंसा पत्र	**हां**
	इ. फोटोग्राप्स	**हां**
	फ. समाचार पत्रो की कटिंग्स	**हां**
17.	कहावतें/लोकोक्तियां व लोकगीतो का लिखित संकलन	**हां**

स्थानः– सतना (म0प्र0)

दिनांक 27/08/2015

इन्द्रवती शुक्ला
अध्यक्ष
प्रान्तीय जागरूकता संस्थान, (म.प्र.)
पता :– आर. 256 सिविल लाइन, सतना (म0प्र)
दूरभाष/ मो0 नं0 :– 7898438580–8962305606

प्रान्तीय जागरूकता संस्थान, सतना ★ पंजियन क्र0 5192/03 ★

प्रतिवेदन के साथ

I.C.H./ भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण स्कीम 2014–15 के तहत प्रान्तीय जागरुकता संस्थान द्वारा सम्पन्न गतिविधियों के संदर्भ मे....

आवश्यकता,उद्देश्य,महत्व एवं परिणाम ,:–आई0सी0एच0 के तहत सांस्कृतिक परंपराओं के सभी रूपों का जीवन्त अस्तित्व बनाए रखने उनके सुदृढ़ीकरण,संरक्षण,संवर्धन के साथ–साथ उन्हे सशक्त और लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से आई0सी0एच0 के विषयों की पहचान कर उनके प्रति जागरूकता और रुचि को बढाने,उन्हे सुरक्षित व ब्यवस्थित करने एवं ब्यावसायिक रूप से बढावा देने की आवश्यकता के मददेनजर प्रदर्शन कलाएं, सामाजिक प्रथाएं, मौखिक परंपराए, अभिब्यत्कियां ,रस्मे व रिवाज आदि विविध अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों पर समाज की अधिकाधिक जन भागीदारी हो इसके लिए कार्यशाला,कवियों कलाकारों का प्रदर्शन व प्रलेखन,डाटावेस निर्माण,उत्सव ,शिविर, चौपाल, समारोह आदि विभिन्न आयोजनों, कार्यक्रमों व गतिविधियों के माध्यम सें प्रचारित प्रसारित करते हुए शिक्षा एवं संस्कृति का एकीकरण की दिशा में यह एक ठोस प्रयास है, हमारी कहावते/लोकोक्तियां एवं लोकगीतो के शब्दों में समाए अर्थ व भाव को स्पष्ट व विस्तारित करते हुए उसके आस–पास के वातावरण, इतिहास और पूरी जीवनशैली को उजागर व चरितार्थ करती है।

हमारे पुरुखों ने शब्द की महिमा और उसके मर्म को जिस तरह से आत्मसात किया था, कहावते उसकी जीती–जागती बानगी हैं। जानकार और मर्मज्ञ जनों के अनुसार जीवन के तरह–तरह के अनुभवों, पौराणिक और ऐतिहासिक व्यक्तियों, कथाओं, प्राकृतिक नियमों और लोक विश्वासों पर आधारित चुटीली, सारगर्भित, सजीव, संक्षिप्त लोक में प्रचलित और लोक में मान्य उन उक्तियों को लोकोक्ति कहते हैं जिनका प्रयोग किसी बात की पुष्टि या विरोध, सीख तथा भविष्य कथन आदि के लिए होता है। जीवन का पथ प्रदर्शन करती और जीवन मूल्यों को सींचने वाली बघेल खण्ड अंचल की पहेलियों, कहावतों/लोकोक्तियों एवं लोक गीतों मे नक्षत्र, वर्षा, अवर्षा, जीव–जन्तु, के स्वभाव और व्यवहार, खेती किसानी ,दवा–दारू और इलाज तथा वनस्पतियों और लकड़ियों के गुण,दोष,उपयोग सहित जीवन काल मे पिरिवार, समाज , शिक्षा व संस्कार अवसरो आदि सभी पहलुओं की बहुमूल्य जानकारी रची–बसी है अकादमी द्वारा उन्हे राष्ट्रीय स्तर पर सहेजने का काम किया गया है।

सैकड़ों हजारों साल के जीवन का अनुभवजनित व्यवहारिक ज्ञान आज भी हमें बहुत कुछ सिखा सकता है, जीवन की पाठशाला से निकला यह व्यवहारिक ज्ञान हमारी विरासत है। हमारे यहां लोकोक्तियों, कहावतों, में जो ज्ञान संग्रहित है वह गागर में सागर है। कृषि, जल, जंगल, जमीन, खेती–किसानी के तौर–तरीकों, बादलों के रंग और हवा के रुख से मौसम का ज्ञान, पशु–पक्षियों व जानवरों की पहचान, किस्में, और उनके व्यवहार तथा मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु के पूर्व तक के हमारे विभिन्न संस्कार एवं मांगलिक अवसरो के लोकगीतआदि से प्राप्त नैसर्गिक ज्ञान हमारी धरोहर है।

लोकगीत जिनमे राग,सुर, लय व ताल के साथ जीवन के गहरे अर्थ भी समाहित होते हैं। यहां लोकगीतो की संमृद्ध व गौरवशाली परंपरा है जो विश्व की श्रेष्ठतम् ,सार्वभौमिक एवं वैज्ञानिक भारतीय सुर संस्कृति है, लोकगीत में खुसी और गम की सहज अभिब्यक्ति है इन लोकगीतों के बदौलत सामाजिक प्रथाएं व परंपरांए आज भी टिकी हैं।

आज आधुनिकता की इस आंधी में हमारे परम्परागत ज्ञान का खजाना लुप्त न हो जाए यह चिंता बहुत समसामायिक और जरूरी है। उनके संरक्षण और संवर्द्धन के लिए किए जाने वाले प्रयासों से लोक जीवन में व्याप्त ज्ञान से समाज को बहुत उपयोगी सीख मिल सकती है। बघेली अंचल के लोक जीवन. में व्याप्त जीवन उपयोगी कहावतों, मुहावरों और पहेलियों व लोकगीतों का बहुमूल्य ज्ञान संग्रह निश्चित ही भावी समाज को लाभ देगा, लोक साहित्य जनता द्वारा सामूहिक रूप से रचा जाता है, लोकगीतों में केवल मनोरंजन के सुमधुर क्षण ही नही होते बल्कि वे संघर्षो के साथ जीवन जीने की कला के विकास के साथ व्यापक सरोकारों की दिशा मे चेतना/नव जागरण का बोध कराती हैं। लोकगीतों में जीवन झलकता है उसमें कई तरह के अर्थ ,भाव व निस्कर्ष निकालने की छमता होती है। संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से जन सरोकारो की दिशा मे अपने पूर्वजों की तमाम गौरवशाली सांस्कृतिक विरासतों को सहेजना है वही उसमें श्रद्धा, प्राण शक्ति तथा अनुभव को मिलाकर भारतीय संस्कृति,सभ्यता व संस्कारों से युक्त विकास को भावी पीढ़ी के हांथों सौंपना है।

अध्यक्ष

प्रान्तीय जागरुकता संस्थान, (म.प्र.)

कार्यालय प्रान्तीय जागरूकता संस्थान

सिविल लाइन, सतना म.प्र.

I.C.H./ भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण स्कीम 2014–15 के तहत सम्पन्न हुए कार्यक्रम का बिन्दुवार प्रतिवेदन

1.	संस्था का नाम	प्रान्तीय जागरुकता संस्थान, सतना (म0प्र0)
2.	संपर्क व्यक्ति कानाम	इन्द्रवती शुक्ला मो0 न0– 7898438580
3.	संस्था का पता	आर– 256(टी. वी. टावर के पास)सिविल लाइन, सतना (म0प्र0)
4.	कार्यक्रम का विषय	हमारी कहावतें/लोकोक्तियां एवं लोकगीत
5	रिर्सच का उद्देश्य संक्षिप्त मे	प्रदर्शन व प्रलेखन के माध्यम से जहां एक ओर सांस्कृतिक परंपराओं का सुदृढीकरण उनका संरक्षण, संवर्धन के साथ–साथ उन्हे सशक्त लोकप्रिय बनाने और लोकरुचि को बढाते हुए उन्हे सुरक्षित व व्यवस्थित करने एवं व्यावसायिक रूप से बढावा देना। वही गौरवशाली सांस्कृतिक विरासतों को सहेजना है और उसमें श्रद्धा, प्राण शक्ति तथा अनुभव को मिलाकर भारतीय संस्कृति,सभ्यता व संस्कारों से युक्त विकास भावी पीढी के हाथों सौपना है।
6.	संस्था द्वारा आयोजित/सम्पन्न कार्यक्रम विवरण **A** ग्रामीण **एरिया वर्क व टाइम**	गतिविधियां ग्रामीण एरिया मे ================== **प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम** 7 अप्रैल 2015 ग्राम पंचायत भवन मझगवां भटठा ,जनपद पं0–सोहावल **प्रलेखन व प्रदर्शन कार्यक्रम** 12 मई 2015 ग्राम तुरकहा , जनपद पंचायत – उचेहरा जि0 सतना **ग्रामीण युवाओं/युवतियों की कार्यशाला =2** 29 मार्च, 2015 ग्राम पंचायत– रामस्थान, जनपद पं0 –सोहावल 12 अप्रेल, 2015 ग्राम मतहा, जनपद पं0–रामपुर बाघेलान जि0 सतना **बृद्धजन/वरिष्ठ नागरिकों का लघु शिविर =2** 03 मई, 2015 ग्राम सगमा, जनपद पंचायत –सोहावल, जि0 सतना 17 मई, 2015 ग्राम गंगवरिया, जनपद पं0 – नागौद, जि0 सतना **कार्यक्रम लोक प्रथा एवं लोक रस्मे =2** (कामकाजी घरेलू महिलाओं का) 24 मई ,2015 ग्राम रिछहरी, जनपद पं0 रामपुर बाघेलान जि0 सतना 31 मई, 2015 ग्राम गोवरांव, जनपद प0 – उचेहरा जि0 सतना **छात्राओं का प्रत्यक्ष प्रदर्शन व प्रतियोगिता** 10 अगस्त, 2015, मैहर जि0 सतना म0प्र0 **ग्राम चौपाल/ग्राम सभा कैम्पेन = 2** (किसान एव खेतिहर मजदूरो की) 07 जून 2015 ग्राम पंचायत बरास्वर्द, जनपद प0 –मैहर जि0 सतना 13 जून, 2015 ग्राम लोहरौरा, जनपद प0 – उचेहरा जि0 सतना

क्रमशः ...3....पर

S.K. [signature]
अध्यक्ष
प्रान्तीय जागरुकता संस्थान, स.म.

		महिला लोक कलाकारो का कला प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम = 2 18 जून, 2015 ग्राम –कैमा , जनपद पं0 सोहावल, जि0– सतना 21 जून, 2015 ग्राम –देउरा मोलहाई, ज0 प0–रामनगर, जि0– सतना पुरुष कवियों व लोक कलाकारो का कला प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम = 2 28 जून, 2015 ग्राम –धुइंसा, जनपद पं0 –अमरपाटन, जि0– सतना 05 जुलाई, 2015 ग्राम –भाद, जनपद पं0–सोहावल, जि0– सतना
7.	आयोजित/सम्पन्न कार्यक्रम विवरण B शहरी एरिया वर्क व टाइम	गतिविधियां शहरी एरिया मे ================ सम्पन्न हुए, प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम/आयोजन का विवरण --------------------- लोकरंजन समारोह दिनांक 23 मार्च, 2015, बालाजी गार्डेन, स्वामी चौक, सतना प्रलेखन कार्यक्रम दिनांक 20 अप्रैल 2015 ,मारूती नगर, सतना स्कूली छात्र/छात्राओं का प्रत्यक्ष प्रदर्शन वप्रतियोगिता= 2 13 जुलाई, 2015, मां शारदा कान्वेंट सकूल, मारूती नगर सतना 16 जुलाई, 2015, सरस्वती शिक्षा मंदिर, गढिया टोला जि0सतना महिला लोक कलाकारो का कला प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम 19 जुलाई, 2015 को मुख्तियार गंज सतना पुरुष कवियों व लोक कलाकारो का कला प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम 26 जुलाई 2015 को बगहा सतना, जि0 सतना खण्ड स्तरीय छात्रों का प्रत्यक्ष प्रदर्शन व प्रतियोगिता 05 अगस्त, 2015 को उचेहरा जिला-- सतना म0प्र0

क्रमशः 4....पर

अध्यक्ष
प्राकृतीय जागरूकता संस्थान, जि0 ...

आयोजित / सम्पन्न कार्यक्रम विवरण	सम्पन्न हुए, प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम / आयोजन का विवरण
C शहरी व ग्रामीण एरिया वर्क व टाइम	गतिविधियां देवी गीत संगीत समारोह दिनांक 17 अक्टूबर,2015 स्थान– पौराणिक टोला सतना शहरी महिलाओ का प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम 14 मई, 2016, नगर पंचायत बिरसिंहपुर, जि0– सतना शहरी पुरुषो का प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम 21 मई, 2016 योग केन्द्र सिविललाइन,सतना जि0–सतना आयोजन मे पधारे विशेष अथिति – श्रीमती ममता पाण्डे जी– महापौर श्री अशोक गुप्ता– नगर अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी सतना श्री सतीष शर्मा –उपाध्यक्ष, भा.ज.पा. श्री विजय तिवारी –वरि0 भा.ज.पा. नेता श्री सुभाष शर्मा डोली –वरि0 भा.ज.पा. नेता श्री मती राजकुमारी शुक्ला– जिला मंत्री भाजपा
	दिव्यांग जनों का प्रत्यक्ष प्रदर्शन व प्रलेखन प्रतियोगिता 12 जून, 2016, टाउन हाल परिसर सतना जि0 सतना स्कूली छात्रों व छात्राओं का प्रदर्शन व प्रलेखन प्रतियोगिता 18 जून,2016, नगर पंचायत जैतवारा जि0 सतना ग्रामीण महिलाओ का परिचर्चा व संवाद कार्यक्रम 09 जुलाई,2016 को ग्राम मेहुती,जनपद मझगवां जि0 सतना ग्रामीण किसान मजदूर से परिचर्चा व संवाद कार्यक्रम 17 जुलाई 2016 को सतना, जि0 सतना कालेजी छात्रों का प्रत्यक्ष प्रदर्शन व प्रलेखन प्रतियोगिता 20 अगस्त,2016 सतना शहर जि0 सतना कालेजी छात्राओं का प्रत्यक्ष प्रदर्शन व प्रलेखन प्रतियोगिता 17 सितम्बर,2016 सतना शहर जि0 सतना देवी गीत संगीत समारोह 08 अक्टूबर, 2016 स्थान– पौराणिक टोला सतना

क्रमसः .5....पर

अध्यक्ष

प्रान्तीय जागरूकता संस्थान (म.प्र.)

9.	अतिथि विवरण	**उपरोक्त आयोजन मे पधारे विशेष अथिति –** श्रीमती सुधा सिह अध्यक्ष – जिला पचायत सतना, म0प्र0 श्री उमेश प्रताप सिह – सभापति– वन समिति जिला पचायत सतना श्री नारायण गौतम जिला अध्यक्ष –अधिवक्ता संघ, जिला सतना श्रीमती शाति तिवारी – पार्षद– नगर पालिक निगम सतना श्री सतीश शर्मा जी – जिला उपाध्यक्ष– भारतीय जनता पार्टी सतना श्री सौरभ नायक – युवा मोर्चा सगठन प्रभारी– भाजपा सतना श्रीमती राजकुमारी शुक्ला – जिला मत्री– भाजपा महिला मोर्चा सतना श्रीमती नीता सोनी – जिला अध्यक्ष – भाजपा महिला मोर्चा सतना श्रीमती शुषमा गुप्ता – पूर्व पार्षद – नगर पालिक निगम सतना श्रीमती संध्या उर्मलिया – वरिष्ठ महिला समाजसेवी जिला सतना श्री रविशंकर पयासी – वरिष्ठ समाजसेवी श्री कमलेश गुप्ता – समाजसेवी डा0 रश्मि सिंह – उपाध्यक्ष – जिला पंचायत सतना श्रीमती प्रभा बागरी – सदस्य – जिला पंचायत सतना श्री पुष्पराज बागरी – पूर्व उपाध्यक्ष – जिला पंचायत सतना श्रीमती जान्हवी त्रिपाठी – भाजपा नेत्री वरिष्ठ महिला समाज सेवी डा0 अरूणेन्द्र सिंह – वरिष्ठ समाज सेवी श्री पवन कोल – सरपंच – ग्राम पंचायत भवन मझगवां भटठा श्री नारायण प्रसाद त्रिपाठी– संचालक – विनायक एजुकेशन सोसायटी नोट :–उपरोक्त के अतिरिक्त आयोजन के दौरान संस्थान के कार्यकर्ताओ व कलाकारो से साथ–साथ काफी संख्या मे गणमान्य नागरिक व स्थानीय जन प्रतिनधि एवं अन्य विशेष जनो की उपस्थित उल्लेखनीय रही है।
10.	प्रस्तुतीकरण का स्वरूप :–	कार्ययोजनानुसार संस्थान के कर्मचारियो द्वारा सुनिश्चित एरिया मे भ्रमण व जनसंपर्क के. साथ–साथ बैनर पंपलेट एवं आमंत्रण व समाचार पत्रों तथा शैक्षिक सामग्रियों का निर्माण व निःशुल्क वितरण के माध्यम से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण स्कीम (I.C.H.) के तहत गतिविधियों के लिए चयनित विषय <u>कहावतें / लोकोक्तियां एवं लोकगीत</u> के ब्यापक महत्व का प्रचार–प्रसार व वातावरण निर्माण करते हुए टारगेट ग्रुप के समायोजन से विषय वस्तु की बारीकियो का ध्यान रखते हुए उनका संकलन व लेखन प्रलेखन करते हुए नजदीकी बसाहटो के सेक्टर मे विशेष आयोजन के लिए सुनिश्चित समय,स्थान व तिथि को दर्शक समुदाय व लक्षित समूह की उपस्थिति मे सम्पन्न हुए विशेष प्रदर्शन व प्रलेखन कार्यक्रम का विधिवतसुभारम्भ पश्चात प्रथम चरण में विन्ध्यांचल की कहावतें / लोकोक्तियां एवं लोकगीत पर प्रतिभागियो द्वारा लेखन किया गया एवं प्रलेखन पश्चात प्रतिभागियों ने उन कहावतो के शब्दो में समाए अर्थ व भाव को स्पष्ट करने के साथ–साथ उसे विस्तार देते हुए, उसके आस–पास के वातावरण इतिहास और जीवनशैली को उजागर किया तथा लोकगीत पर पतिभागियों ने संस्कार गीत व मांगलिकगीत तथा मौसमी एव पर्व–त्योहार अवसरो पर आधारित बहुरगी पारंपरिक लोकगीतों की मौलिक प्रस्तुतियो का रोचक प्रर्दशन किया गया।

क्रमसः .6....पर

अध्यक्ष

प्रान्तीय जागरूकता ...

		विषय आधारित विभिन्न गतिविधियो मे महिला एव पुरुष कला प्रतिभागियो द्वारा समाज मे मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु के पूर्व तक के विविध सस्कार एवं मांगलिक अवसर पर गाए जाने वाले पारंपरिक गीतो जैसे–जन्म के समय शोहर , दादर, छठी, बरहों ,मुडन, कन्छेदन, द्वारचार,अंजुरी,बनरा,विवाह,गारी विदाई ,गैलहाई आदि अवसरो पर गाये जाने वाले मौलिक गीतो लेखन तथा लोक वाद्यो की सगत के साथ लोकधुन मे विधिवत साज वाज व आवाज के साथ गायन की अनूठी प्रस्तुति दी गई जो अपनें आप में विशिष्ट रही तथा भौतिकताएव आधुनिकता के इस दौर में विलुप्तता की कगार पर खडी भारत की इन तमामअमूर्त सांस्कृतिक विरासतो और विविध सांस्कृतिक परम्पराओंके महत्व का बोध कराने वाली रही है जिनको सुनकर परिसर भा विभोर होगया तथा उपस्थित जनो नें प्रशंसा की। संस्थान द्वारा प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह आकर्षक पुरूस्कार/उपहार तथा नकद राशि से सम्मान करने पश्चात आयोजन मे उपस्थित स्थानीय अनुभवी जनो व संस्थान के विषय विशेषज्ञो व आमंत्रित अतिथियों नें विंध्य के विभिन्न अंचलों में भी आई0सी0एच0 के तहत ज्ञान की वाचिक परम्परा की सम्पदा कथा, गाथा, लोकोक्तियां/कहावतों, मुहावरों व लोकगीतो के कई अलिखित भाव तथा भाषा के रूप में जो लोक जीवन में सांसों की तरह मौजूद है, इनमें जीवन का जो ज्ञान रचा बसा है, उसकी उपयोगिता और महत्व तथा आवश्यकता को देखते हुए विरासत में मिली इस बेश कीमती सास्कृतिक पूंजी को आयोजनो के माध्यम से आने वाले कल (भावी पीढी) के लिए सहेज कर रखने व भावी पीढी के हांथो में सौपने का पुनीत कार्य करने का समाज को संदेश दिया गया है।
11.	कार्ययोजना पूर्णता की दिशा मे	विषय विशेषज्ञो ने लोक सांस्कृतिक विधाओं की उपयोगिता, महत्व तथा परंपरिक लोक विधाओं के संरक्षण संवर्धन के महत्व के विषय पर विचार व्यक्त करते हुए विस्तार पूर्वक बताया कि मूर्त तथा अमूर्त लोक संस्कृतियां न सिर्फ समाज में स्वथ्य मनोरंजन की साधन हैं बल्कि इनका समागम देश व समाज को जोडता है तथा शक्ति प्रदान करता है। समारोहों के माध्यम से संस्कृतियों के आदान प्रदान की इस धनी परंपरा को विकसित करना अब बहुत जरूरी हो गया है। दुनिया जब तेज गति से भाग रही हो और सारे संबंध और सरोकार औपचारिक होते जा रहे हो , समाज की लोक परंपराए व कला संस्कृति जिन्दगी का आनंद है उनमें जो सादगी और सरोकार है वह आज भी जीवन्त है तथा जहा इन्सान ही नही बल्कि प्रकृति, जीव–जन्तु और एहसास के बीच गहरा अंर्तसंबंध है। कहावतो व लोक गीतो का व्यापक संसार है, इनमें सार तत्व मौजूद है। आयोजन के माध्यम से ऐसी सांस्कृतिक विरासत को आम जन मानस के सामने लाकर लोक सांस्कृतिक इतिहास की झलक समाज को सुनाने, दिखाने व समझाने का अनूठा व अद्भुत काम हुआ हैं। और अंत में प्रतिभागी जनो एव अतिथिगो तथा संस्थान के सहयोगियो का स्वल्पाहार तथा विदाई की गई।

क्रमसः ...7....पर

अध्यक्ष

// 7 //

12. निस्कर्ष

परियोजन से समाज के सभी वर्ग के प्रतिभागियों को अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित व प्रमाणित करने का उपयुक्त एव सम्मान जनक मंचीय अवसर मिला व विविध भारतीय लोक सांस्कृतिक मूल्यों के सुदृढीकरण के साथ साथ संस्कृति साहित्य प्रेमी समाज को स्वस्थ्य व जीवन्त मनोरंजन से युक्त सदेश प्रेरणा अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित व प्रोत्साहित करने की मिली है बात चाहे भूगोल या इतिहास की हो, चाहे शक्ति और भक्ति की हो अथवा फिर कला या संस्कृति की, भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासतो की जितनी विविधता यहां विंध्यांचल में देखने को मिलती है,शायद ही कही और मिले। लोक भाषा सिर्फ लिखने की बोलने की नही बल्कि जीवन जीने की भाषा है। इसे म्यूजियम में सजाने के बजाय सहेजने उसे जिन्दा रखने व उन्नतशील बनाने की जरूरत है। उपरोक्तानुसार छोटी–छोटी गतिविधियो व कार्यशाला के माध्यम से विंध्य अंचल मे (आई0सी0एच0) भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के तहत परियोजना गत लिए गए विषय <u>हमारी कहावते लोकोक्तियां एवं लोकगीत</u> जो भारतीय संस्कृत का अहम अंग है यह कार्ययोजना एक बड़े सोध के रूप में सफल होने जा रही है। कार्ययोजना के दौरान विंध्य की प्राचीन संस्कृति के दर्शन हुए हैं अलग–अलग क्षेत्रों मे अलग–अलग संस्कृतियों के नाम रूप तथा भाव भाषा की अमूर्त ज्ञान पद्धतियां हैं जो देखने सुनने व सहजने को मिली हैं। इन गतिविधियों के माध्यम सें सांस्कृतिक चेतना का विकास होता है और वह एक पीढी से दूसरी पीढ़ी को सहजता के साथ हस्तांतरित होती रहती है, भारत गावों का देश है भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराए गांवो में ही रचती बसती है, आज जहां एक आवज में पूर गांव इकट्ठा हो जाता है जहां खुसी और गम के मौके में गांव सिकुड़ कर एक परिवार बन जाता है वहां भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासतें स्पष्ट दिखाई देने लगती हैं। हमारी समाजिक पहचान की मूल आधार पौराणिक लोक सांस्कृतिक विधाएं जो दिनो दिन आधुनिकता की चपेट में आती जा रही हैं, संरक्षण संवर्धन के अभाव में इनका निरंतर अवमूल्यन होता जा रहा है। पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध से प्रभावित होकर विलुप्तता की कगार पर खडी अपनी अमूल्य पारंपरिक सांस्कृति विरासतों के प्रति आम जनमानस की बढती हुई अरूचि को दृष्टिगत रखते हुए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण एवं सम्वर्धन हेतु विंध्य की अमूर्त मौलिक संस्कृति के प्रति आम जनता में उत्कंठा/आकषर्ण पैदा करने के साथ ही भारतीय अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्य बनाये रखने की दिशा मे यह काम हो रहा है। आई0सी0एच0 के तहत मध्य प्रदेश के विभिन्न अंचलों विंध्यांचल की अमूल्य बहुरंगी संस्कृति की अपनी गौरवशाली परंपरा है, और उस परंपरा की हिफाजत करने उसका संरक्षण, प्रोन्नयन और प्रसार करने व इन विविध विधाओ को तलासने तरासने तथा उन्हे सहेजने का भी काम हो रहा है। उपभोक्ता वादी संस्कृति सीधे मानवीय मूल्यों पर प्रहार कर रही है और व्यक्ति को व्यक्ति से अलग भी । ऐसे दौर में अमूर्त साहित्य एवं सांस्कृतिक विरासतों के सरंक्षण सवर्धन की दिशा में काम करनें की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

क्रमसः ...8....पर

अध्यक्ष

13	कार्यक्रम का प्रभाव		दर्शको पर कार्यक्रम का सकारात्मक प्रभाव पड़ा तथा आम खुश मिजाज एवं उत्साहित व आनंदित नजर आए। लोगो ने बहुमूल्यी जानकारी प्राप्त की।
14	मीडिया का सहयोग		स्थानीय समाचार पत्रो के संवाददाता कार्यक्रम मे शामिल हुए तथा कार्यक्रम की खबर का ऐतिहासिक व बेहतरीन कवरेज भी किया गया। अखबार की कटिंग्स **संलग्न है।**
15.	कार्यक्रम के बाद लोगों की प्रतिकृया		1. भविष्य मे उपरोक्तानुसार रोचक व सार्थक गतिविधिया करने की मांग । 2. कार्यकर्ताओ के साथ स्वल्पाहर हेतु अपने घर ले जाने का आमत्रण। 3. भावी कार्यक्रमों मे बढ़कर भाग लेने व सहयोग प्रदान करने की मंशा। 4. संस्था के पदाधिकारी व कार्यकर्ताओ के नाम, पते एव फोन न. की जानकारी चाही। **5.** कार्यक्रम की प्रशंसा करने के लिए। **6.** धन्यवाद व्यक्त करने के लिए। **7.** ऐसी गतिविधियो मे संस्था से जुडने के लिए लोगो ने इच्छा जाहिर किया
16.	परियोजना की व्यय राशि–		**रू0 = 2,68,390/–(दो लाख अरसठ हजार तीन सौ नब्बे रुपये)**
17.	प्रतिवेदन में निम्न संलग्न हैं।		
	अ. कार्य प्रतिवेदन	हां	पृ० 2 से 9 तक
	ब. आडिटेड उपयोगिता प्रमाण पत्र व आय–व्यय पत्रक	हां	पृ. 10-11-12
	स. डाटा सी0डी0 मे	हा	कवरिंग लेटर के माध्यम संलग्न
	द. प्रशंसा पत्र आमत्रण कार्ड	हां	पृ. 13 से 17 तक
	इ. फोटोग्राफ्स	हां	पृ. 18 से 31 तक
	फ. समाचार पत्रो की कटिंग्स	हां	पृ. 32 से 96 तक
18.	कहावतें / लोकोक्तियां व लोकगीतो का लिखित संकलन	हां	भाग 1 – 97 से 118 तक भाग 2 – 119 से 149 तक भाग 3 – 150 से 174 तक भाग 4 – 175 से 190 तक

स्थानः– सतना (म0प्र0)

दिनांक 24/09/2019

इन्द्रवती शुक्ला इन्द्रवती
अध्यक्ष
प्रान्तीय जागरूकता संस्थान, (म.प्र.)

पता :– आर. 256 सिविल लाइन, सतना (म0प्र)
दूरभाष / मो0 नं0 :– 7898438580 8962305606